Publication date- 5th August 2025, Posting date- 9/10th August 2025. Place of posting- Naraina
संख्या No. U (W)-11/2024-26 PRGI No.DELBIL/2005/16236 Postal Regn. No. DL (W) 10/2129/24-26

PRGI No. DELBIL/2005/16236

श्रद्धा सबूरी

श्री साई सुमिरन टाइम्स

मासिक समाचार पत्र

वर्ष-21 अंक-11 नई दिल्ली अगस्त 2025 वार्षिक मूल्य 700 रू. (प्रति कॉपी 60 रू.) पृष्ठ-20

साई धाम में सामूहिक विवाह समारोह में 25 जोड़े बंधे परिणय सूत्र में

फरीदाबाद: दिनांक 13 जुलाई 2025 को साई धाम द्वारा आयोजित सामूहिक विवाह में 25 जोड़ों को परिणय-सूत्र में बांधा गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि महापौर प्रवीन बत्रा जोशी, साई धाम के संस्थापक अध्यक्ष डा. मोती लाल गुप्ता, प्रधानाचार्या डॉ. बीनू शर्मा व शिरडी साई बाबा टैम्पल सोसायटी के एडवाइज़री बोर्ड मेम्बर्स द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया। तत्पश्चात शिरडी साई बाबा स्कूल के बच्चों द्वारा रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया जिसने सभी का मन मोह लिया। मुख्य अतिथि ने अपने संबोधन में साई धाम व डॉ मोतीलाल गुप्ता द्वारा किये जा रहे जन कार्यों की सराहना की साथ ही उन्होंने कहा कि फरीदाबाद की मेयर होने के नाते मेरा प्रथम उद्देश्य फरीदाबाद को भारत का सबसे स्वच्छ शहर बनाना है। डा. गुप्ता का जीवन हम सबके लिए प्रेरणा का स्रोत है।

इनके द्वारा किए जा रहे कार्यों का लाभ न केवल फरीदाबाद को मिल रहा है बल्कि पूरा राष्ट्र अनुग्रहीत हो रहा है। संस्था के संस्थापक अध्यक्ष डॉ मोतीलाल गुप्ता ने अपने संदेश में नवविवाहित जोड़ों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि हमें सामूहिक विवाह को प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि दहेज प्रथा जैसी बुराईयों को रोका जा सके। संस्था द्वारा विवाह के बंधन में बंधे 25 जोड़ों को घर-गृहस्थी के लिए हर प्रकार का घरेलू सामान

शेष पृष्ठ 7 पर

साई मंदिर रोहिणी में गुरूपूर्णिमा महोत्सव श्रद्धापूर्वक सम्पन्न

दिल्ली: दिनांक 10 जुलाई 2025 को दिल्ली के सुप्रसिद्ध शिरडी साई बाबा मंदिर, सैक्टर-7, रोहिणी में गुरूपूर्णिमा महोत्सव अत्यन्त श्रद्धापूर्वक एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। पूरा मंदिर फूलों व रंगबिरंगी लाईटों से सजाया गया। बाबा का दरबार भी रंगबिरंगे फूलों, पत्तों और क्रिसटल्स से अति सुन्दर सजाया गया। दिन भर मंदिर में भक्तों का मेला लगा रहा। इस अवसर पर प्रात: काकड़ आरती से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। मंगलस्नान के पश्चात् आरती की गई। बाबा को अत्यन्त सुन्दर वस्त्र और फूलों की सुन्दर माला पहनाई गई। प्रात: 10 बजे आचार्य श्रवण जी

शेष पृष्ठ 4 पर

शिरडी के साई भवन में लिफ्ट का उद्घाटन

शिरडी: दिनांक 21 जुलाई 2025 को शिरडी में स्थित साई भवन में लिफ्ट का उद्घाटन किया गया। साई मंदिर रोहिणी सैक्टर-7, दिल्ली द्वारा भक्तों की सुविधा के लिए 21 साल पहले शिरडी में साई भवन का निर्माण किया गया। यहां पर भक्तों के लिए हर तरह की सुविधाएं उपलब्ध हैं। भक्तों के लिए सुबह का नाश्ता, लंच और डिनर की भी व्यवस्था है जो अति स्वादिष्ट होता है। साई भवन के सभी कमरों में AC और टीवी भी लगे हैं।

दिनांक 21 जुलाई 2025 को साई मंदिर रोहिणी के प्रधान श्री के.एल. महाजन एवं मुख्य सचिव श्री रमेश कोहली साई भवन में लिफ्ट का उद्घाटन करने शिरडी पंहुचे। प्रात: साई भवन के मंदिर में विधिवत् पूजा अर्चना करके श्री रमेश कोहली जी ने नारियल फोड़ कर और श्री के.एल. महाजन जी ने रिबन काटकर लिफ्ट का उद्घाटन किया। इस अवसर पर श्रीमती इन्द्रा महाजन और श्रीमती रेखा कोहली भी वहां उपस्थित थे। श्री रमेश कोहली और के.एल महाजन ने अपने हाथों से सभी भक्तों को भंडारा बांटा।

साई भवन में लिफ्ट लगने से सभी भक्त बहुत खुश हैं क्योंकि यहां आने वाले भक्तों को अब लिफ्ट की सुविधा भी मिलेगी। सभी भक्तों ने मंदिर समिति के सदस्यों के इस कार्य की बहुत सराहना की और हृदय से उनका धन्यवाद किया। इस मंदिर समिति के सभी सदस्यों में भक्ति और सेवा भाव अत्यन्त सराहनीय है। -कृष्णा

साई हैं तो फिक्र क्यों

दिसंबर 2024 में, मैं शिरडी में साई रिसु वाड़ा के उद्घाटन की तैयारी कर रहा था। काम में देरी हो रही थी। इस वजह से मैं थोड़ा निराश हो रहा था। मैं शिरडी में रहकर ही Zoom कॉल के माध्यम से अपने ऑफिस का काम ऑनलाइन कर रहा था। एक बार मैं अपने एक टीम मैम्बर के साथ किसी बात को लेकर कुछ ऊंची आवाज़ में बोल गया और यही पल मेरे लिए बहुत भारी साबित हुआ। फरवरी में साई संगम 10 के बाद, मैंने एक ENT Specialist से परामर्श किया क्योंकि मेरा गला बहुत खराब था और मुझे बोलने में थोड़ी दिक्कत हो रही थी।

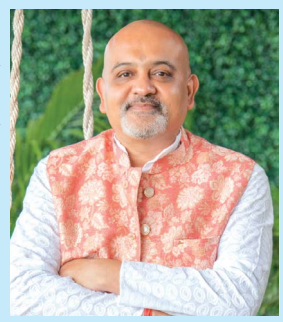

मुझे कहीं दर्द नहीं हो रहा था पर डॉक्टर की रिपोर्ट से पता चला कि मेरा दाहिना Vocal Cord काम नहीं कर रहा था। शुरू में दर्द नहीं था, केवल बोलने में कठिनाई होती थी, लेकिन धीरे-धीरे मुझे दर्द होने लगा। मैं दर्द के लिए pain killers ले रहा था। दवाओं से मुझे थोड़ी देर राहत मिलती थी, लेकिन कुछ देर बाद फिर दर्द शुरू हो जाता था।

मार्च 2025 में मैं दुबई गया। मेरी बेटी स्मृति दुबई में रहती है। वो एक कुशल Chef है। उसने मेरी बिगड़ती तबियत को देखा। वह मेरे साथ ही रही। हालांकि मैंने डॉक्टर के निर्देशों का पालन किया, लेकिन मेरी हालत में कोई सुधार नहीं हुआ। मेरी आवाज़ इतनी भारी हो गई थी कि करीबी दोस्त भी मुझे फोन पर पहचान नहीं पाते थे। दुबई से मैंने अपने Family Doctor अंकित खंडेलवाल से बात की तो उन्होंने कहा कि कोलकाता लौटते ही मुझसे मिलो। अगले ही दिन कोलकता पहुंचकर मैं उनसे मिला। मेरे कई टैस्ट हुए और हमने अन्य कई डॉक्टरों से भी सलाह ली। जब मेरी रिपोर्ट्स आई तो वो देखकर हम सब के पैरों तले ज़मीन खिसक गई, हमारे होश उड़ गए क्योंकि मुझे कैंसर था। मैं और मेरा परिवार तुरन्त मुम्बई पहुंचे और वहां हमने तीन जाने-माने स्पेशलिस्ट डॉक्टरों से सम्पर्क किया। डॉक्टर अनिल डीक्रूज़ के चैम्बर में

शेष पृष्ठ 3 पर

Since 1990
aarcee
World renowned name in
WALL PAPER
Awnings, Blinds & Canopies
Visit Before You Buy
Show room: 9-A, Aurobindo Place, HAUZKHAS,
Aurobindo Marg, New Delhi-110016
R.C. Gupta
Ph. 9810030709, 9910030709
Terrace Awning
Basket Awning

श्रद्धा सबूरी
TANEJA JEWELLERS PVT. LTD.
हमारे यहां साई बाबा जी के चांदी के सिंहासन, छत्र, पादुका व मुकुट हर साईज में तैयार किए जाते है
Gold, Diamond, Kundan, Silver Ornaments & Birth Stones
Exclusive Range of Silver Utensils & Gift Articles
Naresh Taneja - 9211760000, 41720094, 29830855
J-37 B, Central Market, Lajpat Nagar-II, New Delhi-24.

• Curtain & Sofa Cloth • Bed Sheets & Bed Covers
• Towels/Table Linen • Quilts & Blankets
• Mattresses & Pillows • Carpets & Rugs • Wallpaper
• Curtains Rods & Venetian Blinds • Cushion Cover
SITA Fabrics
Furnishing Homes For Better Living
D-37, Central Market, Lajpat Nagar-II,
New Delhi-110024. Ph: 011-41750253/254
We accept all major Credit/Debit Cards
ALL DAYS OPEN
SPECIAL OFFER ON WALLPAPER

सम्पादकीय

दोस्तों, कभी सुख और कभी दुख यही हमारा जीवन है। दुख के दिनों में दुखी होना और सुख के दिनों में खुशी से उछलना ये मानव का स्वभाव है। हमारे जीवन में जो कुछ होता है वो ईश्वर की मर्ज़ी से होता है जो हमारे कर्मों के अनुसार ही तय होता है। हर कोई सुख की कामना तो करता है लेकिन अपने कर्मों की तरफ ध्यान नहीं देता। अगर हम अच्छे कर्म नहीं करते तो हमें सुख की कामना करने का कोई हक ही नहीं है। अत: अगर हम भविष्य में सुखी जीवन चाहते हैं तो आज अच्छे कर्म करने ज़रूरी हैं। अच्छे कर्मों में सबसे श्रेष्ठ कर्म दान करना है। बाबा ने सबसे अच्छा दान अन्नदान को बताया है। लेकिन अन्नदान वहीं करना चाहिए जहां इसकी ज़रूरत हो। खाते-पीते लोगों को अन्नदान करने का कोई लाभ नहीं। और हां, अन्नदान करते हुए फोटो खींच कर सोशल मीडिया पर डालना भी अन्नदान के महत्व को कम कर देता है और वह केवल एक दिखावा बन कर रह जाता है। अन्नदान या किसी भी तरह का दान कोई दिखावे की चीज़ नहीं है। बाबा ने भी कहा है 'उदार हृदय तथा विनम्र बनकर, आदर और सहानुभूति पूर्वक दान करो'। कहते हैं कि अगर आप एक हाथ से दान करते हैं तो दूसरे हाथ को भी खबर नहीं होनी चाहिए। ये भी याद रखें कि हम दान करके किसी पर कोई एहसान नहीं कर रहे क्योंकि दान करने से मजबूर व ज़रूरतमंद लोगों को तो लाभ मिलता है साथ ही हमारे कर्म भी सुधरते हैं और दानकर्त्ता को भी जो सन्तुष्टि मिलती है उसका कोई मोल नहीं है। इसलिए सदैव कल्याणकारी गतिविधियों में व्यस्त रहना चाहिए, सबसे प्रेमपूर्वक व्यवहार करना चाहिए, किसी को धोखा नहीं देना चाहिए और किसी से ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिए जिससे किसी को कष्ट पहुंचे। यही साई की सच्ची भक्ति भी है। ओम साई राम।

-अंजु टंडन

वर्षों के कष्ट को मिटाया साई ने

बाबा के चमत्कार अनगिनत हैं। हाल ही में शिरडी साई बाबा संस्थान के साई बाबा अस्पताल में एक चमत्कार हुआ जो आप सबको बताना चाहते हैं। ज़िला अकोला के

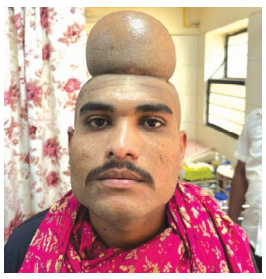

21 वर्षीय नवयुवक श्री अनिकेत भानुदास इंगले के सिर पर एक छोटी सी गांठ थी, जो समय के साथ बढ़ती गई और 4.9 किलोग्राम वज़न की हो गई। वो उसके सिर के ऊपर एक बड़ी गांठ की तरह थी। गांठ इतनी बड़ी थी कि दूर से भी साफ दिखाई देती थी। अनिकेत पर सामाजिक मानसिक और शारीरिक रूप से इसका बुरा प्रभाव पड़ रहा था। अनिकेत ने कई साल इसी हालत में गुज़ारे। कोई डॉक्टर उसकी सर्जरी भी करने को तैयार नहीं था क्योंकि इसमें उसकी जान को खतरा था। अनिकेत बहुत परेशान था कि इस समस्या से छुटकारा कैसे पाया जाय। उसने बहुत से बड़े अस्पतालों में दिखाया लेकिन सिर के ऊपर इतना बड़ा ट्यूमर देखकर और ऑपरेशन से उसकी जान का खतरा होने के कारण कोई भी डॉक्टर उसका ऑपरेशन करने को तैयार नहीं था। अंत में परेशान होकर वो शिरडी के साईबाबा अस्पताल में पहुंचा। वहां पर डॉ. अजिंक्य पानगव्हाणे ने उसकी पूरी तरह जांच की और उसकी सर्जरी करने का फैसला कर लिया। मरीज़ के परिवार ने भी इस जोखिम भरी सर्जरी के लिए अपनी सहमति दे दी।

दिनांक 25 जून 2025 को डॉ. अजिंक्य पानगव्हाणे और Anaesthesiologistist डॉ. निहार जोशी व उनकी टीम ने अत्यंत दुर्लभ और जोखिम भरी सर्जरी की। बाबा की कृपा से उसकी सर्जरी सफल हुई और अनिकेत के सिर पर से 4.9 किलो का टयूमर remove कर दिया। डॉ. अजिंक्य ने कहा कि उन्होंने पहली बार इतनी मुश्किल और जोखिम भरी सर्जरी सफलतापूर्वक की है उन्होंने कहा कि इसका श्रेय पूरी टीम को जाता है। अब अनिकेत पूरी तरह से ठीक है और अपने घर सुरक्षित पहुंच गया है, जिससे अनिकेत और उसका पूरा परिवार बहुत खुश हैं।

साई की नगरी शिरडी का श्री साई बाबा अस्पताल एक आस्था का केन्द्र भी है जहां स्वास्थ्य सेवाओं में अक्सर चमत्कार भी देखे जाते हैं। अनिकेत की सर्जरी सफलता पूर्वक होना बाबा का एक चमत्कार ही है। और ये सर्जरी बिल्कुल नि:शुल्क की गई।

श्री शिरडी संस्था के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री गोरक्ष गाडिलकर जी, उपमुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री भीमराज दराडे, अस्पताल के डायरेक्टर लेफ्टिनेट कर्नल शैलेश ओक, डिप्टी डायरेक्टर डॉ. प्रीतम वडगावे, न्यूरो सर्जन डॉ. मुकुंद चौधरी, जनसम्पर्क अधिकारी श्री सुरेश टोलमारे ने डॉ. अजिंक्य पानगव्हाणे व उनकी पूरी टीम को इस सफलता के लिए बधाई दी।

हे साई

हे साई हम पर दया करना
हम पर रहम करना, हम को क्षमा करना
भटक जाते हैं हम, अक्सर खो जाते हैं हम
हमें अपने अंग-संग ही रखना
हे साई हम पर दया करना,
हम पर रहम करना, हम को क्षमा करना
शिरडी की राह भूल जाते हैं हम
जहां ना जाना हो वहां चले जाते हैं हम
चकाचौंध में खो जाते हैं हम
हमें सही राह दिखाये रखना
अपना हाथ हमें पकड़ाये रखना
यूं ना हमें विचराये रखना
हे साई हम पर दया करना
हम पर रहम करना, हम को क्षमा करना
यूं ही छोड़ देना था हमें
तो शिरडी बुलाया ही क्यों था?
हम गरीबों पर अपना प्रेम बरसाया ही क्यों था?
हमें अपने से ना अलग करना
हमें अपनी ही शरण में रखना
हे साई हम पर दया करना
हम पर रहम करना, हम को क्षमा करना
हे साई जीवन संतुलित नहीं है हमारा
कभी इधर तो कभी उधर
दौड़ जाता है मन हमारा
अपनी दृष्टि हम पर बनाये रखना।
हम बेसहारा हैं
हम पर अपना सहारा बनाये रखना।
रोज़-रोज़ हमें याद आना
अपनी कृपा दृष्टि हम पर बनाये रखना।
हे साई हम पर दया करना
हम पर रहम करना, हम को क्षमा करना।

-विकास मेहता

बाबा के चरणों में मेरा समर्पण

मेरा नाम अंजली है। बाबा से मेरा पहला भावनात्मक जुड़ाव साल 2009 में हुआ, जब मैं बैंगलोर के इंदिरा नगर स्थित साई मंदिर गई। उस समय मैं वहीं नौकरी कर रही थी। मेरी शादी एक जगह तय हो गई थी, लेकिन कुछ कारणों से वह रिश्ता बिना किसी ठोस वजह के धीरे-धीरे टूटने लगा।

मैं उस शहर में अकेली थी और उस वक्त मेरी हालत ऐसी हो गई थी कि बस रोने के अलावा और कुछ नहीं कर पाती थी। ऑफिस का काम भी मन से नहीं हो रहा था। एक दिन मेरी PG की एक साथी बोली, 'चल साई मंदिर चलते हैं, तू बाबा से जो भी मांगेगी, वो ज़रूर देंगे।'

मैं उसके साथ मंदिर गई और बाबा के दर्शन करते ही मेरी आँखें भर आई। मैंने बाबा से कहा, रिश्ता टूट रहा है, कृपया संभाल लो। लेकिन बाबा ने मेरे लिए कुछ और ही सोचा था, जो मुझे उस समय समझ नहीं आया।

मैं बहुत टूट चुकी थी, लेकिन बाबा के मंदिर जाना मुझे सुकून देने लगा। रिश्ता तो नहीं बचा, पर मैंने बाबा के चरणों में खुद को समर्पित कर दिया। उस समय मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था कि आगे क्या करूँ, लेकिन मैं हर गुरुवार को मंदिर जाने लगी और फिर रोज़ जाने लगी। मंदिर में सुबह कम भीड़ होती थी और मैं बाबा से लंबी बातें कर सकती थी।

मैं रोज़ बाबा से प्रार्थना करती थी कि कृपया इस रिश्ते को ठीक कर दो या इसे मेरी ज़िंदगी से निकाल दो, क्योंकि मैं इस दर्द के साथ नहीं जी सकती। धीरे-धीरे बाबा ने मेरी बात सुनी। मेरा लगाव उस रिश्ते से कम होता गया और बाबा ने मुझे एक नई उम्मीद और हिम्मत दी।

इसी दौरान, मैं जिस प्रोजेक्ट पर काम कर रही थी, वो भी पूरा हो गया था। अब मेरा पूरा ध्यान नए असाइनमेंट पर था। बाबा से रोज़ प्रार्थना करती कि मुझे एक अच्छा प्रोजेक्ट मिल जाए और फिर एक दिन एक मैनेजर से बात हुई और मुझे एक नया प्रोजेक्ट मिल गया। क्लाइंट लोकेशन पर, जहाँ मेरी मुलाकात उस व्यक्ति से हुई जो आज मेरे जीवन साथी हैं।

बाबा की लीला अद्भुत है। जो कुछ भी होता है, वह उनकी योजना का ही हिस्सा होता है। बस पूरी श्रद्धा और विश्वास से सब कुछ बाबा पर छोड़ देना चाहिए। चाहे अभी गलत लगे, पर आगे चलकर बाबा हमेशा वही देते हैं जो हमारे लिए सही और सहनीय होता है।

साल 2010 में मुझे स्वीडन और फिर सिंगापुर में काम करने का मौका मिला। मैं अपनी पुरानी यादों से पूरी तरह बाहर आ चुकी थी और अपने काम में व्यस्त और खुश थी। सिंगापुर में भी बाबा का मंदिर था, जहाँ मैं हर हफ्ते जाती थी।

वहीं मैंने निर्णय लिया कि मैं उसी व्यक्ति से विवाह करूंगी, जिससे नए प्रोजेक्ट में मुलाकात हुई थी। जब मेरा असाइनमेंट खत्म होने वाला था, तब मैं साई बाबा के मंदिर गई और सोचा कि बाबा से आशीर्वाद लेकर ही भारत लौटूं। फिर भारत आकर बाबा की कृपा से मेरी शादी हो गई।

बाबा ने मेरी बहुत परीक्षा ली, लेकिन हमेशा मेरा साथ दिया। कुछ साल ऐसे भी आए जब मैं बाबा को याद नहीं कर पाई, ना प्रार्थना की, ना नामस्मरण। पर जब कठिन समय आया, तो सबसे पहले बाबा ही याद आए, क्योंकि मेरे पहले अनुभव ने मुझे यही सिखाया था। साल 2018 बहुत उतार-चढ़ाव भरा रहा। सब कुछ अस्त-व्यस्त हो गया था। लेकिन मैंने शांति बनाए रखी और सब कुछ बाबा पर छोड़ दिया। 2019 में मैं डेनमार्क आ गई।

इसके अतिरिक्त मैं हाल ही में हुआ अपना एक शिरडी यात्रा का अनुभव सांझा करना चाहती हूं। 14 जून को मैं कोपेनहेगन (डेनमार्क) से दिल्ली होते हुए शिरडी जाना चाहती थी, जहाँ श्री साई अमृतकथा का आयोजन था, जिसमें सुमीत भैया जी कथा सुनाने वाले थे। मेरी टिकट एयर इंडिया से थी, लेकिन 12 जून को एक विमान हादसे की खबर ने मुझे अकेले यात्रा करने से डरा दिया। 13 जून की शाम तक मैंने अपनी यात्रा रद्द कर दी, क्योंकि मन नहीं मान रहा था। फिर मैंने लुफ्थांसा एयरलाइन्स से नई टिकट बुक की और सुरक्षित रूप से 14 जून की शाम को शिरडी पहुँच गई। वहां पहुंचना किसी आशीर्वाद से कम नहीं था, मुझे लगा जैसे मैं अपने बाबा के घर आ गई हूँ।

श्री साई अमृतकथा में मेरी बहुत अच्छे लोगों से मुलाकात हुई। कथा के आखिरी दिन जब लक्की ड्रा निकाला गया तो उसमें मेरा नाम निकला और मुझे बाबा की पेंटिंग मिली जो राजेश जी द्वारा बनाई गई थी। मुझे तो विश्वास ही नहीं हुआ। मेरे लिए तो यह सपने जैसा था।

शिरडी से जाने से पहले, मैंने उसी पेंटिंग को लेकर द्वारकामाई और चावड़ी में बाबा के चरणों में अर्पित किया, ताकि बाबा का आशीर्वाद उस पर बना रहे। जब शिरडी से दिल्ली और फिर दिल्ली से कोपेनहेगन की यात्रा करनी थी, तब एयरपोर्ट पर मैंने बहुत विनती की कि यह पेंटिंग मेरे साथ जाए। लुफ्थांसा ने एक्स्ट्रा चार्ज लेकर मुझे अनुमति दी। मैंने पेंटिंग को odd size लगेज में दे दिया और बाबा से प्रार्थना की, यह आपका चित्र है, इसे सुरक्षित पहुँचाना आपकी ही इच्छा है। और सचमुच, वह पेंटिंग कोपेनहेगन सही-सलामत पहुंच गई। जब मैंने उसे उठाया, तो बस गले से लगा लिया। यह मेरे लिए एक अद्भुत एहसास था। कुछ दिनों बाद, बिना माँगे ही, बाबा ने मुझे एयर इंडिया द्वारा रद्द की गई फ्लाइट का पूरा रिफंड, रीशेडयूलिंग चार्ज और अतिरिक्त राशि भी लौटा दी, हर चीज़ मेरे अकाउंट में क्रेडिट हो गई।

बाबा ने हर चीज़ का ध्यान रखा। जो भी बाबा की शरण में एक बार आ जाता है, बाबा उसका हमेशा ध्यान रखते हैं। तू एक कदम बढ़ा, मैं दस कदम बढ़ाऊंगा। इस पर विश्वास रखने वाले लोग जानते हैं कि बाबा सदा हमारे साथ हैं। साई राम।

-अंजली, डेनमार्क

आपके खत

सभी भक्तों तथा साई परिवार को मेरा ओम साई राम। श्री साई सुमिरन टाइम्स ने साई परिवार को मोतियों की माला की तरह एक दूसरे से जोड़ कर रखा है। इस माला की सुन्दरता, सहजता और खूबसूरती से जो साई परिवार बना इसका श्रेय अन्जु दीदी को जाता है। भक्तों के अनुभव, नई-नई जानकारीयां, ज्ञानवर्धक लेख, साई कथा आदि हम सब तक श्री साई सुमिरन टाइम्स के माध्यम से पहुंचाती हैं जो हमें बाबा के करीब ले जाती हैं। इनकी पूरी टीम का अथक प्रयास और बाबा के लिये समर्पण देखने को मिलता है। ओम साई राम।

-प्रिया अग्रवाल, दिल्ली

जन्मदिन की बधाई

10 अगस्त को बेबी श्री सोनावणे के जन्मदिन के शुभ अवसर पर मम्मी पापा एवं समस्त सोनवणे परिवार की तरफ से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

जन्मदिन की बधाई

22 अगस्त को साईना के जन्मदिवस के शुभ अवसर पर मम्मी पापा, पीयूष व साई सुमिरन टाइम्स परिवार की तरफ से हार्दिक बधाई।

श्री साई सुमिरन टाइम्स

की सदस्यता लेने के लिए जानकारी

भारत में वार्षिक मूल्य डाक द्वारा 700 रू. व कोरियर द्वारा 1000 रू.
आजीवन सदस्यता 11000 रू., विदेशों में वार्षिक मूल्य 2500 रू.

आप अपना सदस्यता शुल्क Paytm, M.O. या QR Code द्वारा या श्री साई सुमिरन टाइम्स के HDFC बैंक, खाता संख्या 01292000015826, IFSC: HDFC0000129 में Net banking या चैक से जमा कर सकते हैं। अथवा State Bank of India, खाता संख्या 35247638760, IFSC: SBIN0017413 में जमा कर सकते हैं। Ch/DD in F/o Shri Sai Sumiran Times. कृपया राशि जमा करने की सूचना अवश्य दें। आप अपना पता व फोन न. हमें email/whatsapp/sms या डाक द्वारा भेज सकते हैं। हमारा पता है: श्री साई सुमिरन टाइम्स, F-44-D, MIG Flats, Hari Kunj Society, Hari Nagar, New Delhi - 110064.
Ph: 9212395615, 9818023070, Email: saisumirantimes@gmail.com

नोट: इसमें विज्ञापन देने के लिए भी सम्पर्क कर सकते हैं।

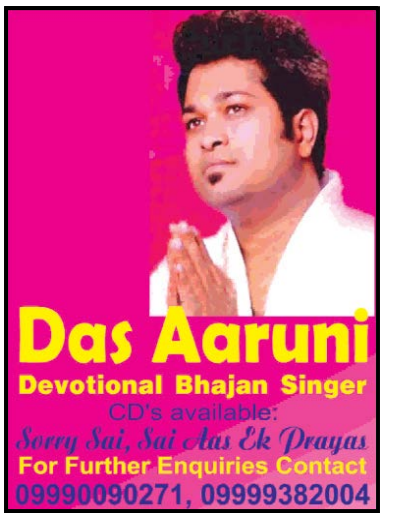

पृष्ठ 1 से आगे

साई हैं तो फिक्र ...

जब मेरे बेटे हृदय ने साई बाबा की फोटो देखी तो हम समझ गये कि हम सही जगह आ गए हैं। बाबा मेरे साथ थे। हमने वहां positivity और विश्वास महसूस किया। मैंने सोचा था कि मुझे कुछ ही दिन अस्पताल में रहना पड़ेगा। लेकिन मैं 30 दिन अस्पताल में रहा और ऑपरेशन के बाद 15 दिन मुम्बई में ही recovery के लिए रहा। जब मेरा ऑपरेशन हुआ तो हमने सोचा कि बुरा समय निकल चुका है। मैंने अस्पताल के बिस्तर से Online काम करना शुरू कर दिया। डॉक्टर आशावादी थे कि मैं अब ठीक हो जाऊंगा। लेकिन फिर से complications हो गई और अगले ही दिन मेरी फिर से एक और बड़ी सर्जरी की गई, लेकिन वह सफल नहीं हुई। डॉक्टरों ने कहा कि मेरी हालत सीरियस है और मेरे बचने की उम्मीद कम है। मेरे परिवार के सदस्य बहुत घबरा गये और तुरन्त मुम्बई आ गए। दो दिनों तक मैं ज़िन्दगी और मौत के बीच जूझता रहा। मेरी तीसरी बार सर्जरी की गई। उसके बाद मेरी हालत कुछ स्थिर हुई। 15 दिन में मेरी तीन बार सर्जरी हुई। प्रत्येक सर्जरी 8 से 12 घंटे तक चली और दस से अधिक विशेषज्ञ डॉक्टरों की टीम मुझे संभाल रही थी। डॉक्टरों ने कहा कि उन्होंने कभी भी इतना complicated केस नहीं देखा था। ICU से लेकर वार्ड तक, अस्पताल में हर कोई मुझे पहचानने लगा था। 45 दिन मुम्बई में रहने के बाद मैं कुछ दिनों के लिए शिरडी में स्थित साई रिसु वाड़ा, अपने दूसरे घर में आ गया। एक दिन मैं कमज़ोर और बेचैन महसूस करते हुए उठा। पिछले 45 दिनों में तीन बड़ी सर्जरी करवाने के बाद, मैं बहुत कमज़ोर हो गया था। मेरे लिए अपने कमरे से वॉशरूम तक जाने के लिए उठना भी एक बहुत कठिन काम था। फिर भी, जैसे ही मैंने बिस्तर से उठने की कोशिश की, मैंने आधी नींद में एक आवाज़ सुनी, 'सुजय, चिंता मत करो, मैं तुम्हारे साथ हूँ, तुम्हारे दुख खत्म हो गए हैं, मैं तुम्हारा ध्यान रखूँगा।' यह बाबा की दिव्य आवाज़ थी। उस पल ने मेरी चेतना, मेरा हौंसला, मेरा विश्वास वापस ला दिया। हालाँकि मेरा शरीर कमज़ोर था, लेकिन मेरी आत्मा आशा से भरी हुई थी। उसी दिन, मुझे डॉक्टरों से मिलने के लिए मुंबई जाना था, जहाँ एक छोटी सी सर्जरी होने वाली थी। बाबा पर पूरा भरोसा रखते हुए, मैं अस्पताल गया। जब डॉक्टरों ने मेरी जाँच की तो उन्होंने कहा, सुजय, तुम ठीक हो रहे हो। अब सर्जरी की कोई ज़रूरत नहीं है, घर वापस जाओ और अपनी सेहत पर ध्यान दो और अपनी अगली बड़ी सर्जरी के लिए ताकत हासिल करो ताकि तुम फिर से सामान्य रूप से खाना खा सको और बोल सको। तब तक, मैंने अपनी आवाज़, smelling power और स्वाद का एहसास, मुँह से खाने की क्षमता, नाक से साँस लेने की क्षमता सब कुछ खो दिया था। बाबा ने अपना वचन निभाया। 45 दिनों के बाद, मैं बाबा से बिना कुछ माँगे ही वापस घर जा रहा था जो मुझे एक चमत्कार जैसा लग रहा था। बाबा की लीला ने एक बार फिर मुझे विस्मय में डाल दिया। बार-बार, मैंने उनकी दिव्य उपस्थिति का अनुभव किया है। बाबा के आशीर्वाद ने हमेशा मुझे जीवन के सबसे कठिन दौर से उबरने में मदद की है।

17 जून को सीनियर प्लास्टिक सर्जन डॉ. बलियार सिंह ने मेरी आखिरी सर्जरी की, जो 10 घंटे तक चली। उन्हें डॉ. डीक्रूज़ ने विशेष रूप से बुलाया था। बाबा की कृपा से मेरी सर्जरी सफल रही। 28 जून को, मैं कोलकाता वापस आ गया। श्री साई सुमिरन टाइम्स की अंजु टंडन के अनुरोध पर यह कहानी लिख रहा हूँ, अंजु 2022 से साई संगम का हिस्सा रही हैं और उन्होंने एक भी कार्यक्रम मिस नहीं किया। यहाँ तक कि वो हमारे साथ बैंगलोर और दुबई की यात्रा में भी शामिल थी। नवम्बर 2024 में बाबा की प्रेरणा से मैंने शिरडी में एक आध्यात्मिक पुस्तकालय, साई वाणी की शुरूआत की। फरवरी 2025 में मुझे साई बावनी का ध्यान मंत्र अपनी आवाज़ में रिकॉर्ड करने और YouTube पर अपलोड करने के लिए भी बाबा ने प्रेरणा दी। बाबा हमें याद दिलाते हैं कि कर्म शब्दों से नहीं, बल्कि करने से सार्थक होते हैं। श्री सुमीत पोंदा भाई जी के इन शब्दों ने मुझे कठिन दिनों में शक्ति दी- 'साई नहीं तो ज़िक्र क्यों, साई हैं तो फिक्र क्यों।' मैं उन सभी का दिल से आभारी हूँ जिन्होंने मेरे लिए प्रार्थना की। बाबा हम सभी के ज़रिए काम कर रहे हैं। साई संगम का मिशन अब बड़ा हो गया है। हमारा लक्ष्य इस सेवा को भारत के हर कोने में ले जाना है, छोटे-बड़े सभी शहरों से लेकर दुनिया भर के देशों तक जाना है।

अब मेरी Speech Therapy चल रही है। मैं मशीन के मदद से फिर से बोल पाऊंगा। बाबा की कृपा से अब मैंने स्वयं खाना-पीना शुरू कर दिया है और मैं धीरे-धीरे ठीक हो रहा हूं। मुझे विश्वास है कि बाबा की कृपा से मैं फिर से सामान्य जीवन व्यतीत कर पाऊंगा।

मैं आप सबको साई संगम-11 में शामिल होने के लिए आमंत्रित करता हूँ। आप सभी इस दिव्य मिशन का हिस्सा बनें। हमारी वेबसाइट www.saisangam.co.in पर जाएँ या 9051155503 पर whatsapp करें। आप मुझसे सीधे www.sujaykhandelwal.com पर भी सम्पर्क कर सकते हैं। आइए हम अपने प्यारे साई बाबा के आशीर्वाद के साथ सेवा और प्रेम के इस मार्ग पर एक साथ चलें।

-सुजय खंडेलवाल

बाबा ने मन की इच्छा पूरी की

मेरी तरफ से आप सबको और साई सुमिरन टाइम्स की पूरी टीम को ओम साई राम। मैं अब आपको अपने साथ हुए अनुभव बताना चाहती हूं।

मैं अपने पति के साथ 4 मई 2025 को दिल्ली से शिरडी गयी थी और 5 मई को शिरडी पहुंच कर बाबा के दर्शन दोपहर में किये। जब मैं बाबा को प्रसाद चढ़ाकर बाहर निकल कर गुरूस्थान की परिक्रमा करके जा रही थी तभी किसी महिला ने अपनी माला मुझे दी और कहा इसे अपने पास रखो। मैं हैरान रह गई और इसे बाबा का आशीर्वाद मानकर माला को अपने पास रख लिया।

अब दूसरा अनुभव बताना चाहती हूं, उसी दिन 5 मई को शाम की आरती करके बाहर निकल कर गुरूस्थान के दर्शन किये तथा परिक्रमा करके बाबा की उदि और बूंदी का प्रसाद लिया। मेरे मन में एक और उदि का पैकेट लेने की इच्छा थी, लेकिन वहां एक ही पैकेट देते हैं। मैं बाहर आ गई। तभी पीछे से एक बाबा आये और मुझे उदि का पैकेट देकर चले गये। उन्होंने सफेद कपड़े पहन रखे थे और सिर पर सफेद रंग की टोपी पहन रखी थी। अगर वह बाबा नहीं थे तो कौन हो सकता है? मुझे विश्वास है कि मेरी इच्छा पूरी करने बाबा खुद ही आ गये। मुझे बाबा की असीम कृपा प्राप्त हुई और मुझे दो बार बाबा ने प्यारा सा अनुभव दिया। ओम साई राम।

-प्रिया अग्रवाल, महरौली, दिल्ली

जन्मदिन मुबारक

1 अगस्त गीतांजली | 1 अगस्त कैलाश सिंह रावत | 6 अगस्त धर्मेन्द्र बामा

7 अगस्त हमसर हयात | 11 अगस्त संजय गुप्ता | 13 अगस्त नीरज शर्मा

12 अगस्त अंजली थापा | 16 अगस्त बलराम गुप्ता | 18 अगस्त बंटी मदान

21 अगस्त रेनू लूथरा | 26 अगस्त एच.पी. शर्मा | 28 अगस्त नवीन शर्मा

जन्मदिन मुबारक

2 अगस्त को वीना मां के जन्मदिवस के शुभ अवसर पर उन्हें श्री साई सुमिरन टाइम्स की तरफ से शुभकामनाऐं एवं हार्दिक बधाई।

जन्मदिन मुबारक

दिनांक 19 अगस्त को गुरूजी श्रद्धेय शुभ्रम बहल जी के जन्मदिवस के शुभ अवसर पर उन्हें श्री साई सुमिरन टाइम्स की तरफ से शुभकामनायें एवं हार्दिक बधाई।

बधाईयां

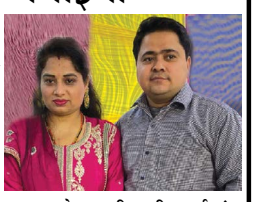

दिनांक 11 अगस्त को इंदु एवं अश्वनी कुमार तुली को श्री साई सुमिरन टाइम्स की तरफ से शादी की वर्षगांठ की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाऐं।

Parmhans Enterprises

Disposable & Safety Items

Disposable Bed Sheet, Dispo Panty, Dispo Gown, Letex Gloves, Gillette Razor, Dispo Towell, Dispo Tissue, Dispo Face Mask, Dispo Bra, Dispo Cap, Dispo Shoes Natral Gloves, Dispo Hair Band, Cover Surgi Care Gloves M Fold C Fold, Tissue Box,

Customer Care No.

0870065218 4

E-mail : parmhans.kedar@gmail.com

साई बाबा की कृपा लंदन में

श्रद्धा, सबुरी और भक्ति की एक यात्रा की यह कहानी आकाश की है जो लंदन में रहने वाले एक सच्चे साई बाबा के भक्त हैं। उनकी ज़िंदगी की यह यात्रा बताती है कि बाबा की कृपा सीमाओं की मोहताज नहीं होती। आकाश का सपना था कि वह लंदन में अपना खुद का घर बनाए और उसमें एक कमरे की वॉल बाबा के लिए समर्पित करे। जब उसका यह सपना सच होने लगा तो उसने भारत से बाबा की एक सुंदर मूर्ति मंगवाने का निश्चय किया। इस काम के लिए उसने अपनी मौसी, नीरज जी से मदद मांगी, जो खुद भी साई बाबा की बड़ी भक्त हैं और अक्सर शिरडी जाती रहती हैं। उनकी सहायता से एक सुंदर सफेद संगमरमर की मूर्ति चुनी गई और भारत से लंदन भेजी गई। जब मूर्ति लंदन पहुँची, उस समय आकाश का परिवार अपने नए घर में शिफ्ट हो रहा था। काम की व्यस्तता के कारण वे तुरंत मूर्ति का डिब्बा नहीं खोल पाए। दो हफ्ते बाद जब उन्होंने मूर्ति का डिब्बा खोला तो सबका दिल टूट गया। सफेद मूर्ति अब पूरी तरह नीली हो चुकी थी। शायद ट्रांसपोर्टिंग के दौरान नीले रंग की स्याही मूर्ति के डिब्बे के अंदर लीक हो गई थी। मगर इसकी सही वजह पता नहीं चल सकी। आकाश और नीरज जी ने मूर्ति भेजने वाले से संपर्क किया। मूर्ति भेजने वाले ने पैकिंग का वीडियो भेजा जिसमें मूर्ति एकदम सही स्थिती में थी। यह देखकर सब हैरान थे। नीरज जी ने धीरे से कहा, यह बाबा की लीला है, समय आने पर इसका कारण समझ आएगा। दो दिन बाद घर में संगमरमर के पत्थर आए, जो आकाश ने मंगवाए थे। आकाश मज़दूरों की मदद कर रहा था तभी भारी पत्थर उसकी टांग पर गिर गया और उसकी टांग बुरी तरह ज़ख्मी हो गई। उसे तुरंत अस्पताल ले जाया गया। डॉक्टरों ने उसकी टांग बचाने की बहुत कोशिश की और लगभग 6-7 बार सर्जरी करनी पड़ी। लेकिन कई जगहों पर फ्रैक्चर और नसों को गंभीर नुकसान होने के कारण अंत में उसकी टांग काटनी पड़ी। इतने दर्द और तकलीक में भी आकाश ने बाबा पर विश्वास नहीं छोड़ा। वह अस्पताल के बिस्तर पर लेटे-लेटे साई सच्चरित्र पढ़ता रहा। उसने श्रद्धा और सबुरी का दामन नहीं छोड़ा। इधर घर में मूर्ति वैसे ही नीली पड़ी थी। एक रात नीरज जी को सपना आया, बाबा ने कहा, मुझे साफ कराओ। उन्होंने आकाश को सब बताया और दोनों को लगा कि यह काम किसी सच्चे भक्त को ही करना चाहिए। तभी श्वेता नाम की एक और साई भक्त जो बचपन से ही बाबा की भक्त थीं और बाबा से आत्मिक रूप से गहराई से जुड़ी हुई थीं, उसका उन्हें खयाल आया। आकाश ने उनसे बाबा की सेवा करने के लिए कहा। जब श्वेता आकाश के घर उस कमरे में पहुंची जहां बाबा की मूर्ति रखी थी, तो उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे बाबा वहां चुपचाप, उदास बैठे हों और इंतज़ार कर रहे हों कि कोई आकर उन्हें साफ करे। श्वेता ने हर हफ्ते मूर्ति को प्यार और भक्तिभाव से साफ करना शुरू किया। इसमें उनके पति ने भी पूरा साथ दिया। धीरे-धीरे मूर्ति फिर से सफेद और सुंदर होने लगी। बाबा का चेहरा एक बार फिर शांत, चमकदार और जीवंत दिखाई देने लगा। इसी बीच आकाश भी अस्पताल से घर लौट आया। कुछ ही महीनों में वह कृत्रिम टांग की मदद से चलने लगा। उसका घर का सपना और बाबा का कमरा अब पूरा हो चुका था। जैसे बाबा की मूर्ति फिर से संवर गई, वैसे ही आकाश भी जीवन में फिर से उठ खड़ा हुआ। श्वेता और उनके पति नियमित रूप से बाबा की सेवा करते रहे, मानो यह सेवा उन्होंने नहीं चुनी हो, बल्कि स्वयं बाबा ने उन्हें इसके लिए चुना हो। आकाश ने भी कभी उम्मीद का दामन नहीं छोड़ा और उसकी श्रद्धा व सबुरी ने उसे भीतर से और भी अधिक मज़बूत बना दिया।

यह कहानी सिर्फ एक घर या मूर्ति की नहीं, यह कहानी है बाबा की उपस्थिति की। वह जहां भी हों अपने भक्तों तक पहुंचते हैं, उनकी सेवा स्वीकार करते हैं और सबको मुश्किल समय में मार्ग दिखाते हैं।

सभी के लिए एक संदेश- हर कठिनाई में बाबा हमसे सिर्फ श्रद्धा और सबुरी मांगते हैं। उनका समय सबसे सही होता है, बस भरोसा रखें। जब सेवा करने का अवसर मिले, समझिए यह बाबा की कृपा है। छोटी हो या बड़ी, हर भक्ति की भावना आपको बाबा के करीब लाती है। ओम साई राम।

-श्वेता, लंदन

बाबा मेरे सामने प्रकट हो गए

मेरा नाम डॉ. साई संस्कृति है। मैं बैंगलुरू में रहती हूं। मैं जब तीन साल की थी तब से शिरडी साई बाबा की भक्त हूं। मैं सिर्फ साई बाबा को मानती हूं। मेरे लिए साई बाबा ही सब कुछ हैं। मेरे जीवन में बाबा के कई अनुभव हुए हैं, मैं आप सबको कुछ दिन पहले हुआ अपना एक अनुभव बताना चाहती हूं।

मैं बाबा के दर्शन करने शिरडी गई थी। एक दिन मैं सुबह काकड़ आरती में शामिल होने समाधि मंदिर में गई। जब मैं जा रही थी तभी मंदिर के गार्ड ने कहा कि आज आप कितना रोने वाली हो दीदी। मैंने कहा, बाबा ही जानें। आरती के दौरान मैं ध्यान से आरती सुन रही थी। काकड़ आरती के बीच में कुछ लाईनें आती हैं 'समाधि उतरोनिया, गुरू चला, मशीदीकडे, त्वदीय वचनोक्ति ती मधुर, वारिती, साकडे. ...(मस्जिद में समाधिलीन हे सद्गुरू, कुछ क्षण के लिए अपने ध्यान से निकलकर भक्तों की तरफ देखिये, उनसे बातें कीजिये, आपकी वाणी कष्टों और तापों को धो देती है।) तभी मैंने देखा कि समाधि में से बाबा निकलकर मेरे सामने प्रकट हो गए हैं। यह देखकर मैं दंग रह गई, मेरी आंखे एकटक उनको देखती रही, मैं जैसे freeze हो गई, मेरी आंखों से लगातार आंसू निकल रहे थे। उस दिन मैं खूब रोई। वहां खड़ी महिला गार्ड ने पूछा कि सब ठीक है ना। मैंने कहा, हां। आरती के बाद जब मैं बाहर जाने लगी तो गार्ड ने कहा कि अभी आप यहीं रूको और विष्णु सहस्त्रनाम सुनने के बाद जाना। मैं खुश हो गई और वहां रूक गई और विष्णु सहस्त्रनाम के पाठ का आनन्द लिया और मन ही मन बाबा का शुक्राना किया। उस दिन मुझे बहुत अच्छा लगा। बाबा अपने भक्तों के भाव समझते हैं और अपनी कृपा बरसाते हैं। बाबा की कृपा से बढ़कर कुछ नहीं। साई राम।

-डॉ. संस्कृति, बैंगलुरू

श्रद्धा सबूरी

LEKH RAJ & SONS JEWELLERS

For Exclusive

Gold, Diamond, Kundan, Silver Jewellery

Shop No. 3, B-33, Kalkaji New Delhi-19

Phone 26438272

बाबा के चरणों में

सरगम स्टूडियो

Producer of Films, Radio & TV Serials

E-23-B, Lajpat Nagar-2, New Delhi - 110024 Ph. No. 2981-5747

AMBICA PROPERTIES Om Sai Ram

Sale, Purchase & Renting

Deals in: Pahar Ganj, Patel Nagar, Rajender Nagar, Karol Bagh, Inderpuri,

RAMA BUILDERS

Construction, Collaboration & All Types of Building Materials

HOTEL SAI MIRACLE

Luxury Living

Aditya Nagpal-9811175340,

2532/11, Chuna Mandi, Paharganj, (Behind Hotel Anand), New Delhi-110055

Aditya Nagpal

शिरडी साई मन्दिर सैक्टर-16 फरीदाबाद में गुरूपूर्णिमा

फरीदाबाद: शिरडी साई मन्दिर सैक्टर 16 फरीदाबाद में गुरू पूर्णिमा का त्यौहार बड़ी धूमधाम से मनाया गया मन्दिर परिसर में सुबह 5 बजे से काकड़ आरती से शुरुआत की गई। बाबा के मंगलस्नान के बाद गुरु पूजन शुरू हुआ जिसमें प्रत्येक भक्त ने बाबा को

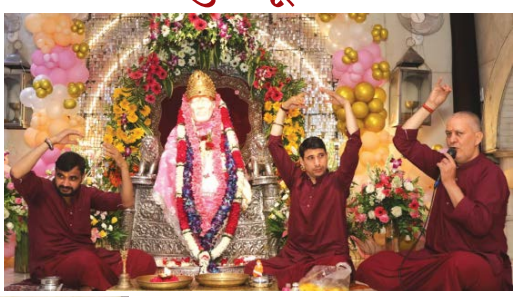

तिलक किया और बाबा को भोग अर्पित किया गया। सभी भक्तों में भंडारे का वितरण किया गया। जिसमें लोगों ने खीर प्रसाद का आनंद लिया। शाम की आरती से शेज आरती तक साई भजनों का गुणगान सूफी भजन गायक सन्नी एंड पार्टी व दिल्ली की भजन गायिका गौरी मल्होत्रा द्वारा किया गया। बाबा की पालकी ढोल नगाड़ों के साथ निकाली गई। प्रधान योगेश दीक्षित व अन्य ट्रस्टीगण एस.पी. सिंह, पी.एल. कुमार, मनु भार्गव, वी.पी. गुप्ता, गगन दुआ, कार्यकारिणी सदस्यों में श्रीपाल चंदीला, राजीव ग्रोवर, सुभाष पासे, विनोद बजाज, एन.के. अरोड़ा, एन.पी. खन्ना, पी. आर. सिक्का, के.जी. चुग, मैनेजर जीत सिंह व मन्दिर के सभी पंडित और सेवादारों ने पूरे उत्साह के साथ कार्यक्रम में हिस्सा लिया। **-श्रीपाल चंदीला,** फरीदाबाद

साई मंदिर रोहिणी में जन्माष्टमी पर आमंत्रण

दिल्ली: हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी दिनांक 16 अगस्त 2025 को शिरडी साई बाबा मंदिर, सै. क्टर-7, रोहिण ी में जन्माष्टमी महोत्सव धूमधाम से मनाया जाएगा। इस पावन अवसर पर मंदिर में श्रीकृष्ण भगवान की लीलाओं की अनेक आकर्षक झांकिया लगाई जाऐंगी। पूरे मंदिर की फूलों और रंग बिरंगी लाईटों से सजावट की जाएगी। दिनभर मंदिर में भजनों का गुणगान चलता रहेगा। शाम की आरती के बाद भी विभि. न्न गायकों द्वारा भजनों का गुणगान किया जायेगा जो रात 12 बजे तक चलेगा। रात 12 बजे आरती की जायेगी। तत्पश्चात् सभी भक्तों को फल प्रसाद वितरित किया

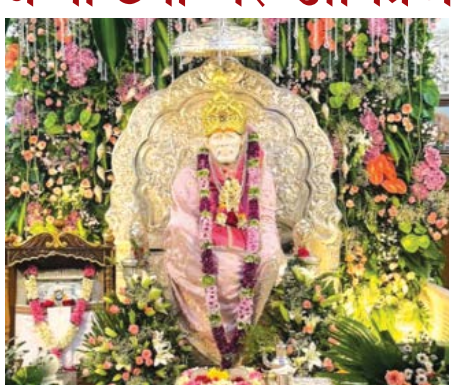

जाएगा। आप सब भी इस अवसर पर सपरिवार मंदिर में पहुंच कर श्रीकृष्ण भगवान की वि. भन्न झांकियों के दर्शन करें और भजनों का आनन्द लें। मंदिर के प्रधान श्री के.एल. महाजन, उपप्रधान श्री संजीव अरोड़ा, महासचिव श्री रमेश कोहली, कोषाध्यक्ष श्री अशोक रेखी, सचिव श्रीमती प्रोमिला मखीजा एवं सदस्य श्री पी.डी. गुप्ता व श्री विमल शर्मा की तरफ से आप सब इस अवसर पर आमन्त्रित हैं।

सभी भक्तगण मंदिर के समस्त कार्यक्रम एवं लाईव दर्शन मंदिर के youtube चैनल https://youtube.com/@saiba-bamandir पर देख सकते हैं।

श्री साई साधना समिति द्वारा गुरू पूर्णिमा पर भजन संध्या

दिल्ली: साई साधना समिति जनकपुरी द्वारा गुरू पूर्णिमा महोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। दिनांक 13 जुलाई 2025 को गुरू पूर्णिमा के उपलक्ष्य में सायं 5:00 बजे से रात 7:30 बजे तक योगा हॉल, BE ब्लाक, जनकपुरी में भजनों के कार्यक्रम का आयोजन

एक के बाद एक अनेक मधुर भजन सुनाकर पूरे माहौल को साईमय बना दिया। बहुत से भक्तों ने इस कार्यक्रम में शामिल होकर उनके भजनों का आनंद लिया और बाबा का आशीर्वाद प्राप्त किया।

किया गया। भजनों का गुणगान करने के लिए दिनेश दीवान एंड पार्टी को आमंत्रित किया गया। दिनेश जी एवं उनके साथी कलाकारों ने अपने चिरपरिचित अंदाज़ में भजन सुनाकर अपने सद्गुरू साईनाथ महाराज की महिमा का गुणगान किया। उन्होंने

आरती से कार्यक्रम का समापन हुआ। उसके बाद सबको प्रसाद वितरित किया गया।

साई साधना समिति के सदस्यों द्वारा समय-समय पर अनेक भक्तिमय कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।-**कृष्णा**

पृष्ठ 1 का शेष

साई मंदिर रोहिणी में गुरूपूर्णिमा...

महाराज जी ने भजनों का गुणगान आरंभ किया। उन्होंने अपनी मधुर आवाज़ में अनेक भजन सुनाकर सभी भक्तों को साई भक्ति में

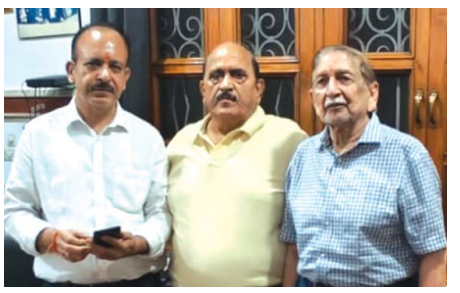

सराबोर कर दिया। भजनों के साथ-साथ उन्होंने कई ज्ञानवर्धक किस्से भी सुनाए।

10 जुलाई को ही मंदिर के प्रधान श्री के.एल. महाजन जी व श्रीमती इंद्रा महाजन की शादी की सालगिरह होने पर सभी ने उनको बधाई दी और श्री रमेश कोहली जी व श्री पी.डी. गुप्ता जी ने बाबा का वस्त्र औड़ाकर मंदिर समिति की तरफ से उन्हें शुभकामनाऐं दीं। श्रवण जी ने बधाई गीत सुनाया जिस पर सभी ने खूब नृत्य किया। दोपहर 12 बजे पंडित श्रवण जी महाराज ने दोपहर की आरती गाई। आरती के पश्चात् सभी भक्तों को मंदिर समिति की तरफ से तुलसी के पौधे गमलों सहित भक्तों को भेंट स्वरूप दिये गये जिसे पाकर भक्तगण अत्यन्त प्रसन्न नज़र आए। मंदिर समिति के सदस्यों का मानना है कि हम सबका कर्त्तव्य है कि हम अधिक से अधिक पौधे लगाकर अपने पर्यावरण को आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वच्छ व सुरक्षित रखें। सभी भक्तों के लिए स्वादिष्ट भंडारे का आयोजन किया गया।

दोपहर की आरती के बाद भजन गायिका राधा राठौर, शबनम गांधी, रमा कटारिया, सिम्पी मेहता एवं विजय रहेजा द्व ारा भजनों का गुणगान चलता रहा। शाम 7 बजे सांय आरती के बाद बाबा की पालकी धूमधाम से ढोल, बाजे के साथ निकाली गई। इस दौरान मंदिर में भजनों का गुणगान चलता रहा, जिसमें डॉ. रविन्द्र ककरिया, रश्मी भारद्वाज, परवीन मुदगुल, गुरूजी ब्रिज मोहन नागर, परवीन मलिक, भुवनेश नथानी, नरेश नागर एवं हिमांशु आनन्द ने कई लोकप्रिय भजन सुनाए। पूरा मंदिर बाबा के रंग में रंगा हुआ लग रहा था। रात 10 बजे शेज आरती से कार्यक्रम का समापन हुआ। हज़ारों भक्तों ने गुरू पूर्णिमा के पावन अवसर पर साईनाथ महाराज का आशीर्वाद प्राप्त किया। मंदिर कार्यकारिण ी समिति के सभी सदस्य मंदिर में सुबह से रात तक उपस्थित रहे व समस्त कार्य व्यवस्था की देखरेख सुचारू रूप से की।

मंदिर के प्रधान श्री के.एल. महाजन, उपप्रधान श्री संजीव अरोड़ा, महासचिव श्री रमेश कोहली, कोषाध्यक्ष श्री अशोक रेखी, सचिव श्रीमती प्रोमिला मखीजा एवं सदस्य श्री पी.डी. गुप्ता व श्री विमल शर्मा द्वारा बखूबी किया गया। उन्होंने सभी भक्तों को गुरूपूर्णिमा की शुभकामनाऐं दी।

गुरूपूर्णिमा का समस्त कार्यक्रम एवं साई मंदिर के लाईव दर्शन सभी भक्तगण मंदिर की यूटूब चैनल https://youtube.com/@saibabamandir पर देख सकते हैं। **-कृष्णा पुरी**

गुरूपूर्णिमा पर साई धाम महावीर नगर में बाबा को चांदी का सिंहासन अर्पित

दिल्ली: दिनांक 10 जुलाई 2025 को साई धाम मंदिर, गली न. 2, ओल्ड महावीर नगर में गुरूपूर्णिमा महोत्सव श्रद्धा पूर्वक एवं हर्षोल्लास से मनाया गया। पूरे मंदिर को और बाबा के दरबार को फूलों से अति सुंदर सजाया गया। इस पावन अवसर पर सुबह 6:30 बजे 108 लीटर दूध से बाबा को मंगल स्नान करवाया गया जिसमें बहुत से भक्त शामिल हुए। उसके बाद बाबा का अभिषेक किया गया। इस अवसर पर साई बाबा को नया चांदी का अति सुंदर सिंहासन अर्पित किया गया। नये चांदी के सिंहासन पर विराजित बाबा की शोभा देखते ही बनती थी। सभी भक्तों को ब्रैड पकोड़े का प्रसाद खिलाया गया। सुबह 8:30 बजे से सुप्रसिद्ध गायक एवं भक्त श्री राधे दास जी द्वारा भजनों का गुणगान किया गया। उन्होंने अपनी मधुर आवाज़ में कई मधुर-मधुर भजन सुनाकर सभी का मन मोह लिया। सबने उनके भजनों का भरपूर आनंद लिया। पूरा मंदिर भक्तों से भरा था। भजनों के बाद आरती की गई।

आरती के बाद 12:30 बजे सबको भंडारा प्रसाद वितरित किया गया। पूरे दिन मंदिर में भक्तों का आना जाना लगा रहा। गुरूपूर्णिमा के अवसर पर लोग विशेष रूप से मंदिर में बाबा के दर्शन करने और उनका आशीर्वाद लेने आए। कार्यक्रम का आयोजन साई धाम मंदिर समिति के सभी सदस्यों द्वारा अति सुचारू रूप से किया गया। **-जी.आर. नंदा**

श्रद्धेय श्री अजय गोस्वामी गुरूजी द्वारा गुरू पूर्णिमा पर भक्तों को आशीर्वाद

दिल्ली: हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी दिनांक 10 जुलाई 2025 को श्री प्रमोद गुप्ता जी द्वारा रास बॉय गोल्डन रॉयल, बैंक्वट हाल, मोती नगर में गुरूपूर्णिमा महोत्सव के अवसर पर भजनों के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पूरे हॉल एवं बाबा के दरबार को बहुत

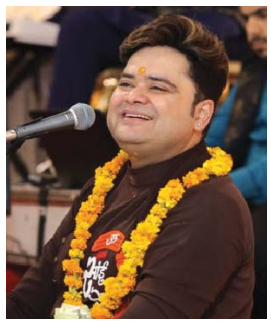

ही खूबसूरत सजाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्रात: 11 बजे श्रद्धेय गुरूजी अजय गोस्वामी जी ने ज्योत प्रज्ज्वलित करके किया और पूजा अर्चना करवाई। तत्पश्चात् भजनों का गुणगान आरम्भ हुआ। सुप्रसिद्ध भजन गायक पंकज राज जी ने एक के बाद एक कई भावपूर्ण और मस्ती भरे भजन सुनाकर पूरे माहौल को साईमय बना दिया। सबने उनके भजनों का भरपूर आनन्द लिया और कई भक्तों ने बाबा की मस्ती में खूब नृत्य भी किया। श्री शंकर अनुरागी जी ने बखूबी मंच संचालन किया। पूरा पंडाल भक्तों से खचाखच भरा था। वहां उपस्थित सभी भक्तों ने साई बाबा और अपने गुरू श्रद्धेय श्री अजय गोस्वामी जी का आशीर्वाद लिया। इस कार्यक्रम में कई गणमान्य व्यक्ति भी गुरूजी श्रद्धेय अजय गोस्वामी जी का आशीवाद लेने वहां पहुंचे। सुप्रसिद्ध गायिका राधा राठौर जी ने भी

भजन सुनाकर अपनी हाज़री लगाई। आरती से कार्यक्रम का समापन हुआ। उसके बाद सभी भक्तों ने स्वादिष्ट भंडारे प्रसाद का आनन्द लिया। कार्यक्रम का आयोजन श्रद्धेय गुरूजी श्री अजय गोस्वामी जी के मार्गदर्शन में श्री प्रमोद गुप्ता जी द्वारा बखूबी किया गया। टैगोर गार्डन में श्रद्धेय श्री अजय गोस्वामी गुरूजी के निवास स्थान पर साई बाबा का अति सुंदर मंदिर है जहां हर बृहस्पतिवार को अनेकों भक्त गुरूजी

व साई बाबा का आशीर्वाद लेने आते हैं। कई भक्त गुरूजी से अपनी समस्याओं का समाधान लेते हैं और अपनी मनचाही मुरादें पूरी करते हैं। **-पूनम धवन**

साई मंदिर आदर्श नगर में गुरूपूर्णिमा महोत्सव

दिल्ली: दिनांक 10 जुलाई 2025 को शिरडी साई मंदिर, एफ-1, अशोक रोड, आदर्श नगर एक्सटेंशन में गुरूपूर्णिमा महोत्सव बड़ी धूमधाम एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। मंदिर को रंगबिरंगे फूलों से अति सुंदर सजाया गया। इस अवसर

पर प्रात: काकड़ आरती एवं मंगलस्नान के बाद बाबा का अभिषेक किया गया। शाम 5 बजे भजन संध्या का आयोजन किया गया। बाबा की लीलाओं का गुणगान करने के लिए सुप्रसिद्ध गायक बूम-बूम सैन्डी एवं के.के. अन्जाना को आमंत्रित किया गया। उन्होंने अपने भजनों से सभी भक्तों का मन मोह लिया। सांय 5 बजे से ही भक्तों को भंडारे का वितरण भी किया गया। बहुत से भक्तों ने मंदिर में आकर बाबा का आशीर्वाद प्राप्त किया।

इस मंदिर में प्रत्येक कार्यक्रम का आयोजन मंदिर के संस्थापक एवं चेयरमैन स्वर्गीय श्री बी.पी. मखीजा जी के दिखाए मार्ग दर्शन में किये जाते हैं। **-कृष्णा पुरी**

शिरडी धाम विकासपुरी में गुरूपूर्णिमा एवं विक्रमोत्सव पर भजन संध्या

दिल्ली: दिनांक 10 जुलाई 2025 को के जी-1-के जी-2, डिस्पेंसरी रोड, विकासपुरी में स्थित शिरडी धाम में गुरूपूर्णिमा को विक्रमोत्सव के रूप में मनाया गया। इस मंदिर के संस्थापक स्वर्गीय श्री विक्रम

महाजन जी ने अपना जीवन बाबा के प्रति पूर्ण श्रद्धाभाव से समर्पित किया था, इसलिए उनकी याद में गुरूपूर्णिमा को विक्रमोत्सव के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर सुबह 6:30 बजे बाबा का मंगलस्नान एवं अभिषेक किया गया। शाम को धूमधाम से बाबा की पालकी निकाली गई। उसके पश्चात् मंदिर परिसर में साई भजन संध्या का आयोजन किया गया। इस अवसर पर भजनों का गुणगान करने के लिए सुप्रसिद्ध गायक संदीप सहगल व उनके बेटे अनुज सहगल व विष्णु सहगल को आमंत्रित किया गया। उन्होंने कई कर्णप्रिय और दिल को लुभाने वाले भजनों का गुणगान किया। विक्रम महाजन जी के बेटे सक्षम महाजन ने कहा कि उनके पापा ने बहुत श्रद्धा से इस मंदिर को बनवाया। जाने से पहले भी वो यहां पर माथा टेक कर गये थे और बाबा का नया सिंहासन बनवा कर गये। उनकी

इच्छा थी कि ज़्यादा से ज़्यादा लोग इस मंदिर में आयें और बाबा के कार्यक्रम में शामिल हों, इसलिए सक्षम जी ने सब भक्तों से अनुरोध किया कि वो इस मंदिर में आते रहें। उन्होंने कहा कि यहां सभी कार्यक्रम पहले की तरह उनकी इच्छा अनुसार चलते रहेंगे। उसके बाद स्व. श्री विक्रम महाजन जी को श्रद्धांजली अर्पित करते हुए केक काटा गया जो सभी भक्तों को वितरित किया गया। देर रात तक भजनों का गुणगान चलता रहा। बाबा की आरती के बाद सभी भक्तों को स्वादिष्ट भंडारा प्रसाद वितरित किया गया। कार्यक्रम का आयोजन स्वर्गीय विक्रम महाजन जी की पत्नी डॉक्टर मीनू महाजन और विशाल सेठ, मान्या महाजन व सक्षम महाजन द्वारा किया गया। इस मंदिर में हर वीरवार को भजन संध्या एवं पालकी का आयोजन किया जाता है। **-साईना पुरी**

श्रद्धालय धाम मंदिर रोहिणी में गुरूपूर्णिमा उत्सव

दिल्ली: दिनांक 10 जुलाई 2025 को श्रद्धालय धाम श्री बालाजी मंदिर, किशन कालोनी, सैक्टर-30, रोहिणी में गुरू पूर्णिमा के पावन अवसर पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मंदिर को रंगबिरंगे फूलों एवं गुब्बारों से अति सुंदर सजाया गया। प्रात: मंगलस्नान के बाद बाबा का अभिषेक किया गया। उसके बाद सुबह 8 बजे से 9 बजे तक गुरू पूजा का विशेष

कार्यक्रम हुआ। दोपहर 12 बजे मध्यान्ह आरती की गई। शाम 5 बजे से साई भजन संध्या का आयोजन किया गया। भजनों का गुणगान साई दास अंकित अरोड़ा जी द्वारा किया गया। उन्होंने कई मधुर भजन सुनाकर पूरे माहौल को साईमय बना दिया। सभी भक्तों ने उनके भजनों का आनंद लिया। दिनभर मंदिर में भक्तों का मेला लगा रहा। सबके लिए भंडारे का भी प्रबन्ध भी किया गया। कार्यक्रम का आयोजन आचार्य श्रवण जी महाराज द्वारा साई सेवा फाऊंडेशन के सदस्यों एवं भक्तों के सहयोग से किया गया। **-गायत्री सिंह**

हर्ष साई द्वारा द्वारका में भजन

दिल्ली: दिनांक 10 जुलाई 2025 को साई सेवादार समिति द्वारा गुरू पूर्णिमा के शुभ अवसर पर block C-121, रामा पार्क, द्वारका मोड़, दिल्ली में श्रीमती भगवती देवी

जी के आवास पर साई भजन संध्या का आयोजन किया गया। उन्होंने भजन गायक हर्ष साई जी को भजनों के गुणगान के लिए आमन्त्रित किया। उन्होंने बाबा के भजनों का बहुत ही मधुर गुणगान किया जिसका वहां मौजूद भक्तों ने खूब आनन्द लिया और भक्तों ने नाच-नाच कर बाबा के समक्ष अपनी हाज़री लगाई। दिनेश दीवान जी ने बखूबी मंच संचालन किया और साथ ही बाबा के भजन अपनी मधुर आवाज़ में प्रस्तुत किये। अंत में बाबा की पालकी निकाली गई और आरती के बाद भंडारा वितरित किया गया। कार्यक्रम के आयोजन में श्री नकुल बंसल, जीतू, गौरव, साहिल व श्रीमती भगवती देवी जी के परिवार ने सहयोग किया। **-कृष्णा पुरी**

साई मंदिर नोयडा में गुरु पूर्णिमा पर श्रद्धा भक्ति और सेवा का समागम

नोयडा: दिनांक 10 जुलाई 2025 को श्री साई मंदिर, सैक्टर-40, नोयडा में गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर एक दिवसीय धार्मिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक महोत्सव का आयोजन अत्यंत श्रद्धा, भक्ति और गरिमा के साथ किया गया। कार्यक्रम के शुभारंभ से समापन तक भक्ति की अनवरत धारा बहती रही। महोत्सव का शुभारंभ प्रात: 6 बजे श्री साई बाबा के दुग्ध अभिषेक मंगलस्नान से हुआ, जिससे वातावरण पवित्रता और सकारात्मक ऊर्जा से भर गया। इसके पश्चात प्रात: 9 बजे श्रद्धालुओं की सहभागिता के साथ श्री सत्यनारायण व्रत कथा एवं हवन-पूजन विधि वत सम्पन्न हुआ। दोपहर 2 बजे मंदिर परिसर में भक्तों द्व ारा श्री साई सच्चरित्र मौन पाठ आयोजित किया गया, जो

आरंभ हुआ, जिसमें भक्तों ने साई नाम के संकीर्तन से मंदिर परिसर को भक्तिरस में डूबो दिया। महोत्सव के अवसर पर मंदिर को भव्य रूप से सजाया गया। रंग-बिरंगे फूलों की मालाएं, सुंदर रंगोली, दीप सज्जा एवं आकर्षक रोशनी से पूरा परिसर अनुपम सौंदर्य से ओतप्रोत रहा। हर कोना भक्तिमय ऊर्जा से झंकृत होता दिखा। कार्यक्रम में श्री साई समिति के अनेक पदाधिकारी एवं सदस्य उपस्थित रहे, जिनकी सहभागिता से आयोजन सफल एवं स्मरणीय बना। प्रमुख रूप से डॉ. नीरज कुमार (उपाध्यक्ष) श्री देव राज गोयल (महासचिव) श्री बृज लाल गर्ग (कोषाध्यक्ष) श्रीमती रेनू फोटेदार (संयुक्त सचिव) श्री सुनील भान (सदस्य) उपस्थित रहे। इन सभी ने आयोजन की रूपरेखा, व्यवस्था तथा श्रद्धालुओं के सत्कार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

श्री साई समिति की ओर से सभी श्रद्धालु भक्तों को गुरु पूर्णिमा की हार्दिक शुभकामनाएं दी गई। साथ ही भविष्य में होने वाले धार्मिक एवं सामाजिक आयोजनों में सहभागिता के लिए सभी से अनुरोध किया गया। **-मुंजेश,** नोयडा

अत्यंत शांति, अनुशासन एवं समर्पण भाव से सम्पन्न हुआ।

सायं 7:30 बजे भजन-कीर्तन कार्यक्रम

आशु मुदगुल द्वारा गुरू पूर्णिमा पर साई मंदिर बैंगलोर में साई गुणगान

बैंगलोर: दिनांक 10 जुलाई 2025 को गुरू पूर्णिमा के शुभ अवसर पर शिरडी साई बाबा मंदिर, देवनहल्ली, बैंगलोर में साई भजन संध्या का आयोजन किया गया। पूरे मंदिर को रंग बिरंगे फूलों से अति सुन्दर सजाया गया। बाबा की मूर्ति की शोभा देखते ही बनती थी। भजनों का गुणगान करने के लिए दिल्ली के सुप्रसिद्ध गायक आशु मुदगुल जी को आमन्त्रित किया गया। उन्होंने अपने निराले अंदाज़ में बाबा के कई मधुर भजन सुनाकर बैंगलोर के भक्तों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

मंदिर में उपस्थित भक्तों ने उनके भजनों का खूब आनन्द लिया और उनकी गायकी की सराहना की। मंदिर में पूरे दिन भंडारे प्रसाद का वितरण किया गया। दूर-दूर से आए सभी भक्तों ने बाबा का आशीर्वाद लिया और स्वादिष्ट लंगर प्रसाद का आनन्द लेकर अपने-अपने घरों को प्रस्थान किया। **-लवीना जर्नादन**

ग्रीन फ्लैट्स राजौरी गार्डन में विशाल साई भजन संध्या

दिल्ली: गुरूपूर्णिमा के उपलक्ष्य में दिनांक 12 जुलाई 2025 को राजौरी गार्डन में ग्रीन MIG फ्लैट्स के सैंट्रल पार्क के पास भक्तिमय साई भजन संध्या का आयोजन किया गया। भजन संध्या का शुभारंभ सांय 7 बजे पूजा अर्चना

कार्यक्रम का आयोजन ग्रीन फ्लैट्स के निवासीयों एवं साई के सेवक अमित पंत, अभिजीत वर्मा, अल्पना भार्गव, हिमांशु गुलाटी, संजय धवन, विष्णु सेठ, सुदक्ष नांगिया, प्रिंस जुनेजा, नवीन वर्मा, अंजु अरोड़ा, मुनीष कपूर, पूजा कपूर, नेहा सिंह, पूजा जौली, गुरजस जौली,

के बाद किया गया। बाबा की महिमा का गुणगान करने के लिए सुप्रसिद्ध भजन गायक धीरज आनंद व देव आनन्द को आमंत्रित किया गया। उन्होंने अपनी मधुर आवाज़ में बाबा की लीलाओं का गुणगान करके सभी भक्तों को साई भक्ति में सराबोर कर दिया। वहां उपस्थित भक्तों ने उनके भजनों का खूब आनन्द लिया। रात 10:30 बजे आरती की गई। उसके बाद सभी भक्तों के लिए भंडारे प्रसाद का आयोजन किया गया। सभी भक्तों ने भंडारा प्रसाद ग्रहण कर प्रस्थान किया।

करन सक्सैना, पूनम, मृनाल भल्ला, रूपम चोपड़ा, अनिल कुमार चौहान (सोनू), रोहित गांधी, शिवानी सेठ व मनीष सेठ द्व ारा अत्यंत सुचारू रूप से किया गया। सभी सदस्यों ने बादशाहपुर के श्रद्धेय अनिल कुमार गुरूजी, नवादा की मीनाक्षी दीदी और गुप्त रूप से सहयोग देने वाले भक्तों का शुक्राना किया। **-कृष्णा पुरी**

आचार्य श्रवण जी महाराज द्वारा श्री शिव महापुराण कथा

दिल्ली: दिनांक 17 जुलाई से 23 जुलाई 2025 तक श्रावण मास के पावन पर्व के उपलक्ष्य में तोमर पैलेस, डी-39, कालू कालोनी, बुध विहार, फेस-2, दिल्ली में महेश सिंह तोमर द्वारा समस्त बुध विहार निवासियों के सहयोग से श्री शिव

महापुराण कथा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रतिदिन दोपहर 3 बजे से सांय 7 बजे तक आचार्य श्रवण जी महाराज ने अपने मुखारबिंद से कथा का वाचन किया। उन्होंने कथा के साथ-साथ कई मधुर भजन भी सुनाए जिससे पूरा माहौल भक्तिमय हो गया। कथा के दौरान आचार्य श्रवण जी महाराज ने कई रोचक और ज्ञानवर्धक किस्से सुनाकर ज्ञान की गंगा बहाई जिससे वहां उपस्थित लोगों को कई जानकारियां मिली। प्रतिदिन बहुत से लोग कथा सुनने आए और उनकी कथा के माध्यम से ज्ञान अर्जित किया। सभी ने आचार्य श्रवण जी महाराज की कथा शैली की अत्यन्त सराहना की। दिनांक 24 जुलाई 2025 को समापन के दिन सुबह 9 बजे हवन किया गया और उसके बाद सभी भक्तों के लिए भंडारे का आयोजन किया गया। **-गायत्री सिंह**

साई मंदिर गुलाबी बाग में गुरूपूर्णिमा पर सिम्पी मेहता द्वारा भजन

दिल्ली: दिनांक 10 जुलाई 2025 को साई मंदिर, गुलाबी बाग में गुरू पूर्णिमा महोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। सुबह से

ही मंदिर में भक्तों का आना जाना लगा रहा। दैनिक पूजा अर्चना के पश्चात् मंदिर के ट्रस्टी एवं श्री कालीचरण महाराज द्व ारा सामूहिक काली माता हवन किया गया। भजनों का गुणगान करने के लिए सुप्रसिद्ध गायिका सिम्पी मेहता को आमंत्रित किया गया। उन्होंने अपने चिरपरिचित अंदाज़ में बाबा की महिमा के अनेक भजन सुनाए। भक्तों ने उनके भजनों का भरपूर आनन्द लिया। आरती के बाद सबने भण्डारा प्रसाद ग्रहण किया। **-जी.आर. नंदा**

अपनी गलतियां स्वीकार करने की हिम्मत और सुधार करने की नीयत हो तो इंसान बहुत कुछ सीख सकता है।

श्री राधा कृष्ण मंदिर सैनी एन्कलेव में गुरू पूर्णिमा महोत्सव

दिल्ली: श्री राधा कृष्ण मंदिर, सैनी एन्कलेव में गुरू पूर्णिमा महोत्सव बड़े हर्षोल्लास से मनाया गया। इस शुभ अवसर पर मंदिर के प्रांगण में भजन संध्या का आयोजन किया गया। मंदिर के पंडित श्री हीरामणी भटट् जी ने विधिपूर्वक पूजा अर्चना की। प्रात: 6:30 बजे बाबा की मंगल आरती और उसके पश्चात् श्री साई बाबा जी को दूध द्वारा मंगल स्नान कराया गया। सांय 6:30 बजे बाबा की धूप आरती एवं नैवेध अर्पण किया गया जिसमें लोगों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया।

सांय 7 बजे भजन गायक श्री अवदेश कुमार शर्मा जी ने अपनी मधुर वाणी से साई भजनों का गुणगान करके पूरे माहौल को भक्तिमय बना दिया। मंदिर प्रांगण में श्री साई बाबा जी की भव्य पालकी भी निकाली गयी। अवदेश जी के भजनों को सुनकर सभी भक्त मस्ती में झूमने पर मज़बूर हो गये। अंत में सभी भक्तों ने स्वादिष्ट भंडारे का आनन्द लिया। श्री अनिल अरोड़ा जी ने बताया कि हर वीरवार प्रात: 6:30 बजे बाबा की काकड़ आरती की जाती है तथा चोला अर्पण किया जाता है तथा सांय 7:30 धूप आरती एवं नैवेध अर्पण और रात्रि 9 बजे शेज आरती की जाती है। सभी भक्तों ने मंदिर की प्रबन्धक कमेटी का आभार प्रकट किया। **-ओम प्रकाश कपूर**

पिछले अंक से आगे...

साई के चरण कमलों में डा. मोतीलाल गुप्ता की जीवनी- साई धाम की यात्रा

डॉ. गुप्ता ने यह निष्कर्ष निकाला कि सिर्फ अच्छी शिक्षा ही गरीबों के सामाजिक-आर्थिक स्तर को स्थाई तौर पर बदलने में सक्षम है। गरीबी की दुर्गति से युवा पीढ़ी को निकालने के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि उन्हें शिक्षित किया जाए। डॉ. गुप्ता इस बात में पूर्णविश्वास रखते हैं कि राष्ट्र के सभी बच्चों को, उनके धर्म, जाति, लिंग या आर्थिक स्तर के भेद भाव के बिना, मुफ्त और गुणवत्ता वाली शिक्षा मिलनी चाहिए। कुशल सरकारी तंत्र के अभाव में देश के गरीब बच्चों को गुणवत्ता वाली शिक्षा मुहैया कराना सभी सक्षम नागरिकों का कर्त्तव्य बन जाता है। गरीबी और अमीरी की खाई कम नहीं हो पा रही है क्योंकि सामान्य अवसर सभी को उपलब्ध नहीं है। एक राष्ट्र विकसित होने का ख़िताब तब ही हासिल कर पाता है जब उसके प्रत्येक नागरिक का जीवन-स्तर सम्मान-जनक हो, सभी को समान अवसर प्राप्त हो तथा सबका आर्थिक-सामाजिक स्तर न्यायसंगत हो।

ऐसा क्यों होता है कि मुझे और आपको सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालयों में दाखिला मिल जाता है जबकि झुग्गियों में रहने वाले हमारे सह-नागरिकों को इन विद्यालयों की जानकारी ही नहीं होती। इस प्रश्न का विश्लेषण हमें बहुत गंभीरता से करना होगा। प्रथमत: यह तो प्रारब्ध ही है जिसके कारण हमारा जन्म एक समृद्ध परिवार में हो। पुरखों की संपत्ति का लाभ आगे की पीढ़ियों को भी मिलता है जिससे उन्हें घर ज़मीन, जायदाद का अभाव नहीं होता। इस तरह के परिवार अपने बच्चों को, उस समय की प्रचलित एवं आधुनिक शिक्षा उपलब्ध कराने में समर्थ होते हैं। इस तरह उनके सामाजिक तथा आर्थिक स्तर में भी बढ़ोत्तरी होती चली जाती है। ये संभव हो सका, उन संसाधनों की वजह से जो उन्हें विरासत में मिली थी। परन्तु हमारे बन्धु नागरिक जो झुग्गियों में रहते हैं तथा ऐसे परिवार में जन्मे हैं जो शिक्षा और संसाधन से वंचित हैं, क्या वे अपने बच्चों को शिक्षा या दो वक्त की रोटी दे सकते हैं? हमारे पूर्वज अपनी अगली पीढ़ी को आधुनिक

शिक्षा, भोजन और वस्त्र दे पा रहे थे परन्तु हमारे गरीब बंधुओं की स्थिति विपरीत थी। उनके पूर्वजों को अपने गांव को छोड़ कर शहरों में आकर बसना पड़ा और झुग्गियों में रहकर रोटी, कपड़ा और झोपड़ी के लिये मशक्कत करनी पड़ी। यह तो स्पष्ट है कि जिस अथाह दयनीय स्थिति में वे जीने के लिये बाध्य हैं वह उनकी इच्छा से नहीं है। स्वतंत्रता के सात दशक बाद भी समृद्धि और वंचित वर्गों के सामाजिक एवं आर्थिक स्तर में इतनी असमानता है कि यह आज के ज़माने में चौंकाने वाली बात है।

दोनों वर्गों के बीच की इस विशाल खाई को कम करने का यह अत्यंत कठिन कार्य का बेड़ा उठाया है डॉ.मोतीलाल गुप्ता ने।

5 अप्रैल 2004 को डॉ. गुप्ता को एक संगठन द्वारा साई धाम में गरीब-वंचित बच्चों के लिये एक अंशकालिक (पार्ट टाइम) स्कूल प्रारंभ करने का सुझाव मिला। उन्होंने स्कूल शुरू करने का निर्णय लिया परन्तु अंशकालिक नहीं, उन्होंने पूर्णकालिक स्कूल, व्यवस्थित तौर पर शुरू करने की ठान ली।

डॉ. गुप्ता में किसी भी परियोजना को त्वरित प्रारंभ करने का हुनर है। पहले योजना बनाई जाती है, उसका विश्लेषण किया जाता है, तत्पश्चात कार्य को प्रारंभ करने में तनिक भी विलम्ब नहीं किया जाता। परियोजनाओं को उनके प्रारंभिक काल में निष्पादित करने की जो विशेषता उनमें है वह देश के भावी प्रबंधकों के लिये प्रेरणा का विषय है। परियोजनाओं को त्वरित प्रारंभ किया जाता है, त्रुटियों की समीक्षा की जाती है, कमियों से निपटने के लिये नियोजन किये जाते हैं ताकि परियोजनाएँ चलती रहें।

एक सप्ताह बाद, 12 अप्रैल 2004 को साई धाम के भवन के दो कमरों में स्कूल प्रारंभ कर दिया गया। कुर्सी, टेबल तथा स्कूल के अन्य ज़रूरत के सामान की शीघ्र व्यवस्था की गई। दो साई-भक्तों ने शिक्षिका बनने का कार्य संभाला। ऐसे हुई शिरडी साई बाबा स्कूल की विनयशील शुरूआत। प्रारंभ में गरीब बच्चों के अभिभावकों को स्कूल भेजने के लिये प्रोत्साहित करना बहुत कठिन था। डॉ. गुप्ता और उनके स्वयं-सेवकों को निरंतर प्रयास करना पड़ा तथा उनके घर जाकर शिक्षा के लाभ को समझाना पड़ा ताकि वे अपने बच्चों को स्कूल भेजने के लिये राज़ी हो पाएँ।

समाज सेवकों को यह ज्ञात रहता है कि जीवन में संघर्ष करते-करते गरीब निराशा से भर जाता है। इस तरह की मदद के प्रति शुरूआत में उसके मन में थोड़ा अविश्वास उत्पन्न हो सकता है। क्या हमें इससे लंबी अवधि तक किसी तरह का फायदा मिल सकता है? क्या मैं अपने बच्चों का समय शिक्षा में व्यय करूँ या मेहनत मजदूरी में लगाऊँ जो मुझे एक वक्त का भोजन देगा? क्या यह वादा मिथ्या है? ये सभी सवाल उसके मन में कौंधते हैं जो उसे बदलाव के पथ पर चलने से हतोत्साहित करते हैं। ये तो समाज सेवकों की जवाबदेही होती है कि वे गरीबों को लंबी अवधि के लिये लाभान्वित होने का आश्वासन दें। इस परोपकार की यात्रा में हमें निरंतर प्रयासरत रहना पड़ता है।

46 विद्यार्थियों के साथ विद्यालय प्रारंभ हुआ। उसी समय मंदिर के ऊपरी बरामदे में गरीब महिलाओं की सिलाई-कढ़ाई के प्रशिक्षण का केन्द्र खोला गया। दोनों परियोजनाओं के लिये अस्थायी व्यवस्था की गई थी। -क्रमश:

-साई की चरण धूलि,
गुरू जी की सेवा में, ***नीति शेखर***

पृष्ठ 1 का शेष

साई धाम में सामूहिक...

जैसे सिलाई मशीन, गैस चूल्हा, बर्तन, कपड़े, बिस्तर, फोल्डिंग बैड इत्यादि दिया गया। सभी दूल्हा-दुल्हनों के परिजनों ने साई धाम के इस आयोजन

की हृदय से प्रशंसा की। इस सामूहिक विवाह में गीता मन्दिर सभा, सेक्टर 15, फरीदाबाद, शैलेंद्र निगम, श्रेया घई, जे.के. शर्मा, ओ.पी. गर्ग, देवेश गुप्ता, गीता रानाडे आदि का मुख्य सहयोग रहा। कार्यक्रम में रोटरी क्लब, लायन्स क्लब, ऑल इण्डिया वोमेनस कॉन्फ्रेंस, गीता मन्दिर सेक्टर 15 से विभिन्न गणमान्य व्यक्तियों के साथ साथ साई धाम एडवाइज़री बोर्ड मेम्बर्स, वृन्दा इंटरनेशनल स्कूल की डायरेक्टर डा. विजय लक्ष्मी शर्मा, श्रीजी इन्टरनेशनल स्कूल की प्रधानाचार्या संध्या तिवारी आदि गणमान्य व्यक्ति सम्मिलित हुए। कार्यक्रम का संचालन आज़ाद शिवम दीक्षित ने सुचारू रूप से किया। प्रधानाचार्या डॉ. बीनू शर्मा ने सभी अतिथियों का धन्यवाद किया एवं नवविवाहित जोड़ों को शुभकामनाएं दी।

-**के.ए. पिल्ले,** फरीदाबाद

साई मंदिर लालगंज बक्सर में गुरू पूर्णिमा महोत्सव

बक्सर: दिनांक 10 जुलाई 2025 को श्री साई मंदिर, लालगंज, बक्सर (बिहार) में हर साल की भांति इस साल भी गुरू पूर्णिमा महोत्सव हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। प्रात: 7 बजे काकड़ आरती की गई उसके बाद साई बाबा का अभिषेक किया गया। इस अवसर पर साई भक्तों द्वारा वृक्षारोपण भी किया गया। मध्यान्ह आरती के बाद दोपहर

2 बजे से साई प्रतिमा सम्मान समारोह का आयोजन हुआ जिसमें इंटर एवं मैट्रिक में प्रथम स्थान पर आये छात्रों को साई प्रतिमा देकर सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त शिक्षकों को भी सम्मानित किया गया। दोपहर 3 बजे सभी भक्तों ने भंडारा प्रसाद ग्रहण किया। समस्त कार्यक्रम का आयोजन श्री साई बाबा संस्थान, लालगंज, बक्सर के सभी सदस्यों द्वारा बखूबी किया गया।

-**बलराम गुप्ता,** बक्सर, बिहार

मां संतोषी साई कृपा धाम कुलेसरा में स्थापना दिवस समारोह

कुलेसरा: दिनांक 4 जुलाई 2025 को मां संतोषी साई कृपा धाम कुलेसरा, ग्रेटर नोयडा, गौतम बुद्ध नगर, यू.पी. में शिरडी साई बाबा व सभी देवी देवताओं का छठवां स्थापना दिवस

बजे बाबा की पालकी शोभायात्रा बैंड-बाजे ढोल आदि के साथ धूमधाम से निकाली गई। उसके बाद 8:30 बजे सभी देवी देवताओं का जागरण आरंभ हुआ। रात भर भजनों का गुणगान चलता रहा और भक्तगण भजनों का आनन्द लेते रहे। प्रात: 6 बजे आरती से जागरण सम्पन्न हुआ। उसके बाद सभी को प्रसाद वितरण किया गया। सभी भक्तों ने प्रसाद लेकर अपने-अपने घरों को प्रस्थान किया।

बाबा के परम भक्त श्री तुलसीराम जी ने वहां आए सभी गणमान्य अतिथियों को बाबा का स्वरूप भेंट करके सम्मानित किया। श्री तुलसीराम जी ने 6 साल पहले इस मंदिर में साई बाबा व अन्य देवी देवताओं की मूर्तियों की स्थापना करवाई। इस मंदिर में अक्सर भक्तों का मेला लगा रहता है और ऐसा मानना है कि यहां आने वाले भक्तों की मनोकामनाऐं पूर्ण होती है।

साईनाथ मंदिर जबलपुर में गुरूपूर्णिमा उत्सव

जबलपुर: दिनांक 10 जुलाई 2025 को गंगा मैया के साई नाथ मंदिर में गुरू पूर्णिमा महोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर प्रात: बाबा का मंगल स्नान किया गया तत्पश्चात् बाबा का अभिषेक किया गया। आरती करने के बाद सभी भक्तों को भंडारा प्रसाद वितरित किया गया। भारी संख्या में भक्तों ने मंदिर में आकर बाबा का आशीर्वाद लिया। -**चन्द्रशेखर दवे**

धूमधाम एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। पूरे मंदिर को फूलों से अति सुन्दर सजाया गया। प्रात: 5:15 बजे काकड़ आरती से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। उसके पश्चात् बाबा का मंगलस्नान किया गया। तत्पश्चात बाबा का अभिषेक किया गया। बाबा की सुन्दर मूरत और फूलों से सजा मंदिर सभी भक्तों को अपनी ओर आकर्षित कर रहे थे। प्रात: 11:30 बजे पूजा अर्चना एवं हवन का आयोजन किया गया। बहुत से भक्तों ने इस पूजा में शामिल होकर सभी देवी देवताओं का आशीर्वाद प्राप्त किया। दोपहर 12 बजे मध्यान्ह आरती के बाद भंडारे प्रसाद का वितरण आरंभ हुआ जो देर रात तक चलता रहा। सांय 5 बजे सभी भक्तों ने मिलकर विशेष साई नाम जाप किया। सांय 7:30

बेशक सच बोल कर किसी का दिल तोड़ दो, लेकिन झूठ बोल कर किसी का भरोसा मत तोड़ो।

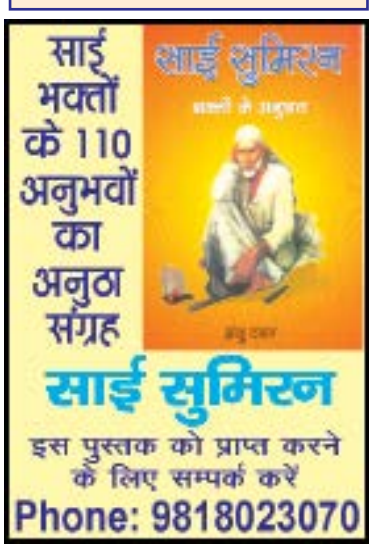

साई धाम हौज़खास में गुरूपूर्णिमा महोत्सव

दिल्ली: हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी साई धाम, हौज़ खास में दिनांक 10 जुलाई 2025 को गुरूपूर्णिमा उत्सव श्रद्धापूर्वक

मनाया गया। इस अवसर मन्दिर को रंगबिरंगे फूलों से अति सुन्दर सजाया गया। सुबह से ही भक्तों की भीड़ मंदिर में लगी रही। इस अवसर पर भजनों का गुणगान करने के लिए भजन गायक रवि राज एंड पार्टी को आमंत्रित किया गया। रवि जी ने अपने भजनों से सभी भक्तों को मंत्रमुग्ध कर दिया। भक्तगण भी श्री बाबा जी के सौम्य एवं दिव्य स्वरूप को निहार खुद को भाग्यशाली समझते हैं।

कार्यक्रम का आयोजन मंदिर के मुख्य ट्रस्टी आदरणीय श्री नरेन्द्र मिश्रा जी के कुशल नेतृत्व में सभी पुजारीयों एवं सेवादारों के सहयोग से बखूबी किया गया।

बाबा जी भी सभी भक्तों को मनोवांछित फल प्रदान कर सदैव ही सबके मनोरथ पूरे करते हैं। **-कौशल पंडित जी**

श्री साई सागर मंदिर इंदौर में गुरुपूर्णिमा पर्व

इंदौर: श्री साई सागर मंदिर, गुलाब बाग कॉलोनी, इंदौर में गुरुपूर्णिमा पर्व बड़े ही हर्षोल्लास से मनाया गया। मंदिर को फूलों से अति सुंदर सजाया गया। कार्यक्रम सुबह काकड़ आरती एवं बाबा के मंगलस्नान से शुरू हुआ। बाबा को पंचामृत से मंगलस्नान करवाया गया। तत्पश्चात् मुख्य पुजारी पंडित कृष्णकांत शर्मा जी एवं पंडित दुबे जी के सान्निध्य में बाबा का अभिषेक व पूजा अर्चना की गई। बाबा की मूर्ति बहुत ही सुन्दर लग रही थी। दोपहर 12 बजे महाआरती धूमधाम से की गई जिसमें बहुत से भक्त शामिल हुए। पूरे दिन मंदिर में भक्तों की चहल पहल रही। शाम को धूप आरती की गई। सभी भक्तों को प्रसाद वितरित किया गया। बाबा की शेज आरती के बाद कार्यक्रम का समापन हुआ। अंत में मंदिर के संस्थापक डॉ. राजेश पी. माहेश्वरी व डॉ. जीवन मोदी ने सबका आभार व्यक्त किया। **-जीवन मोदी**

श्री शिरडी साई बाबा मंदिर भोपाल में गुरूपूर्णिमा महोत्सव

भोपाल: श्री शिरडी साई बाबा मंदिर शिरडीपुरम, कोलार रोड, भोपाल में गुरूपूर्णिमा महोत्सव के अवसर पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। दिनांक 4 जुलाई 2025 को श्री साई सच्चरित्र अखण्ड पाठ का पारायण प्रारंभ हुआ।

दिनांक 10 जुलाई 2025 गुरूवार को गुरूपूर्णिमा के दिन प्रात: श्री साई बाबा का मंगलस्नान एवं अभिषेक किया गया। तत्पश्चात् श्री साई सच्चरित्र के पाठ का समापन किया गया। उसके बाद सभी भक्तों ने आरती की। बहुत से भक्तों ने श्री साई सच्चरित्र पाठ के पारायण में भाग लिया। गुरूपूर्णिमा के अवसर पर श्री सत्यनारायण कथा का आयोजन भी किया गया जिसमें बहुत से भक्त शामिल हुए। उसके श्री साई बाबा की भव्य पालकी यात्रा बैंड-बाजे के साथ निकाली गई। सायंकाल में बाबा की धूप आरती की गई। उसके बाद साई भजन संध्या में भजनों का गुणगान साज़ म्यूज़िक भक्ति संगीत के कलाकारों श्री विजय मालवीय, श्री प्रवेश माण्डले एवं उनके साथीयों द्वारा किया गया। सभी ने उनके भजनों का आनंद लिया। भजनों के बाद सभी भक्तों को महाप्रसाद का वितरण किया गया। कार्यक्रम का आयोजन मंदिर के संस्थापक श्रद्धेय बालमूर्ति श्री हरीश बाबा जी के मार्ग दर्शन में किया गया। **-रमेश बागड़े**

श्री साई सुमिरन टाइम्स की सदस्यता एवं विज्ञापन के लिए सम्पर्क करें- Ph: 9818023070

संगीता ग्रोवर द्वारा द्वारका में साई भजन

दिल्ली: दिनांक 10 जुलाई 2025 को गुरू पूर्णिमा के पावन अवसर पर सैक्टर-2, द्वारका में भजन संध्या का आयोजन किया

गया। भजनों का गुणगान करने के लिए संगीता ग्रोवर जी को आमंत्रित किया गया। उन्होंने अपनी मधुर आवाज़ में साई भजनों का गुणगान करके पूरे माहौल को साईमय बना दिया। वहां पर आए सभी भक्तों ने झूमते हुए साई भजनों का आनन्द लिया। कार्यक्रम का आयोजन श्री पंकज शर्मा व रूबी शर्मा द्वारा किया गया। **-सहाया**

शान्ताबाई के अनुभव

शान्ताबाई कहती है- 'मैं पूर्ण श्रद्धा और विश्वास से भगवान साईनाथ का नाम स्मरण करती हूं। साईनाथ दीन-दुखियों के पालनहार हैं। उन्होंने कभी भी चमत्कार या तंत्र द्वारा लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने की कोशिश नहीं की। दुष्ट और क्रूर भी पारदर्शी दृष्टि रखने वाले अंतर्यामी साईनाथ महाराज की शरण में आकर नम्र एवं पावन हो गए। बाबा ने उनके बुरे विचारों व संस्कारों की कीच को सदा के लिए हटाकर उनके दोष-दुर्गुणों का उपचार किया। समद्रष्टा साई ने द्वारकामाई आने वाले सभी लोगों को समान भाव से प्रेम किया।

बाबा ने सरल व सीधा जीवन व्यतीत किया। उनके पास ज़रीदार रेशमी रज़ाई थी। बाबा ने कई वर्षों तक उसका उपयोग किया, लेकिन जीर्ण-शीर्ण होने पर भी उसे नहीं फेंका। बाबा अपनी ज़रूरत के अनुसार उस रज़ाई को उपयोग में लेते। ऐसा मैंने अनेक अवसरों पर स्वयं अपनी आंखों से देखा। शिरडी के आवारा जानवरों के लिए द्वारकामाई ही ठिकाना था। अक्सर बाबा बकरी के छोटे बच्चे को अपनी गोद में रखकर उसे प्यार करते। मिमियाने पर बाबा स्वयं अपने हाथों से उसे पानी पिलाते। श्वान और बिल्लियां बाबा के श्री-चरणों में स्वयं को सुरक्षित महसूस करते। बाबा का श्वानों के प्रति अधिक लगाव था। वहां एक काली गाय जिस पर सफेद धारियां थीं, उसके बछड़े ने द्वारकामाई को अपना घर ही बना रखा था। बाबा गाय के भोजन का पूरा ध्यान रखते और अपने दिव्य हाथों से उसकी पीठ थपथपाते।

मैंने बाबा की एक अन्य दिव्य लीला देखी। बाबा बिना जली चिलम को फूंक मारते, अचानक चिलम प्रज्वलित हो जाती और उससे निकलने वाला धुआं आकाश छूने लगता।

आज कई वर्षों के बाद शिरडी जाने पर मुझे मेरी बाबा के साथ प्रथम भेंट का पूरा स्मरण है। मैं बाबा को धन्यवाद देती हूं। वे मुझे गुरूदेव रूप में मिले। मुझे जीते-जी मरने की कला आ गई। बैकुंठ सहज प्राप्त हो गया। गुरू मेरा प्राण है, गुरू ही मेरा आधार है। वे केवल सामान्य मानव ही नहीं, आध्यात्मिक जगत के आश्रय हैं, जीवों की परम-गति हैं, देवमानव, नारायण हैं। **-डॉ. रबिन्द्र नाथ ककरिया**

आभार: करूणासागर साई

आज की भाग-दौड़ भरी ज़िन्दगी, तनावपूर्ण वातावरण, भौतिकता की अंधी दौड़ और अर्थशास्त्र की चकाचौंध में बाबा की कथाएं हमें सहारा, आश्रय और शान्ति प्रदान कर हमारा मार्ग दर्शन करती हैं। बाबा हर कदम पर, पल-पल हमारे साथ हैं, उन्हें हमारी हर गतिविधि का पूर्ण ज्ञान है।

साई धाम उप्पल साऊथएंड में गुरूपूर्णिमा के अवसर पर कीर्तन एंव भंडारा

गुरूग्राम: दिनांक 10 जुलाई 2025 को साई धाम, उप्पल साऊथएंड, सोहना रोड, गुरूग्राम में गुरूपूर्णिमा महोत्सव श्रद्धापूर्वक मनाया गया। इस पावन अवसर पर

सर्वप्रथम काकड़ आरती के पश्चात् बाबा को मंगल स्नान करवाया गया। तत्पश्चात् बाबा का अभिषेक किया गया। प्रात: 8 बजे से विधिवत् हवन यज्ञ किया गया। उसके बाद महिला भक्तों ने भजन कीर्तन किया जिसका सभी उपस्थित भक्तों ने आनंद लिया। दोपहर 12 बजे मध्यान्ह आरती की गई। तत्पश्चात् भंडारा प्रसाद वितरण आरंभ हुआ जो 3 बजे तक चलता रहा। जिसमें हज़ारों भक्तों ने भंडारा ग्रहण करके बाबा का आशीर्वाद लिया। कार्यक्रम का आयोजन मंदिर समिति के सदस्यों द्वारा श्री नरेन्द्र मिश्रा जी के मार्गदर्शन में किया गया। **-भीम आनंद**

साई धाम ज़ीरा में गुरू पूर्णिमा

दिल्ली: दिनांक 10 जुलाई 2025 को साई धाम, मल्लोके रोड, ज़ीरा, ज़िला फिरोज़पुर, पंजाब में गुरू पूर्णिमा उत्सव धूमधाम से मनाया गया। सर्वप्रथम प्रात: साई बाबा को मंगलस्नान करवाने के बाद सुंदर चोला पहनाया गया और बाबा को लड्डूओं का भोग लगाया गया। उसके बाद साई महिला परिवार की सदस्यों और साई दीदी शरणजीत कौर जी द्वारा कीर्तन किया गया। साई महिला परिवार के सभी सदस्यों- सुमन सदियोड़ा, रेणु धुना, मधु शर्मा, किरण चोपड़ा, किरण जुनेजा, रूपम जुनेजा, सिंपल अरोड़ा, सोनिया अरोड़ा, वंदना बांसल और सोनिया कोछड़ ने साई बाबा जी का गुणगान किया। सभी ने बहुत ही सुंदर भजन सुनाये। उनके भजनों पर सारी संगत भजनों का आनन्द ले रही थी और बहुत ही प्रसन्नता से नाच रही थी। सारा माहौल साईमय हो गया था। सभी भक्त

अपनी श्रद्धा के अनुसार साई जी को भेंट करने के लिए तरह-तरह के प्रसाद लेकर आये। कीर्तन के बाद लड्डू और आम का प्रसाद दिया गया। लंगर का भी आयोजन किया गया था। गुरू पूर्णिमा पर साई बाबा की सूरत पर इतना नूर था कि ऐसा लगता था कि उनकी तरफ बस देखते ही रहें। साई महिला परिवार ने सभी का स्वागत किया और रेणु धुना की तरफ से सभी को धन्यवाद किया गया।

-रेणु धुना, ज़ीरा

साई ध्यान मंदिर पानीपत में गुरुपूर्णिमा महोत्सव

पानीपत: पानीपत के साई ध्यान मंदिर में गुरु पूर्णिमा उत्सव बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर मंदिर में भजनों का गुणगान किया गया। जिसमें दूर-दूर से आये भक्तों ने भजनों का आनन्द लिया और बाबा का आशीर्वाद प्राप्त किया। इस कार्यक्रम में कई बच्चों ने भी मधुर भजनों का गुणगान किया,

जिसकी सभी भक्तों ने सराहना की। बाबा की पालकी भी निकली गई जिसमें बहुत से भक्त शामिल हुए। मंदिर समिति की तरफ से सभी भक्तों को गुरु पूर्णिमा के उत्सव पर तुलसी का पौधा उपहार स्वरूप दिया गया। राजकुमार डाबर जी ने कहा कि हम सबका कर्त्तव्य है कि हम अधिक से अधिक पौधे लगाकर अपने पर्यावरण को स्वच्छ व सुरक्षित रखें।

आरती के बाद सभी भक्तों को मंदिर प्रांगण में लंगर प्रसाद वितरित किया गया। बाबा के सेवादार महेश आनंद जी को कमेटी ने सम्मानित किया। मंदिर के प्रधान राजकुमार डाबर जी ने अपने विचार भक्तों के सामने रखें। **-डा. पंकज कुमार**

साई धाम हंबड़ा रोड लुधियाना में गुरूपूर्णिमा महोत्सव

लुधियाना: दिनांक 10 जुलाई 2025 को गुरूपूर्णिमा के पावन अवसर पर साई धाम, साई नगर, हंबड़ा रोड, लुधियाना में गुरूपूर्णिमा उत्सव धूमधाम से मनाया गया। प्रात: काकड़ आरती, मंगल स्नान के बाद बाबा का अभिषेक एवं सुन्दर श्रृंगार किया गया। दिन भर मंदिर में भक्तों का आना-जाना लगा रहा। दोपहर 12 बजे की आरती के बाद भक्तों

के लिए विशाल भंडारे का आयोजन किया गया। हज़ारों भक्तों ने स्वादिष्ट भंडारा प्रसाद ग्रहण किया। शाम 4 बजे से विशाल साई भजन संध्या का आयोजन किया गया जिसमें जाने-माने गायक श्री मनदीप मनी जी ने बाबा की महिमा का गुणगान अपने भजनों के माध्यम से किया। उनके मधुर भजन सुनकर सभी भक्त भावविभोर हो गये और मंदिर का पूरा माहौल साईमय हो गया। हज़ारों भक्तों ने इस कार्यक्रम में शामिल होकर अपने सद्गुरू श्री साई बाबा का आशीर्वाद प्राप्त किया। कार्यक्रम का आयोजन मंदिर समिति के सभी सदस्यों द्वारा किया गया।

-संजीव अरोड़ा, लुधियाना

सबका मालिक एक

साई एक शक्ति है, और क्या क्या कहूं मैं अपने साई जी के लिए। बाबा को आप जिस रूप, रंग, ढंग से अपना मानिए, बाबा आपके हो जाते हैं। बाबा को भाते नहीं हीरे मोती, साई मेरे फकीरी में हैं, एक प्यार अपने मन की ज्योति। बाबा ने अपने बच्चों को सदा प्रपंचों से दूर रखा और अपनेपन का ज्ञान दिया। सबका मालिक एक कह कर विश्व को एकता का संदेश दिया। साई ने अपने भक्तों से सिर्फ श्रद्धा और सबूरी चाही है। जो भी साई को समर्पित हुआ उसे साई ने सब्र शांति व आत्मज्ञान दिया। साई को मानते हुए हम भक्तों को बाबा की कथनी को मान कर साई वचनों से चरितार्थ करना है। यही साई की सबसे बड़ी और सच्ची भक्ति है। सबका मालिक एक। ओम साई राम। **-संगीता ग्रोवर**

सतीघट बक्सर में गुरूपूर्णिमा पर साई पालकी भ्रमण का आयोजन

बक्सर: दिनांक 10 जुलाई 2025 को साई श्रद्धा संस्थान, सतीघाट, बक्सर में गुरू पूर्णिमा उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर सायंकाल 5:30 बजे बाबा की पालकी शोभा यात्रा निकाली गयी। साई भक्तों द्वारा भव्य पालकी भ्रमण का आयोजन किया गया। साई पालकी श्री चरण मंदिर से

पुराना चौक ठढेरी बाज़ार होते हुए साई श्रद्धा संस्थान, सतीघाट तक निकाली गयी। जहां-जहां से पालकी गुज़री वहां समस्त वातावरण साईमय हो गया था। रास्ते भर सभी साई भक्त पूरे हर्षोल्लास के साथ साई भजन गाते हुए एवं वाद्य यंत्र बजाते हुए शोभा यात्रा के साथ चले। बहुत से भक्तों ने साई पालकी में बढ़-चढ़ कर भाग लिया।

-बलराम गुप्ता, बक्सर

पूर्णियां बिहार में साई बाबा की तीन दिवसीय स्थापना पूजा सम्पन्न

दुमका: ग्राम नाथपुर, पोस्ट भौवा डयोढ़ी, थाना रूपौली, ज़िला पूर्णिया बिहार में साई बाबा की तीन दिवसीय स्थापना पूजा सम्पन्न हुई। दिनांक 8 जुलाई 2025 को सुबह 7 बजे नज़दीक के हाई लेवल गंगा घाट से 21 सदस्यीय साई भक्तों के टोली द्वारा बाबा के लिए गंगा जल लाया गया, फिर शाम को लगभग सैकड़ों साई भक्तों के साथ सामूहिक रुप से बाबा के स्वरुप को रथ पर बैठा कर, ढोल बाजे के साथ आस पास के गांव में घर-घर जाकर

भिक्षाटन किया। सभी लोगों ने अपने-अपने दरवाज़े पर बाबा की आरती उतार कर भव्य स्वागत किया और स्वेच्छा से यथा संभव दक्षिणा के साथ-साथ एक-एक मुठ्ठी चावल दिया। उसके बाद सबसे खास दक्षिणा दो घरों से दो-दो मुट्ठी मकई का दाना मिला, जिसका भोग बनाकर बाबा को नैवेध अर्पित किया गया। लगभग 100 किलो चावल एवं 27 हज़ार रुपए नगद मिला।

दूसरे दिन दिनांक 9 जुलाई को प्रात: 8 बजे 201 कन्याओं ने पारम्परिक परिधान में 201 कलश लेकर लगभग 8 किलोमीटर तक आसपास के गांवों में ढोल बाजे के साथ बाबा का जयकारा लगाते हुए भ्रमण किया जिसमें सैकड़ों साई भक्त शामिल हुए। तत्पश्चात द्मका, झारखंड के साई मंदिर के पंडित श्री प्रभाकर मिश्रा एवं विभाकर मिश्रा के द्वारा स्थापना पूजा प्रारंभ हुई। शाम के 4 बजे बाबाजी की भव्य पालकी यात्रा ग्राम भ्रमण के लिए निकाली गई।

दिनांक 10 जुलाई 2025 दिन गुरुवार को गुरु पूणिमा के दिन स्थापना पूजा पूर्ण होने के बाद बाबा के पट भक्तों के दर्शन के लिए खोल दिये गये। सबसे खास बात प्रथम दर्शन करने से ऐसा लगा बाबा मंद मंद नहीं दिल खोलकर हंस रहे हैं। मानों हम भक्तों से अधिक हमारे बाबा खुश नज़र आ रहे थे। इस आध्यात्मिक अनुष्ठान को यादगार बनाने में भागलपुर बिहार के प्रसिद्ध भजन गायक मनीष मानस ने अपने मधुर भजनों से एवं कोलकाता के प्रसिद्ध सचिन नाटक कला के सभी सदस्यों ने बाबा की जीवंत झांकी प्रस्तुत कर सभी दर्शकों का दिल जीत लिया। इस तीन दिवसीय स्थापना पूजा को सफलता पूर्वक संपन्न करने में सभी ग्रामवासियों के साथ साथ परम साई भक्त श्री अजीत मिश्रा जी तन मन धन से तत्पर थे। नाथपुर के समस्त ग्रामीणों का एवं अजीत मिश्रा जी का बाबा के प्रति जो समर्पण था वह अत्यन्त सराहनीय है, उसको मेरा प्रणाम। ऊं साई राम। **-अरूण कुमार,** दुमका

सैनी एन्क्लेव में श्री सुन्दरकांड पाठ

दिल्ली: दिनांक 13 जुलाई 2025 को श्री राधा कृष्ण मंदिर, सैनी एन्कलेव में सैनी परिवार द्वारा श्री सुन्दरकांड पाठ का आयोजन किया गया। मंदिर के पंडित आदरणीय श्री

हीरामणि भट्ट जी ने विधिपूर्वक भगवान हनुमान जी की पूजा अर्चना करवायी। उसके पश्चात् सांय 6 बजे श्री अवदेश कुमार शर्मा जी एवं उनके साथियों द्वारा श्री सुन्दरकांड जी का संगीतमय पाठ किया गया।

श्री सुन्दरकांड पाठ के पश्चात् भजन मण्डली के कलाकारों ने श्री हनुमान चालीसा एवं भजनों का गुणगान किया। श्री अवदेश शर्मा जी ने भगवान श्री राम, श्री हनुमान जी के भजनों का गुणगान करके माहौल को भक्तिमय बना दिया। श्री सुन्दरकांड पाठ में बहुत से भक्तों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। सभी भक्तों ने रात्रि 8:30 बजे स्वादिष्ट भंडारे का आनन्द लिया।

श्री नरेश सैनी जी ने विदित कराया कि मंदिर में महीने के दूसरे रविवार को श्री सुन्दरकांड का पाठ किया जाता है तथा 13 जुलाई 2025 को 18वां पाठ किया गया। इसके अतिरिक्त हर मंगलवार को रात्रि 8 बजे श्री हनुमान चालीस का पाठ एवं हनुमान जी की आरती की जाती है और प्रसाद वितरण किया जाता है। **-ओम प्रकाश कपूर**

श्री साईबाबा मंदिर सरदारनगर अहमदाबाद में श्री गुरुपूर्णिमा उत्सव

अहमदाबाद: दिनांक 10 जुलाई 2025 गुरुवार के दिन श्री साईबाबा मंदिर, सरदारनगर, अहमदाबाद में श्री गुरुपूर्णिमा उत्सव, सदगुरु श्री साईबाबा जी की असीम कृपा और आशीर्वाद से हर्षोल्लास से मनाया गया। सुबह 5 बजे से शाम 8 बजे तक श्री साई सच्चरित्र का अखंड पारायण पाठ किया गया। सुबह 5 बजे सदगुरु श्री साईबाबा जी का विशेष महाभिषेक किया गया। इस दिन सुबह 6 बजे से रात 10 बजे तक मंदिर में दर्शनार्थियों को बाबा का विशेष प्रसाद का वितरण किया गया। सुबह 9 बजे से सुबह 11 बजे तक श्री सत्यनारायण कथा, श्री साईबाबा जी की चरण पादुका का पूजन, और ध्वज पूजन किया गया। सुबह 10 बजे से दोपहर 1 बजे तक नारायण सेवा भंडारा प्रसाद का वितरण किया गया। शाम 6:30 बजे से रात 10 बजे तक मंदिर की साई भक्त भजन मंडली द्वारा साई भजनों का गुणगान चलता रहा। शाम 8 बजे श्री साई सच्चरित्र अखंड पारायण की आरती करके पूर्णाहुति की गई। साई वार गुरुवार एवं श्री गुरुपूर्णिमा उत्सव इन दोनों दिनों के साथ में संयोग होने की वजह से अच्छी संख्या में साई भक्तों ने, स्थानीय वासियों ने, श्रद्धालुओं ने, एवं दर्शनार्थियों ने सुबह 4:30 बजे से रात 12 बजे तक श्री साईबाबा जी के दर्शन एवं सेवाओं का लाभ लिया। **-परेश पटेल**

Guru Purnima Celebrated In Shirdi

Shirdi: Guru Purnima is a day to pay homage to our Guru, the enlightened souls

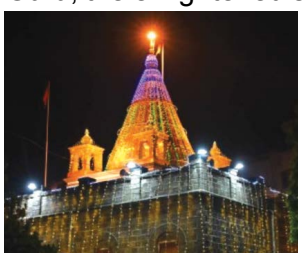

who dispel darkness and lead us towards wisdom and spiritual awakening.

Guru Purnima festival was celebrated in Shirdi on 9th, 10th & 11th July 2025 with great fervour and devotion and Shirdi became the centre of spiritual activities.The temple and its premises were decorated beautifully with flowers and attractive lights. The air was filled with the melodious chants of bhajans and kirtans by various artists on all 3 days. Various processions and cultural programs were organised during 3 days of Gurupurnima celebration.

On 1st day of celebration, a procession of Sai Baba's image, pothi and veena was taken out. On the main day, a rare collection of photo exhibition was organised which was realized through the concept and efforts of Shri Jignesh C. Rajput, a Sai devotee from Surat. This exhibition showcased the contemporary devotees of Shri Saibaba, as well as the changes that have taken place in Shri Sai Baba Sansthan over a period of time. There were about 2,000 photographs on display in this photo exhibition. Famous Singer Smt. Anuradha Poudwal recited soulful bhajans in the evening at Samadhi Shatabdi Mandap. A grand procession with the idol of Sai Baba was carried through the various parts of Shirdi in a beautifully decorated palanquin. Devotees sang and danced to the tunes of traditional music, creating an atmosphere of devotion, joy and reverence. Samadhi Temple & Dwarkamai remained open for darshan throughout the night. Sai devotees from various parts of the country came to Shirdi with palanquins.

On 3rd day, after the kirtan, the Dahihandi was broken by Shri Pareshwar Babasaheb Kote, a descendant of Shri Saibaba's contemporary devotee Tatya Patil Kote, inside Samadhi Mandir.

The governing body of the Sai Baba Temple, made extensive arrangements to accommodate lacs of devotees.

In order to make this festival a grand success, all the administrative officers, department heads and all the employees worked hard under the able guidance of Sansthan Chairman and Chief District and Sessions Judge Smt. Anju Shende (Sonatakke), Committee Member and District Collector Dr. Pankaj Asia, Chief Executive Officer Shri Goraksh Gadilkar and Deputy Chief Executive Officer Shri Bhimraj Darade, with the help of Sansthan Administrative officer Shri Sandeep Kumar Bhosale, temple head Shri Vishnu Thorat, PRO Shri Deepak Lokhande, temple priests, Smt. Mangala Varade, Chief Accounts Officer & Smt. Pragya Mahandule, Administrative Officer.

Don't get upset with people and situations, because both are powerless without your reaction.

Greatest Apostle of Shri Sai Baba -Pujyashri Narasimha Swamiji

Pujyashri Narasimha Swamiji devoted 20 years of His life to spread the glory of Shri Sai Baba all over India. August was a very significant month in **Pujyashri Narasimha Swamiji's** life.

On **August 21, 1874**- On Shravan Panchami at dusk around 6:15 p.m. He was **born.**

In **August, 1929** with the blessings of Sri Ramana Maharishi he **left the Ramanshram.**

In **August, 1929 (end)** He went to Hubli to go over to the **ashram of Siddharuda Swamiji.**

In **August, 1936-** the book **'The sage of Sakori'** Upasani Baba's life and teachings was published.

In **August, 1936 (end)-** Narasimha Swamiji **left Upasani Baba's Ashram.**

On **August 29, 1936,** Sravan Poornima Day (Rakhi Poornima), at 11 a.m. he had his **first encounter (darshan of Samadhi Mandir) with Shirdi Sai Baba,** yes, the most remarkable day in His spiritual life. He attained Self-Realization.

In **August, 2004-** at Vasanthapura (Bangalore) temple, **Swamiji's marble Pratima was installed. -Sai Asha,** U.S.

Akhand Parayan of Sai Mahima

On 20th July 2025, 6 hours akhand parayan of Shri Sai Mahima was organised at Sri Narayan Baba Ashram, Panvel, Mumbai. Many devotees took part in this parayan and got the blessings of Baba.

Sri Sai Mahima is a sacred and powerful prayer, regularly recited by Sai Baba devotees across the world. This divine Sai Vaani holds a special place in the hearts of countless devotees and is played daily at numerous temples in India and abroad, especially in the United States, Lagos, Cotonou Benin West Africa, Canada & Dubai.

Sri Sai Mahima - an extempore revelation of infinite glories of Sri Shirdi Sai Baba was effortlessly narrated by our Sadhguru Sri Sai Narayan Baba on the most auspicious Mahashivratri of 1969.

At Panvel Ashram, every month Akhand Sai Mahima Paath is conducted for 6 continuous hours, offering devotees a chance to immerse themselves in Sai's divine grace. Every year in February, a 24-hour Akhand Sri Sai Mahima Chanting is held with deep devotion & spiritual fervor.

We revere Sri Sai Mahima as the divine Vaani of Sai Himself - a guiding light and a spiritual life-line for Sai Bhaktas around the globe.

Let the divine vibrations of Sri Sai Mahima bless all beings with peace, love, and spiritual upliftment.

-Bhishm Vachhani, Dubai

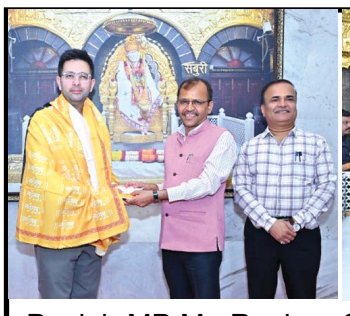

Punjab MP Mr. Raghav Chadha visited Shirdi on 20th July 2025 and had darshan of Shri Sai Baba. After darshan, Chief Executive Officer Shri Goraksh Gadilkar felicitated him. Deputy Chief Executive Officer Shri Bhimraj Darade & Public Relation Officer Shri Deepak Lokhande were also present there.

Shradha Saburi
Hotel Sai Nityanand
One Minute Walking Distance from Dwarkamai
For Room Booking Contact:
Monu Agrawal
Ph: 8171521277, 9373447866
web: www.feelsure.in
Near Dwarkamai Temple, Back Side of Khule Natyagruh, Shirdi

Hotel J.K. Palace

Nagar-Manmad Highway, Near Bhakta Niwas, Shirdi
Ph.(02423) 255155
7218181876, 9511111009
Visit us: www.hoteljkpalace.com
Email: jkpalaceshirdi@yahoo.com

साई आशीर्वाद ग्रुप
साई भजन संध्या, माता की चौकी व सुन्दरकाण्ड पाठ के लिए सम्पर्क करें
साई की मीरा मीनू सचदेवा

Ph. 9335087459, 8887847946

श्रद्धा सबूरी
साई की रसोई
शिरडी से जाने वाले भक्तों के लिए घर का बना शुद्ध व स्वादिष्ट भोजन पैक कराने के लिए सम्पर्क करें
रश्मि वाही
Ph 8587058762

BUNTY
Furniture & Interior
Deals in : All Kinds of Wooden Furniture

Bunty Ahuja
Shop No. A-8, W.H.S. Timber Market
Kirti Nagar, New Delhi-110015
Ph. 8650398971

Guru Poornima Celebrations at Sri Sai Spiritual Centre Bangaluru

A Divine Offering of Fruits, Vegetables & Flowers

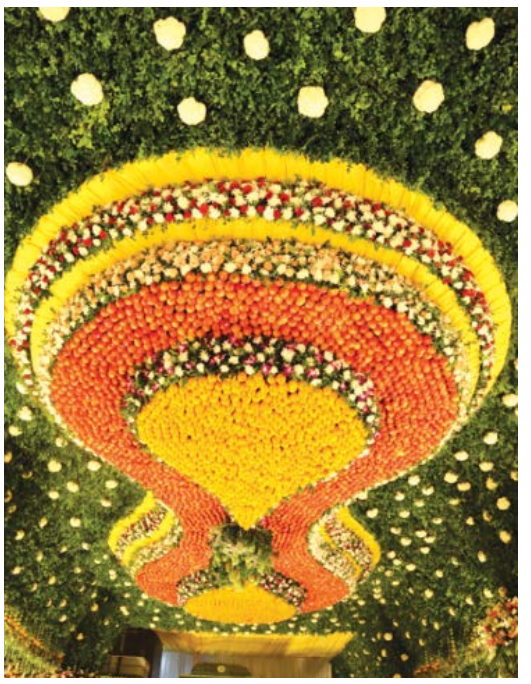

Bangaluru: The sacred occasion of Guru Poornima was celebrated with deep devotion and grandeur at Sri Sai Spiritual Centre, Thyagaraja nagar, drawing 80-90 thousand devotees approximately into an atmosphere surcharged with spiritual energy and reverence. This year's celebrations were uniquely marked by an extraordinary decoration of the Mandir using fresh fruits, vegetables, and vibrant flowers, creating a breathtaking offering of nature's bounty at the feet of the Guru and Sai Baba.

From the moment one entered the temple premises, the eye was met with a divine blend of colors and textures, strings of mangoes and tender coconuts, garlands of rare exotic flowers, towers of bananas and pumpkins, all artistically intertwined with fragrant flowers like jasmine, marigold, and roses. The sanctum sanctorum, especially around the life-size idol of Sri Sai Baba and Swamiji was a backdrop of colourful capsicum which was adorned with layers of symbolizing both abundance and gratitude. It was not just decoration, but a seva, a heartfelt offering from devotees, expressing their devotion through the elements of nature.

The day began with Vyasa Pooja where Lord Krishna is consecrated along with Vedavyasa, Dakshinamurthy, Sanakadika, Adi Shankaracharya, Sri Sai Baba, H.H. Narasimha Swamiji and H.H. Radhakrishna Swamiji. As the sun set, the mandir was bathed in gentle lighting, enhancing the beauty of the fruit-and-flower adorned sanctum, leaving devotees spellbound in divine bliss.

The decorations were not just a visual delight but carried deep symbolic significance, highlighting the philosophy of surrendering the fruits of one's labor to the Guru, and offering the purest of gifts that Mother Earth provides.

This Guru Poornima was a true celebration of devotion, creativity, and collective service. The efforts of volunteers, the artistic vision of the decoration team, and the loving participation of the devotee community made it a memorable and spiritually uplifting event at Sri Sai Spiritual Centre, Bangaluru.

-Venket, Bangaluru

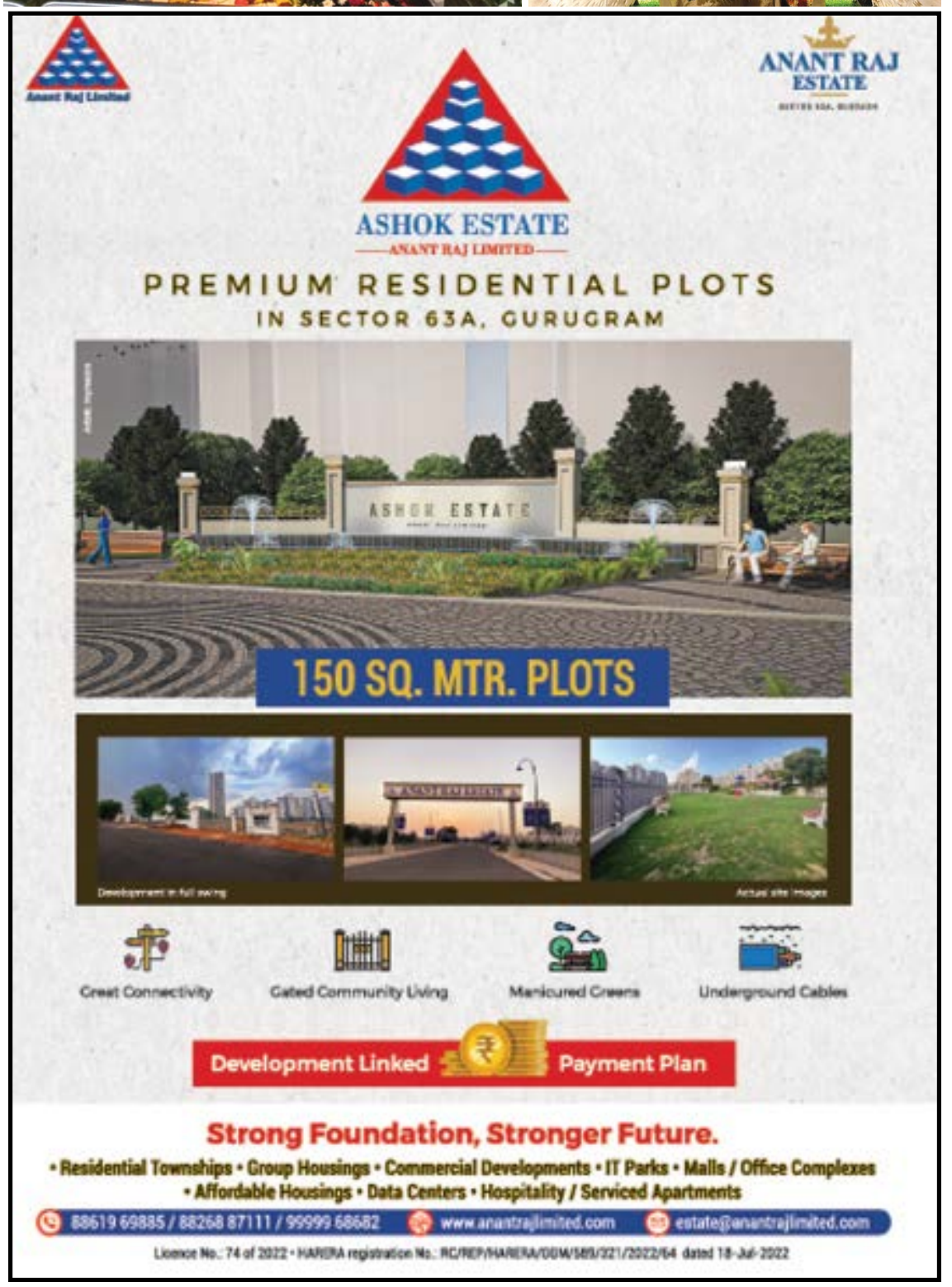

Hail Sai Sadguru Maharaj

By Tish Malhotra

On the auspicious occasion of Guru Purnima celebration on 10 July, the devotees' heartfelt calling of "Hail Sai Sadguru Maharaj" echoed all over the world. The mind and heart of each devotee of Sadguru Sainath Maharaj poured out fervently with the divine prayer: "The Guru is no other than Brhama, the Creator. The Guru is no other than Vishnu, the preserver. The Guru is no other than the great God Siva, the destroyer. The Guru is verily Brahman Itself. To the divine Guru I bow. "I bow to the divine Guru, who by the application of the collyrium of knowledge, opens the eyes of the one blinded by the disease of ignorance.

"I bow to the divine Guru, who reveals to one the divine Being that encircles and permeates the moving and the non-moving.

"I bow to the divine Guru by whom is revealed the divine Being, the intelligence absolute, that permeates all the worlds with all their objects, moving and non-moving.

"I bow to the divine Guru who imparts to the discipline the fire of self-knowledge, and burns away his bonds of Karma accumulated through many births.

"I bow to the true divine Guru. He, my Lord, is the Lord of the universe. He, my Guru, is the Guru of the universe. He, my Self, is the Self of the universe.

"I bow to the divine Guru, the Brahman, eternal, ever awake and of the nature of intelligence and bliss."

On this important occasion it also became essential to study sincerely the sacred teachings contained in Shri Sai Satcharitra that proclaims: "Guru Shri Sainath is an Incarnation of Shri Dattatreya, Who is our sole refuge and Who will make us realise that Brahman is the reality and the world an illusion." The Holy Book states that when Sadguru is sure to carry us safely and easily beyond the worldly ocean. Wonderful is the power of the touch of Guru's hand. The subtle body (consisting of thoughts and desires) which cannot be burnt by the gross fire, is destroyed by the mere touch of the Guru's hand.

It further underlines: "If any one prostrates before Sai and surrenders his heart and soul to Him, then all chief objects of life, viz. Dharma (righteousness), Artha (wealth), Karma (desire) and Moksha (deliverance) are attained easily and unsolicitedly. Four paths, viz. Karma, Dhyana, Yoga and Bhakthi lead us separately to God. Of these, the path of Bhakti is thorny and full of pits and dutches. This, it is difficult to traverse. But if you relying on your Sadguru avoid the pits and thorns and walk straight, it will take you to your destination (God) so says Sai Baba."

The Holy Book particularly points out: "Though Sai Baba acted outwardly like an ordinary man, His action showed extraordinary wisdom and skill. Whatever He did, was done for the good of His devotees. He never prescribed any Asan, regulation of breathing or any rites to His Bhaktas, nor did He blow any Mantra into their ears. He told them to leave off all cleverness, and always remember "Sai" "Sai". If you did that, He said, all your shackles would be removed and you would be free.

"Oh, blessed Sadguru Sai, we bow to You, Who has given happiness to the whole world, accomplished the welfare of the devotees and have removed the affliction of those, who have resorted to Your feet. Blessed is Shri Samarth, Who gives instructions, in both temporal and spiritual matters, to His devotees and makes them happy by enabling them to achieve the goal of their life.

"The light of Guru's grace removes the fear of mundane existence, opens the path of salvation and turns our misery into happiness. If we always remember the feet of the Sadguru, our troubles come to an end, death loses its sting, and the misery of this mundane existence is obliterated. Therefore, those who care for their welfare, should carefully listen to the stories of Sai Samarth, which will purify their minds."

The Holy Book teaches to "prostrate ourselves before and refuge in that Sai Samarth Who besets all animate and inanimate things in the universe - Who pervades all creatures equally without any differentiation, to Whom all devotees are alike. If we remember Him and surrender to Him, He fulfills all our wishes and makes us attain the goal of life.

"This ocean of mundane existence is very hard to cross. Waves of attachments beat high against the bank of bad thoughts and break down trees of fortitude. The breeze of egoism blows with force and makes the ocean rough and agitated. Crocodiles in the form of anger and hatred move there fearlessly. Eddies in the form of the idea 'I and Mine' and other doubts whirl there incessantly, and innumerable fishes in the form of censure, hate and jealousy play there. Though this ocean is so fierce and terrible, Sadguru Sai is its Agasti (Destroyer) and the devotees of Sai have the fear of it. Our Sadguru is the boat, which will safely take us across this ocean."

So here is this Guru Purnima message, emanating from Sri Sai Satcharitra, for all of us. On our part, we need to meditate on it again and again. Bowing down to Sai Sadguru Maharaj we are expected to learn the necessary lesson and act accordingly for our well-being, both mundane and spiritual. Om Sai Ram!

Shri Sai Sumiran Times

Brings you news of Sai Baba from all over the world, devotees' experiences and Baba's miracles etc.

For Subscription & Advertisement

Contact:

Anju Tandon

Mob: 9818023070, 9212395615

email:

saisumirantimes@gmail.com

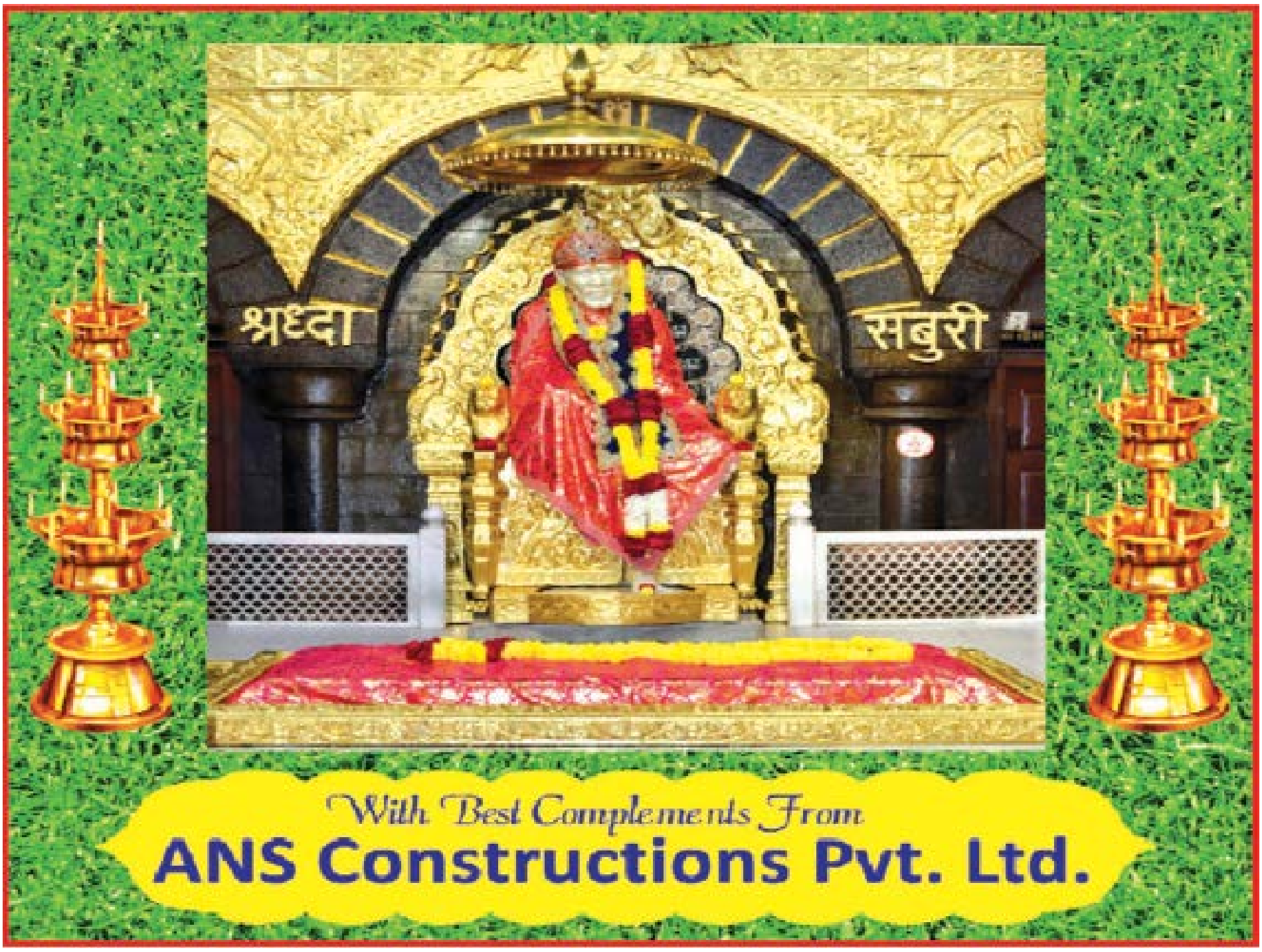

Sai Baba A Living Wonder

Sai Global Mahaparayan Devotee Gowri Oberoi from India says: On the sacred day of Guru Purnima on July 3rd, 2023, Baba suddenly called me to His holy feet in Shirdi. I travelled alone from Delhi, but my heart was full with longing love, and surrender to my Sai. What unfolded was nothing short of divine grace! Three unforgettable Leelas that felt like Baba walking beside me at every step.

Leela 1: Baba Quenched My Thirst:

As I boarded the afternoon flight from Delhi to Shirdi, I was parched with thirst. I looked around and thought, "It's okay, Sai… I will wait with Saburi until they serve water after takeoff." Even before that thought could settle, a flight attendant walked up to me, ignoring all the boarding rush and handed me a bottle of water with a kind smile. "Ma'am, here's some water for you". Why only me? Why at that moment? It was Baba Himself! My Mother who couldn't bear to see His child thirsty. Who else but Sai would break through the bustle of the world to respond to a whisper in the heart?

Leela 2: Baba Accepted My Offering and Returned Love:

After Dhoop Aarti darshan that evening, I offered two packets of sweets to Baba. The priest lovingly touched them to Sai Baba's Samadhi and returned

them to me. As I stepped outside and walked toward the stairs, a Sansthan staff member appeared from nowhere and handed me two pieces of Adirasam which is my most favourite sweet! Baba had accepted my sweets and returned them multiplied with love in the exact form that I cherish most. What a tender, playful way to say, "I accept your devotion, My child."

Leela 3: Baba Gave Me The Chance To Light His Flame:

I went into Lendi Baug, where I saw devotees lighting lamps on a special pillar. I asked the boy named Prasad, accompanying me, how I could light one too. He said, "You will need to bring oil and a wick from outside." I nodded and said, "We will get it tomorrow," but I felt that I should at least go and touch the pillar that Baba had blessed. As I placed my hand on it in silent prayer, an old man's voice rang out behind me: "Beti, ye lo!" ("Daughter, take this!") He held out a wick and a small bottle of oil. "Diya jalao tum!" ("You light the lamp.").

My heart trembled. Tears filled my eyes. I lit the diya as guided gently by this elder person. At that moment, I knew that this was Baba. He had come in form, just as I had prayed for. He gave me not just His Darshan, but His light and asked me to light the lamp at His sacred garden. He let me serve Him in the most beautiful way.

In these tender moments, Baba whispered to my soul: "I am with you in the thirst, in the sweet, in the flame. In your offering, in your waiting, in your name. You took one step and I crossed the skies. To quench your thirst, to answer your cries. Daughter, when your heart calls out in true surrender, I come not just as silence, but as a living wonder."

My Shirdi trip on Guru Purnima became a sacred love letter from Sai Himself. He held my hand, fed my soul and lit my path.

Thank You Baba, for choosing me to witness Your leelas. May I always live in Your remembrance. Om Sai Nathaya Namah. Jai Sai Ram. **-Gowri Oberoi**

Neelu Jaggi Honored In Shirdi

Shirdi: Mrs. Neelu Jaggi was felicitated by Chief Executive Officer of Shirdi Sai Baba Sansthan Shri Goraksh Gadilkar, during her visit to Shirdi on Guru Purnima. Mrs. Neelu Jaggi is the Founder of Shirdi Sai Baba Temple (Samadhi Mandir) built in Melbourne, Australia.

Shri Sai Satcharitra Maha Parayan In Shirdi

Sri Sai Satcharitra Parayan festival organised by Shri Saibaba Sansthan Shirdi, Natya Rasik Manch and Shirdi Villagers, started in Shirdi on 25th July 2025. A procession was taken out from

Samadhi Mandir via Hanuman Temple and Dwarkamai to Parayan Mandap at Shri Sai Ashram.

In this procession Chief Executive Officer Shri Goraksh Gadilkar took the Holy

timings were 7 AM to 11:30 AM for men and from 1 PM to 5:30 PM for women. Cultural program was organised everyday from 7 PM to 9 PM. The program concluded on 1st August 2025. Many devotees and Shirdi villagers participated in this procession and got the blessings of Shri Sai Baba.

Book Shri Sai Satcharitra, Mrs. Vandana Gadilkar took the Kalash, Deputy Chief Executive Officer Shri Bhimraj Darade took Vina, Administration Officer Shri Sandeep Kumar Bhosale and Labour Officer Shri Sharad Dokhe took the Photo of Shri Sai Baba to the Parayan Mandap. The parayan

Shree Sainatha Gnyana Mandira Bhatrenahalli

Bangalore: Shree Sainatha Gnyana Mandira, Mallur, Bhatrenahalli, Vijaypura, celebrated Gurupurnima with great fervor. The celebration started on 9th July 2025 at 2 PM with Cow puja & Ganga puja followed by Gana Homa, Sai Homa, Iyappaswami Homa, Subramaniumswami Homa, Duttatraya Homa, Sudarshan Homa, Durga Homa & Ishwaraswami Homa. After Rudra Mantra Arti was recited.

On 10th July 2025, Thursday, on Gurupurnima the program started with Kakad aarti at 5 AM, mangalsnan & Baba's abhisheka & alankar was done and after that darshan started for all devotees. After that Gana Homa, Sai Homa was done and after Sai Ashtotara maha aarti was recited. After that Satyanarayanswami puja was performed. After Vishnushastranama & Lalitha Sahastranama devotional songs were sung. After dhoop aarti, Agnihotri homa was done. After that bhajans were sung by Junior Gandshala Shri Venkat Ramana, Company Devraj & Dhruv. From 6 AM till 11 PM Mahaprasdam was distributed to around 15000 devotees who visited the temple. Some VIPs also visited the temple, Shri K.H. Muniappa Sir Minister of Karnataka Govt., Sir Sumit & family of Kohinoor Marble, Sir Omprakash of Nav Durga Plywood Showroom from Bangalore, Shri Manjnath of Petrol Bank from Vijaypura, BVK family and Shrimati Jayamma Retired Subregisterar Officer visited the temple & she gave Laddu prasad in the temple. Many cultural programs were also organised like Bharat natayam, devotional song etc. Goshita performed Sai Dance & Chandana presented Sai Krishan dance. The entire program was organised beautifully by members of temple committee. **-M. Narayanaswamy**

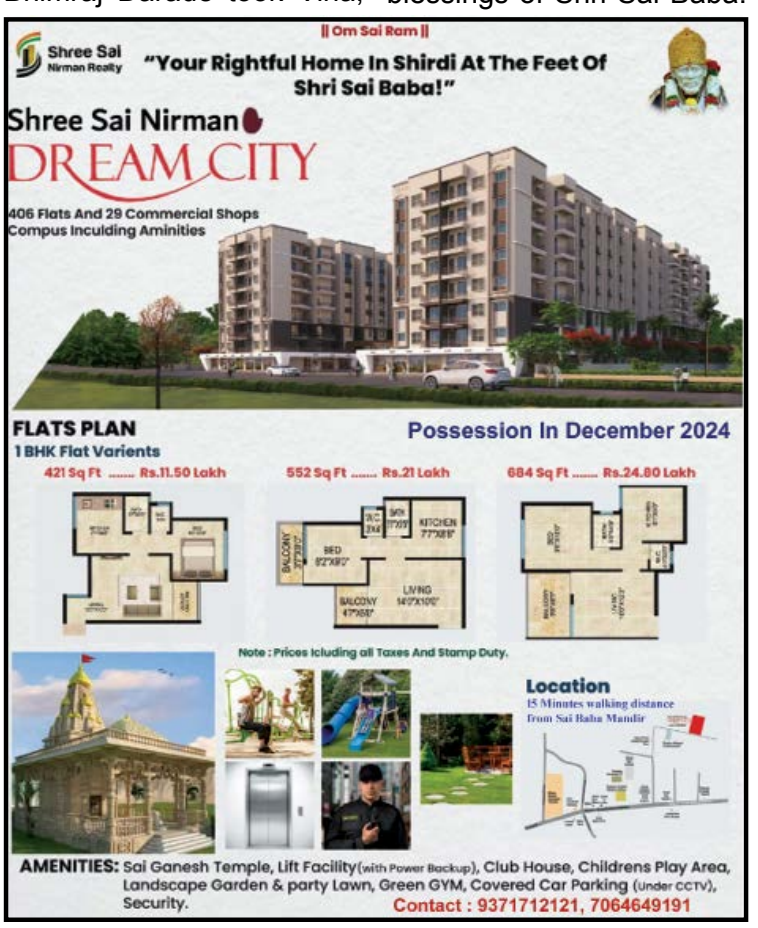

Sahasranama Leads to the Jewel of Beauty

Always remember me only. Believe in me heart and soul. Pray without selfish motives and you will attain your welfare.

–*Shri Sai Satcharita*

Shankaracharya Hill comes into view as we approach Srinagar from the airport. The conical temple on top of a densely forested hill overlooks Dal Lake and in the mild afternoon light, it shines like a jewel on the forehead of a goddess. This brings to mind the image of Vivekachudamani, Crown Jewel of Reason, which is the title of a famous poem that Adi Shankaracharya composed in his relatively short but brilliant lifespan of 32 years.

This metaphor of a glittering medallion seems doubly apt because the crowning glory of the Shankaracharya's academic achievements was his accession to Kashmir's Sarvadnya Peetha, the seat of all knowledge. Also called Sharada Peetha, after the Goddess of Learning, after whom the state got its name in the old days, the shrine is now located in Pakistan-occupied Kashmir. Our plan was to bask in some of the magical vibes associated with the sacred spot while chanting Vishnu Sahasranama. Shankaracharya Hill is the place where the Master meditated to compose his Saundarya Lahiri – Waves of Beauty, according to Anandagiri's biography of Adi Shankara. The hundred-verse-long poem opens abruptly with the assertion that only when Shiva is united with his Shakti did he acquire the power of creation. According to a legend, the manuscript was originally authored by Shiva himself and he gifted it to Adi Shankara in the Kailash Himalayas. However, Nandi, the possessive bull of Shiva, grabbed the text in his mou.cult terrain, but once we got to the summit, everything seemed to change almost magically. There was bright sunlight all around, and under the friendly blue skies, we could rest on granite seats around the massive 'God trees' that have been planted in front of the shrine. We strolled around to gaze down upon the dazzling Dal Lake with its houseboats that appeared to be like tiny toys. It seemed to us that all was well and God was near us.

The 21st shloka of Vishnu Sahasranama is:

Marichirdamano Hamsaha Suparno Bhujagothamaha Hiranyanabhah Sutapah Padmanabhah Prajapati

Lord Vishnu is the crest jewel as he is Marichi, radiant and Damana, punisher of the evil. He is Hamsa, I am in him and he is in me and is Suparna has beautiful wings. He reclines on Bhujagothama, the best of serpents. He is Hiranyanabha, the source of all Sutapa, austerities. He is Padmanabha, holy and is Prajapati, the father of all beings. Sai Baba did not groom anyone to be the disciple who would carry on His mission. Possibly, he could have transferred His powers to one of His followers. He did not do this. He enabled Kashinath Krishnaji Joshi to materialise udhi from nothing, but this was only to enable him to help the needy.

Kashinath was also known as Kashinath Govind Upasani. He was the second of five sons born in a Brahmin family in Satana village in Nasik district. He was born on 5th May 1870 and his parents were Govinda Shastri and Rukmini. A great saint, Uddhav Maharaj of Mulher, gave a vision in a dream to Rukmini that he would take birth as her son.

Sai Baba wanted to groom Upasani as His successor. He put him on an internship at Khandoba Mandir but Upasani ran away before the stipulated term of internship. Sai Baba then declared that He had no heir or disciple and He would continue to look after the welfare of His devotees Himself. When He casts off His mortal coil, the bones in His tomb would be ever vigilant and take care of His devotees. -to be contd...

-Dr. Vijayakumar

Courtesy: An Insight into Vishnu Sahasranama through Sai Baba. Published by: Sterling Publishers P.Ltd.

108 Names of Shri Saibaba

by Satya Shri Sant Vivek Ji

It is my staunch belief that reading or listening of Sai Sanjeevni (108 names of Sai Baba) will dispel all doubts of devotees & remove miseries and sorrows from their lives. They will definitely realise the Self and be One with Shri Sai.

Om Shri Sai Venkatesh-Ramanaay Namah

Sai, the incarnation of Lord Venkateshwara. Also known as Srinivasa, Balaji and Venkatachalapati is an incarnation Lord Vishnu. It is believed that Lord Venkateshwara destroys the sins of the people in no time. He has four hands. He holds symbol of power 'Chakra' in one hand and 'Conch' a symbol of existence in the other hand. Lower two hands are extended and pointing towards his feet asking devotees to surrender and have faith in him. Temple town of Tirupati, in the Tirumala hills is considered to be the abode of Lord Venkateshwara. It is considered to be the most sacred place in the whole universe. The seven hills of Tirumala are considered to be the seven heads of the mythological serpent 'Adishesh'. Sai, is the incarnation of Lord Venkateshwara who destroys the sins of people who surrender unto him. My humble salutation to Shri SAI the embodiment of Lord Shri Venkatesh of Tirumala.

Gold & Silver Ornaments Offered to Saibaba In Shirdi

Shirdi: On the auspicious Guru Purnima Day, an anonymous Sai devotee offered an attractive silver necklace weighing about 2 kgs. and an attractively embroidered gold crown weighing 566 grams, worth about Rs.59 lacs at the lotus feet of Shri Saibaba. At the request of the Sai devotee, his name has been kept confidential. This donation embodies selfless devotion, richness of emotions and utmost faith towards Guru. The donor Sai devotee was honored on behalf of Shri Sai Baba Sansthan.

On the same day, Sai devotees Smt. Lalita Muralidharan and Shri K. Muralidharan from Chennai, Tamil Nadu, offered a 54 gram gold diamond-studded ornament worth Rs. 3,05,532 /- to Shri Sai Baba. After the donation, Sansthan Chief Executive Officer Shri Goraksh Gadilkar felicitated the devotee couple on behalf of Shri Sai Baba Sansthan.

People understand the value of right person only when they meet a few wrong ones in the journey. Always wrong persons teach the right lessons in life.

Guru Purnima Celebrated at Sai Temple Brampton

Brampton: On 10th July 2025, on the occasion of Guru Purnima special program was organized at Sai Baba Temple, Brampton, Canada. The temple was beautifully decorated with colorful flowers. Bhajans were recited by local singers. All devotees were engrossed in their bhajans. Many devotees attended the program and got blessings of Shri Sai Baba.

Prasad was distributed to all the devotees after Aarti.

-Devendra Malhotra

Sri Sri Kalidas Krishnanand Paramhans ji Maharaj visited Shirdi on 22nd July 2025 and had darshan of Shri Sai Baba. After darshan, Chief Executive Officer Shri Goraksh Gadilkar felicitated him. Deputy Chief Executive Officer Shri Bhimraj Darade was also present there.

Shirdi Sansthan Received Rs.6,31,31,362/- Donation During Guru Purnima

Shirdi: Chief Executive Officer of Shri Sai Baba Sansthan Trust (Shirdi) Shri Goraksh Gadilkar informed that Sansthan received through all channels a sum of Rs.6,31,31,362/- donation during Guru Purnima festival which was held on 9th, 10th & 11th July 2025. The donations were received through Donation Box, Donation Counters, Online, Cheque/ DD/Money Order/Debit/ Credit Cards, UPI, Gold, Silver as well as Darshan/ Aarti pass fees channels. During the 3 days of Guru Purnima Festival, more than 3 Lakh devotees visited Shirdi.

Our Associates

Singapore - Naina
U.S.A. - Anil Chadha
Dr. Rangarao Sunkara
Ohio - Varaha
Florida - Kamal Mahajan
Brampton
Devendra Malhotra
Australia - Anibha Singh
New Zealand
Anjum Talwar
Japan - Kaco Aiuchi
Canada
Ruby Kaur, Smita Sohi
Germany - Sugandha Kohli
Sri Lanka
S.N. Udhayanayahan
Nepal
Vishnu Pokhrel, Madhu

साई के संग अमर रहेगा तेरा नाम - तात्या कोते पाटील

शिरडी निवासी पाटील व उनकी पत्नी बायजा बाई ने प्रारम्भ से ही बाबा श्री की दिव्य शक्ति को पहचान लिया था। बाबा ने स्वयं मां को देखते ही कहा था कि यह मेरी पिछले 6 जन्म की बहन है, उनकी सेवा व बाबा के प्रति श्रद्धा उच्चतम श्रेणी की थी। जब तक बाबा भोजन नहीं करते थे वे स्वयं भी भोजन नहीं करती। उनके पुत्र तात्या पाटील भी बाबा को बहुत मानते थे। पुत्र तात्या बाबा को मामा कहकर सम्बोधित करते थे।

हैदराबाद के एक साई भक्त श्री विजय किशोर बाबा से संबधित लीलाओं पर एक ई-पेपर श्री साई सर्मपण अंग्रेजी में प्रति माह प्रकाशित करते हैं। उसमें तात्या जी के अद्‌भुत अनुभव छपे हैं। आईये जन्मों के नातों के आधार पर भक्त और भगवान के प्यार में भक्त श्री तात्या जी के अनुभव श्रवण करें।

बाबा जब प्रथम बार शिरडी आये, मेरी उम्र 7-8 वर्ष की थी। तब बाबा मस्जिद में नहीं रहते थे। लगभग 9-10 महीने वो मस्जिद में रहे, फिर वे नीमवृक्ष के नीचे रहने लगे। पुन: वे मस्जिद में निवास करने लगे। तब उन्होंने गांव वालों से कहा कि नीम पेड़ के नीचे उनके गुरू की समाधि है, माधव राव (शामा) हमारे अध्यापक थे मैं शायद तीसरी या चौथी कक्षा में था। हम कुछ बच्चे जिनमें रघु शिंदे भी थे, छुट्‌टी होने पर मस्जिद जाते और तरह-तरह के चेहरे बना कर बाबा को चिढ़ाते। रघु तो कई बार छोटे-छोटे पत्थर भी फेंकते। बाबा नाराज़ होकर जब डांटते तो हम हंसते हुए भाग जाते। बाबा उस समय 18-20 वर्ष के लगभग थे और उस समय उनकी पतली मूछें भी थी। दोपहर के भोजन के समय बाबा हमारे घर भिक्षा लेने आते और आवाज़ लगाते-अबादी आबाद, बायजा माई रोटी देवे। मां उन्हें अन्दर आने को कहती। बाबा बाहर चबूतरे पर बैठ जाते। मां भी सब काम छोड़कर बाबा के पास बैठती। छोटा होने के कारण कभी मैं उनके कंधे पर चढ़ता तो कभी घुटनों पर बैठ जाता। मां क्रोधित हो उठती तो बाबा बोलते, अरे जो वो चाहता है उसे करने दो, तुम क्यों नाराज़ होती हो? मां अक्सर बाबा से आग्रह करती कि तीन-चार ग्रास उनके सामने खायें। आमतौर पर बाबा भाकरी, ज्वार की रोटी व सब्जी ग्रहण करते थे। मां पहले से ही सब तैयार करके रखती थी। बाबा सबसे पहले पाटील गोंदकर के घर भिक्षा मांगने जाते थे।

वर्ष 1895 में गंगागीर महाराज शिरडी आये। वे नाम सप्ताह करना चाहते थे परन्तु स्थानीय लोगों ने साथ नहीं दिया। जैसे ही उन्होंने मस्जिद में बाबा को देखा, तुरन्त बोले, 'यह अमूल्य हीरा है, मेरे शब्दों का ध्यान रखना, भविष्य में यह यहां का वातावरण ही बदल देंगे।' गंगागीर जी के नाराज़ होने पर मैं उनके पीछे-पीछे रूई गांव गया और क्षमा मांगी और नाम-सप्ताह करने का आग्रह किया। मना करने पर जब मैंने बार-बार प्रार्थना की तो उन्होंने नाम सप्ताह शिरडी में किया। नाम सप्ताह के पश्चात् मैं महाराज के साथ अन्य गांवों में भी नाम सप्ताह करने हेतु गया। मैं दशहरे के आसपास वापस आया और बाबा के दर्शन कर सम्पूर्ण बातें कहीं। बाबा बहुत प्रसन्न हुए। उस समय मेरी आयु 17-18 वर्ष की थी। इस दिन से मैं नित्य बाबा के पास जाने लगा। बाबा मुझसे बहुत प्यार करते थे और अपनी आज्ञा के बिना कहीं जाने नहीं देते थे।

मैं अब बाबा के पास मस्जिद में सोने लगा था। आज जहां बाबा का चित्र लगा है वहीं बाबा अपना सिर पश्चिम की ओर व पैर पूर्व की ओर रखते थे। मैं अपना सिर बाबा के चरणों के पास रखता था। मेरा सिर उत्तर की ओर व पैर दक्षिण की ओर होते। म्हालसा जी दाक्षिण की ओर सोते थे। उनका सिर पश्चिम की ओर व पैर पूर्व की ओर होते। वर्ष 1896 से 1899 तक महाराष्ट्र में अकाल पड़ा, भुखमरी फैल गई। केवल हमारे घर से बाबा को प्रतिदिन भिक्षा मिली। नंदराम केवल आधी भाकरी ही देता। बाबा कई बार हमारे घर 12 से 16 बार दिन में आते। मां बाबा को आधी रोटी देती। बाबा सब भिक्षा कोलाबा में रखते। स्वयं थोड़ा सा ही खाते, बाकी पशु-पक्षियों के लिये रखते बाद में बहुत लोग बाबा के पास आने लगे और नैवेध के रूप में अपने साथ पेड़े, बर्फी, आम आदि लाने लगे। अगर मैं मस्जिद में होता तो मुझे दे देते अन्यथा मेरे लिये अलग से रख देते। हम तीनों लगभग नौ बजे सो जाते। बाबा को पता था कि मैं सारा दिन खेत में काम करके थक जाता हूं तो वे मेरी मालिश करते। मुझे शर्म लगती थी अत: एक दिन मैंने कहा यह ठीक नहीं है, अपितु मुझे आपकी सेवा करनी चाहिए। मैं कल से यहां नहीं आऊंगा। मैं दस दिन मस्जिद नहीं गया। तब काका साहेब ने समझाया, मां बायजा के पुत्र होने के कारण बाबा तुम्हें बहुत प्यार करते हैं, म्हालसापति तीन-चार

वर्ष बीमार रहे। उनके सारे कार्य मैंने किये। मैं मस्जिद में बाबा के साथ लगभग चौदह वर्ष सोया।

एक बार बाबा ने मुझे चार रूपये देकर बाज़ार से पान, बेर एवं कुछ और लाने को कहा। मैं शीघ्र ही सभी वस्तुएं लेकर लौट आया और बेर बाबा के समक्ष रख उन्हें खाने का आग्रह किया। बाबा ने बेर मुझे और म्हालसापति खाने को कहा, स्वयं नहीं खाये। मैंने कहा, अगर आप नहीं खायेगें तो मैं भी नहीं खाऊंगा। न बाबा ने बेर खाये और न मैंने। मैंने गुस्से में बेर फेंक दिये और गांव में तमाशा देखने चला गया। दागदी और कोण्डया को बाबा ने मुझे बुलाने भेजा, मैं फिर भी नहीं गया। इस बीच बाबा व म्हालसापति ने बेर इक्कठे किये और स्वयं म्हालसा जी मेरे पास आये। मैं मस्जिद में लौटा तो बाबा ने दो-तीन बेर खुद खाये और हमें खाने को दिये।

शुरू के दिनों में मैं प्रत्येक सावन महीने के प्रत्येक सोमवार, एकादशी व महाशिवरात्रि के दिन व्रत रखता था। बाबा का कथन था इन व्रतों का कोई लाभ नहीं है। ऐसे ही एक समय पर जब मैंने व्रत रखा, बाबा ने मुझे भोजन करा दिया। महाशिवरात्रि के एक अवसर पर मैंने बाबा से कहा, मैं व्रत रख रहा हूं कृपा मुझे भोजन करने के लिये न कहें। तब बाबा बोले, 'खाओ, खाओ, शिवरात्री क्या है?' तब दादा केलकर ने कहा, 'जो बाबा कह रहे हैं वो करो।' तब मैंने उस दिन भोजन किया और पश्चात् कभी व्रत नहीं रखा।

प्रत्येक रात मैं मस्जिद में भाकरी लेकर जाता। बाबा उसमें से कुछ ही ग्रहण करते। शेष कोण्डा जी अपने घर ले जाते। पश्चात् मैं प्लेट में पान अर्पित करता। बाबा अपने हाथ से मुझे खिलाते और स्वयं भी खाते। राधामाई के आने पर यह दायित्व उन्होंने अपने ऊपर ले लिया। राधामाई पढंरपुर से शिरडी आई थी। उन्होंने कहा कि वे आषाढ़ एकादशी की विशेष पूजा हेतु दो अन्य बाला शिम्पी व महादू फसले के साथ पढंरपुर पैदल जायेगी। हमने भी सोचा कि अहमदनगर से माई के साथ पैदल, पंढरपुर जायेंगे। अत: मैंने, मां, रिश्ते का भाई, लक्ष्मी बाई शिंदे ने यात्रा की तैयारी कर ली। तीन बैलगाड़ियां तैयार थी, गांव के सब लोग मिलने के लिये पास खड़े थे। मैंने सुमंगल यात्रा हेतु मारूति मंदिर व शनि मंदिर में नारियल फोड़ा ही था कि कोण्डया ने आकर कहा, बाबा बुला रहे हैं। जैसे ही मैं बाबा के करीब गया, बाबा बोले, 'बायजा मां को बुलाओ। मां ने कहा, शाम हो रही है, सब चलने को तैयार है, शांत स्वर में बाबा बोले, 'आज यात्रा पर मत जाओ, जाओ घर जाओ, हां परसों चले जाना, पूछने की भी ज़रूरत नहीं है।' मां ने कहा, आपकी आज्ञानुसार हम परसों प्रस्थान करेंगे। पश्चात् शामा ने ज्योतिष हिसाब से देखा कि ये दो दिन यात्रा के लिये उपयुक्त नहीं थे।

उपयुक्त समय पर चलने से हम जेझुर में राधामाई से मिले और नरसिंह पुर में नरसिंह महाराज के दर्शन किये। पैदल चलते-चलते हम पंढरपुर पहुंचे। माधवराव ने एक पत्र नाना साहेब के नाम दिया था, क्योंकि नाना उस समय पंढरपुर के मामलतदार थे। नाना ने सबको एक धर्मशाला में ठहरा दिया और हमें बड़े पुजारी के यहां। एकादशी के दिन वहां हैज़ा फैलना शुरू हो गया और दूसरे दिन चारों ओर फैल गया। सब भयभीत हो गये लौटने की तैयारी करने लगे। बाबा जानते थे कि पंढरपुर में हैज़ा फैल रहा है उन्होंने तत्काल माधवराव को यहां भेज दिया। संध्या समय नाना ने कहा, तात्या हैज़ा बढ़ता जा रहा है 300 लोगों का देहांत हो चुका है, बाबा ने तुम सब की रक्षा के लिये शामा को यहां भेज दिया है। कृपा कर शीघ्र शिरडी लौट जाओ। अत: त्र्योदशी के दिन ही पंढरपुर प्रभु के दर्शन कर हम सकुशल लौट आये।

सुधिजन-उपरोक्त सब विवरण श्री साई लीला 1960 अंक 11 में प्रकाशित हुआ था जिसे श्री बी.वी. देव जी के सुपुत्र श्री विश्वनाथ बालकिशन जी ने अपने पिता के कागज़ों में लिखी लीलाओं से एकत्र किया था। 1960 के बाद पत्रिका में तात्या जी के बारे में और कुछ नहीं लिखा गया है।

साई बाबा ने तात्या जी को अपनी अंकित सन्तान समझ कर स्नेह किया। चावड़ी विश्राम वाली रात्रि को भी जब तक तात्या बाबा जी को न बुलाते बाबा प्रस्थान नहीं करते थे। शोभा यात्रा में भक्त म्हालसापति बाबा की कफनी का छोर पकड़कर दाई ओर खड़े होते और बायें ओर तात्या हाथ में लालटेन लेकर चला करते। तात्या ही बाबा का आसन तैयार करते और फिर उनका हाथ पकड़कर उन्हें आसन तक ले जाते। शामा तम्बाकू पीस कर चिलम तैयार करते, जिसे वे तात्या को दे देते। तात्या जी ही फूंक लगा कर उसे प्रज्वलित करते। बापू साहेब जोग पंचारती लेकर बाबा के समक्ष घुमाकर उनकी आरती करते। आरती समाप्त होने पर बाबा से जब तात्या घर जाने की आज्ञा मांगते, बाबा उनसे कहते, 'मेरा ध्यान रखना, जाओ रात्रि में कभी-कभी आकर मुझे देख लेना।' तब ठीक है कहकर तात्या अपने घर चले जाते। यह अति विचारनीय है कि 'परब्रह्म श्री साई जो सारे संसार का ध्यान रखते थे और रख रहे हैं, अपने बालक तात्या से कहते हैं कि 'मेरा ध्यान रखना'। बाबा अपने भक्त की महिमा, यथार्थ में उस समय अन्य भक्तों के समक्ष रखते थे।

तात्या जी ने 12 मार्च 1945 को समाधि ली। तात्या काफी समय से बीमार थे, इधर बाबा भी बीमार थे। तात्या हिलडुल भी नहीं सकते थे। बाबा के बुलाने पर उन्हें पीठ पर लादकर द्वारकामाई ले जाया गया। खाने की थाली में से तात्या ने मुश्किल से खीर ली और दोनों हाथ जोड़ दिये। बाबा ने अपने हाथों से तात्या के माथे पर उदि लगाते हुए कहा, 'दो झूले मंगाये थे, एक मैंने वापिस कर दिया है।' यह सर्वविदित है कि 15 अक्टूबर को बाबा ने समाधि ली। उस समय प्रत्येक वासी की जिव्हा पर एक सवाल था, 'बाबा ने तात्या की जान बचाने हेतु स्वयं महासमाधि ले ली।'

तात्या जी की समाधि, समाधि मंदिर परिसर में ही है। भक्त बाबा के दर्शन पश्चात् वहां जाकर इस महान, श्रद्धेय भक्त को भी प्रणाम करते हैं। इनके वंशज आज भी शिरडी में ही रह रहे हैं। आइये सब साई भक्त इन्हें हम शत्-शत् नमन करें। इन महान भक्तों की कथाओं के श्रवण से साई बाबा के श्री चरणों में हमारी आस्था और दृढ़ होती जाये, यही हमारी प्रार्थना है।

संकलन: साईदास योगराज मनचंदा

हमें ये बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि अब आप सब साई बाबा की देश विदेश की खबरें, भक्तों के अनुभव, बाबा के अनूठे चमत्कार व बाबा के विभिन्न live कार्यक्रम, श्री साई सुमिरन टाइम्स की YouTube Channel पर भी नि:शुल्क देख सकते हैं। इसके लिए आप सबसे अनुरोध है कि आप सब अपने फोन पर Shri Sai Sumiran Times की YouTube Channel को subscribe करें।

बाबा ने मालानबाई को जीवन दान दिया

'जिस क्षण तुम शिरडी की भूमि पर पांव रखोगे तुम्हारी तकलीफों का अंत हो जाएगा। यहां का फकीर बहुत दयालु है। वे तुम्हारा मर्ज़ व दर्द पूर्ण रूप से दूर कर देंगें।' बाबा ने नारायण गांव के भीमाजी पाटिल को कहा। भीमाजी फेफड़ों के तपेदिक से पीड़ित थे। बहुत से उपचार तथा व्याधियां प्रयोग में लाई गई, सभी बुरी तरह हार गई। इसलिए वे नाना के साथ शिरडी आ गए।

यह बाबा के श्री वचन थे और उनका अक्षरक्ष पालन करना था, फिर उपचार मिलना अवश्यमभावी था। यहां पर फेफड़ों की तपेदिक की एक और लीला है।

मालानबाई दामोदर रघुनाथ जोशी की पुत्री थी। वह फेफड़ों की तपेदिक के कारण बहुत बीमार थीं। यह बुखार के साथ आरंभ हुआ, जो दयनीय था और यह कई महीनों तक चलता रहा। आखिरकार इसका असर फेफड़ों पर पड़ा। वे दुर्बल हो गई। ना वे उठकर बैठ सकती थी और ना ही करवट बदल सकती थी। कई डाक्टरों और वैद्यों ने उनका उपचार किया, परंतु उसका कोई फायदा न हुआ। वे दवा खाते-खाते थक चुकी थीं, तो एक आखिरी उपचार मान उनके पिता ने उन्हें बाबा की उदि देना आरंभ कर दिया, साथ ही साथ उन्होंने दवाइयां देना भी जारी रखा। उन्होंने लगातार अपने पिता से उन्हें शिरडी ले जाने को कहा। एक दिन उन्होंने अपने पिताजी से कहा, 'यदि तुम मुझे बाबा के दर्शनार्थ नहीं ले गए, तो मैं कभी ठीक न हो पाऊँगी।'

उनकी अवस्था इतनी दयनीय थी कि उन्हें इतनी दूर ले जाना ही मुश्किल था। आखिरकार उनके पिता ने इस हेतु डॉक्टर का परामर्श लेना ठीक समझा। एकमत हो वे बोले, 'यह उनकी आखिरी इच्छा है, वह अपने जीवन के अंतिम पड़ाव पर हैं, तो उन्हें शिरडी ले जाओ।' इस हेतु उनके पिताजी ने कुछ रिश्तेदारों को साथ चलने को कहा।

मालानबाई शिरडी गई। जब उन्होंने बाबा का दर्शन कर लिया ते वे चिल्लाने और गालियां देने लगे, और बोले, 'उसे एक कम्बल पर लेटने दो और उसे मिट्‌टी के बर्तन से पानी पीने को दो। उसे यहीं लेटने दो।' मालानबाई को दीक्षित वाड़े में ले जाया गया, वहां पर वह सब बात खुशी-खुशी मान गई क्योंकि उन्हें बाबा पर पूरा विश्वास था। एक सप्ताह तक उन्होंने वही किया और एक दिन प्रात: वे चल बसीं। उनकी दादी और बाकी सब रिश्तेदार रोने लगे और एक दूसरे को सांत्वना देने लगे। आदमी लोग अंतिम संस्कार की व्यवस्था हेतु चले गए। साठे साहिब ने उन्हें सांत्वना देने का बहुत प्रयास किया।

भक्तगण काकड़ आरती के लिए द्वारकामाई में एकत्रित हुए थे परंतु बाबा उठने को ही तैयार न थे। जब वे उठे तो वे बहुत ही क्रोधित थे। उन्होंने फर्श पर कई बार अपना सटका मारा। साथ ही साथ वे एक के बाद एक अपशब्द कहते रहे तथा गालियों की बौछार करते रहे। फिर बाबा उठे और क्रोध में ही दीक्षित वाड़े की ओर चल दिए। वे गालियां दे रहे थे और अपना सटका भी हिला रहे थे, उस कमरे में जहां मालानबाई रहती थी।

उसी समय मालानबाई ने अपने हाथ पैर हिलाए और उबासी ली। उन्होंने आस-पास देखा, यह दृढ़ करने के लिए कि वे कहां थी। फिर वे उठकर बैठ गई। उनके रिश्तेदार आश्चर्यचकित थे तथा उलझन में थे (ठीक से समझ न पाए)। आराम से उन्होंने प्रश्न किया कि क्या हुआ था? काला आदमी (यम) मेरे बाबा के सामने कुछ न था

फिर उन्होंने यह लीला उद्यत की, 'मुझे एक काला बदसूरत आदमी उठाकर ले जा रहा था। वह बहुत कुरख्त (सख्त) था, और उसने मुझे खींचा और घसीटा। मैं उसके साथ आसानी से नहीं जा रही थी। मैंने अपने बाबा को पुकारा, इस दैत्य स्वरूप मानव से मुझे बचाने को, यकीनन मेरे बाबा मेरे पास आए और उस काले आदमी को अच्छे से पीटा। वह काला आदमी (यम) मेरे बाबा के सामने कुछ न था इसलिए उसने मुझे छोड़ दिया। फिर बाबा मुझे अपनी चावड़ी में ले गए जहां मैं आराम से लेट गई।'

फिर मालानबाई बताने लगी कि चावड़ी कैसी दिखती थी। कहां बाबा बैठते थे और कहां वे सोते थे। जिन्होंने भी यह सुना वे सब मानो शब्द ही खो बैठे। मालानबाई ने कभी चावड़ी नहीं देखी थी, परंतु उसका वर्णन पूर्णत: ठीक था।

परिवार वाले लेखे के मोड़ से अति प्रसन्न थे। आंखों में आभार के अश्रु लिए उन्होंने बाबा का शुक्रिया अदा किया और घर लौट आए। **-बेला शर्मा**

आभार: बाबा की वाणी

आत्मसंतोष सबसे बड़ा धन

एक नगर का राजा, जिसे ईश्वर ने सब कुछ दिया, एक समृद्धि राज्य, सुशील और गुणवती पत्नी, संस्कारी सन्तान सब कुछ था उसके पास, पर फिर भी वो दु:खी रहता। एक बार वो घूमते घूमते एक छोटे से गाँव में पहुँचा जहाँ एक कुम्हार, भगवान भोले बाबा के मन्दिर के बाहर मटकीयां बेच रहा था और कुछ मटकीयों में पानी भर रखा था और वहीं पर लेटे लेटे हरि भजन गा रहा था। राजा वहाँ आया और भगवान भोले बाबा के दर्शन किये और कुम्हार के पास जाकर बैठा तो कुम्हार बैठ गया और उसने बड़े आदर से राजा को पानी पिलाया। राजा कुम्हार से कुछ प्रभावित हुआ और राजा ने सोचा कि ये इतनी सी मटकीयों को बेच कर क्या कमाता होगा? तो राजा ने पूछा क्यों भाई प्रजापति जी मेरे साथ नगर चलोगे।

प्रजापति ने कहा- नगर चलकर क्या करूँगा राजा जी?

राजा- वहाँ चलना और खूब मटकीयां बनाना।

प्रजापति- फिर उन मटकीयों का क्या करूँगा?

राजा- अरे, क्या करेगा? उन्हें बेचना खूब पैसा आयेगा तुम्हारे पास।

प्रजापति- फिर क्या करूँगा उस पैसे का?

राजा- अरे पैसे का क्या करेगा? अरे पैसा ही सब कुछ है।

प्रजापति- अच्छा राजन, अब आप मुझे ये बताईये कि उस पैसे से क्या करूँगा?

राजा- अरे फिर आराम से भगवान का भजन करना और फिर तुम आनन्द में रहना।

प्रजापति- क्षमा करना हे राजन। पर आप मुझे ये बताईये कि अभी मैं क्या कर रहा हूं और हाँ पूरी ईमानदारी से बताना।

काफी सोच विचार किया राजा ने और मानो इस सवाल ने राजा को झकझोर दिया।

राजा- हाँ प्रजापति जी आप इस समय आराम से भगवान का भजन कर रहे हो और जहाँ तक मुझे दिख रहा है आप पूरे आनन्द में हो।

प्रजापति- हाँ राजन, यही तो मैं आपसे कह रहा हूं कि आनन्द पैसे से प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

राजा- हे प्रजापति जी कृपया करके आप मुझे ये बताने कि कृपा करें कि आनन्द की प्राप्ति कैसे होगी?

प्रजापति- बिल्कुल सावधान होकर सुनना और उस पर बहुत गहरा मंथन करना राजन! हाथों को उल्टा कर लिजिये।

राजा- वो कैसे?

प्रजापति- हे राजन, मांगो मत, देना सीखो और यदि आपने देना सीख लिया तो समझ लेना आपने आनन्द की राह पर कदम रख लिया। स्वार्थ को त्यागो परमार्थ को चुनो। हे राजन, अधिकांश लोगों के दु:ख का सबसे बड़ा कारण यही है कि जो कुछ भी उनके पास है वो उसमें सुखी नहीं हैं और जो नहीं है उसे पाने के चक्कर में दु:खी हैं। अरे भाई जो है उसमें खुश रहना सीख लो, दु:ख अपने आप चले जायेंगे और जो नही है क्यों उसके चक्कर में दु:खी रहते हो।

शिक्षा: आत्मसंतोष से बड़ा कोई सुख नहीं और जिसके पास सन्तोष रूपी धन है वही सबसे बड़ा सुखी है और वही आनन्द में है और सही मायने में वही राजा है।

पुरानी चोट अथवा दर्द के इलाज हेतु तेल तथा लेप श्री साई मंदिर, एच ब्लॉक, सरोजनी नगर, नई दिल्ली से प्राप्त किया जा सकता है। सम्पर्क करें- प्रीति भाटिया फोन: 9899038181

वापसी की रहस्यमयी यात्रा

अपने शिरडी प्रवास के दौरान, एक दिन आई के पैर के अंगूठे में चोट लग गई और उसमें काफी दर्द रहने लगा। आई उस पर पट्टी बांध लिया करती थीं और शिरडी घूमती रहती थीं, लेकिन दर्द बढ़ता ही जा रहा था, इसलिए उन्हें शिरडी से जल्दी ही प्रस्थान करने का निर्णय लेना पड़ा था, लेकिन पूना पहुंचते-पहुंचते दर्द और भी अधिक बढ़ गया। हालांकि आई को भारी पीड़ा और परेशानी हो रही थी लेकिन, जैसा कि उनका स्वभाव था, उन्होंने अपनी पीड़ा और परेशानी का रोना कभी किसी के सामने नहीं किया। खासतौर पर मास्टरजी के सामने, क्योंकि वे अपनी वजह से मास्टरजी को चिंता या परेशानी में डालना नहीं चाहती थीं। अपने कारण औरों को किसी परेशानी या असुविधा में डालने से बचने के लिए, वे अपनी पीड़ा और परेशानी को चुपचाप सहन कर लिया करती थीं।

मास्टरजी ने पूना से गोवा की रेल टिकट बुक करा ली लेकिन आई के दर्द को देखते हुए उन्होंने आई से पूछा, अगर वे चाहें तो दर्द ठीक होने तक पूना में ही रूक सकते हैं। आई जानती थीं कि उनके पास थोड़े ही पैसे बचे थे और चूंकि मास्टरजी टिकट भी ले आए थे इसलिए आई ने कहा कि चूंकि उनके पास पूना में ठहरने के लायक और फिर से अगले दिन की टिकट खरीदने लायक पैसे नहीं बचे थे, इसलिए बेहतर यही होगा कि उन्हें उसी दिन की ट्रेन पकड़ लेनी चाहिए। इसलिए उन्होंने सीधे-सीधे कहा, 'हमें निकलना होगा।'

ट्रेन के छूटने का समय शाम 8 बजे का था इसलिए वे लोग बच्चों और सामान के साथ प्लेटफार्म पर बैठे प्रतीक्षा कर रहे थे। लेकिन जब गोवा जाने वाली ट्रेन आई तो उसके सारे डिब्बे खचाखच भरे हुए थे, किसी में भी पैर रखने की जगह नहीं थी। वे प्लेटफार्म पर ओर से छोर तक दौड़ते रहे कि किसी डिब्बे में तो जगह मिल जाए, लेकिन किसी भी डिब्बे में घुस पाना मुश्किल था। बच्चों का साथ और आई के दुखते अंगूठे के कारण और भी मुश्किल हो रही थी, और उनके देखते-देखते वह ट्रेन छुक-छुक करती हुई उन्हें पूना के प्लेटफार्म पर ही छोड़ कर गोवा के लिए रवाना हो गई। जो कुछ हुआ उससे हताश-निराश होकर मास्टरजी ने कहा कि अब स्टेशन पर रूकने के बजाय बस पकड़ना बेहतर रहेगा। आई ने असहमति जताते हुए उन्हें याद दिलाया कि वे ट्रेन टिकट पहले ही ले चुके हैं और जितने पैसे बचे हैं उससे बस के टिकट लेना मुश्किल था। अपनी पीड़ा और परेशानी को दरकिनार करते हुए उन्होंने कहा बेहतर होगा कि अगली ट्रेन की प्रतीक्षा की जाए। वे रेलवे स्टेशन पर ही अगली ट्रेन की प्रतीक्षा करने लगे। वहीं उन्होंने चाय पी और कुछ खाया-पिया जिसके बाद बच्चे सो गए। रात के 9:30 बज गए थे। आई ने मास्टरजी से कहा कि वे सुबह आने वाली ट्रेन में चढ़ ही जायेंगे, कोई पूछेगा तो सब हालात सच-सच बता देंगे कि हमारे पास बकायदा टिकट हैं लेकिन हमारी वाली ट्रेन खचाखच भरी हुई थी इसलिए हम उसमें चढ़ ही नहीं पाए और इसलिए अगली ट्रेन में चढ़ गए हैं।

कुछ देर बाद एक बूढ़ा और बिल्कुल दुबला पतला कुली उनके पास आया। उसने एकदम साफ और ताज़ा धुली हुई लाल वर्दी और टोपी पहन रखी थी। वह आई के पास आया और पूछा, 'ताई, आपको कहां जाना है? गोवा?' आई ने जवाब दिया, 'हां, लेकिन ट्रेन में तो पैर रखने की जगह नहीं थी, हम चढ़ते कैसे?' कुली बोला, 'मैं आपकी सीटों की व्यवस्था एक स्पेशल ट्रेन में करा दूंगा, आप मुझे कितने पैसे देंगी?' आई ने कहा, 'तुम जो कहोगे, हम दे देंगे।' 'मैं दो रूपए लूंगा,' वह बोला। वे लोग झट सहमत हो गये। उसने उन्हें वहीं बैठे रहकर प्रतीक्षा करने को कहा। कुछ मिनट बाद वह लौट कर आया और उनसे अपने साथ चलने को कहा। उसने उनकी सबसे छोटी बेटी को अपने कंधे पर बिठा लिया और सामान उठाने के लिए झुका ही था कि उसके दुबले-पतले शरीर और वृद्धता को देखते हुए आई ने कहा कि सामान वे लोग स्वयं उठा लेंगे। मास्टरजी और आई ने जल्दी-जल्दी अपने बैग वगैरह उठाए और उसके पीछे-पीछे चल पड़े। कई प्लेटफार्मों को पार करते हुए वे बिल्कुल आखिर वाले प्लेटफार्म पर पहुंचे। वह प्लेटफार्म बिल्कुल खाली और सूना था। वहां कोई बंदा नहीं दिख रहा था और न ही वहां कोई लाइट थी, केवल एक ट्रैक पर एक बोगी खड़ी थी जिसमें कोई इंजन भी नहीं लगा हुआ था। वह बोला, 'आपको गोवा जाना है न? इस बोगी में बैठ जाइए, यह आपको गोआ ले जायेगी।' उसने उनके लिए बोगी का दरवाज़ा खोला, अपने कंधे पर लटके तौलिए से उसकी पायदानों की धूल को झाड़ा और उस बोगी में चढ़ जाने को कहा। उसने यह भी कहा कि वे बेफिक्र होकर अंदर आराम से बैठ जाएं, उस बोगी से वे लोग बिना किसी झंझट के गोवा पहुंच जायेंगे।

उनका सामान बोगी में चढ़ाने और सीटों के नीचे उसे ठीक से रख देने के बाद वह यह कहते हुए वहां से चला गया कि वह समय पर आ जायेगा। जब तक मास्टरजी अपनी जेब से पैसे निकाल कर उस कुली को दे पाते तब तक वह जा चुका था।

आई चकित थी कि वह सब हो क्या रहा था। वे लोग अंधेरे में खड़े एक खाली कोच में बैठे हुए थे और वे कोई अनुमान भी नहीं लगा पा रहे थे कि आगे क्या होने वाला है। आई ने मास्टरजी से कहा, 'यह एक खाली बोगी है, यहां कोई भी नहीं हैं, लेकिन यहां कम से कम रात तो गुज़ार ही सकते हैं। सुबह देखेंगे।' यह कह कर वे लोग अपनी-अपनी बर्थ पर लेट गए और उन्हें नींद आ गई। कुछ घंटे बाद अचानक उन्हें एक झटका महसूस हुआ क्योंकि वह बोगी एक ट्रेन से जोड़ी जा रही थी। फिर ट्रेन चलने लगी। वे यात्रा तो कर रहे थे लेकिन उन्हें यह पता नहीं था कि उनकी ट्रेन जा कहां रही थी। ट्रेन जैसे-जैसे आगे बढ़ती गई वैसे-वैसे आगे के स्टेशनों से कुछ और लोग भी उस बोगी में चढ़ते गए। चढ़ने वाले यात्रियों ने इस बात की पुष्टि की कि जिस ट्रेन में वह बोगी लगी हुई थी वह गोवा ही जा रही थी। उनके साथ आ बैठे एक परिवार ने तो उन्हें नाश्ते के तौर पर परांठे भी पेश किए। लेकिन वह कुली फिर दिखाई नहीं पड़ा और जब उन्होंने कुली वाला प्रकरण सुनाते हुए उसके बैज नंबर से उसके बारे में जानना चाहा तो उन्हें बताया गया कि इस नंबर का बैज वाला कुली तो वहां कोई है ही नहीं। उन्हें एक बार फिर एहसास हुआ कि वह कुछ और नहीं बल्कि बाबा का ही एक चमत्कार था।

जो लोग बाबा के प्रति पूर्णतया समर्पित हो जाते हैं, बाबा उनसे भरपूर प्रेम करते हैं और उनके प्रति करूणावान रहते हैं।

-निखिल कृपलानी

आभार: साई बाबा और आई

मंगलाचरण से साई की ओर

शुरू करो कुछ भी, प्रथम लो साई का नाम,
सभी मनोरथ पूरे होते, बनते बिगड़े काम।

हर अच्छे काम की शुरूआत मंगलाचरण से होती है। मंगलाचरण यानी मंगल आचरण। स्पष्ट करें, तो पवित्र आचरण। कहते हैं कि किसी भी शुभ कार्य से पहले यदि देवों को बुला लो, अपने पितृों को याद कर लो तो सारे काम सफल हो जाते हैं। बाबा का स्मरण भी हमारी सफलाओं का सूचक बन जाता है। क्योंकि साई स्वयं भगवान हैं, देव हैं, हमारे पितृ हैं, सखा हैं और हमारे जीवनरूपी रथ के कृष्ण की भांति सारथी हैं।

गोस्वामी तुलसीदास ने हनुमान चालीसा में लिखा है: श्री गुरू चरन सरोज रज, निज मनु मुकुर सुधारि, बरनऊ रघुबर बिमल जसु, जो दायक फल चारि। अर्थात् हमारे पाप, हमारे जो बुरे कर्म हमें भगवान के पास जाने से रोकते हैं, वो सारे मंगलाचरण, अपने गुरू चरण की रज यानी धूल से दूर हो जाते हैं। गुरू के चरण की धूल यानी गुरू की सीख। मंगलाचरण किसी भी कार्य को प्रारंभ करने की शुरूआती प्रक्रिया है। वह हमें अपने कार्य के प्रति दृढ़ संकल्पित कर देती है। जब हमारा आचरण मंगलमयी होगा, तो निश्चय ही जीवन में भी मंगल ही मंगल नज़र आएगा। यह ज़रूरी नहीं कि मंगलाचरण के लिए किसी विशेष स्थल पर धूनी जमाई जाए, मंदिर का कोई कोना तलाशा जाए, किसी जंगल में कोई सुनसान जगह ढूंढी जाए या अपने इर्द-गिर्द जमा लोगों को दुत्कार कर भगाया जाए, ताकि एकांतवास मिल सके। मंगलाचरण तो कहीं भी, किसी भी जगह, किसी भी स्थिति में किया जा सकता है। जैसे हम कोई भी कार्य की शुरूआत से पहले श्री गणेशाय नमः करते हैं। उद्देश्य श्रीगणेश हमारे सारे प्रयोजन ठीक करें। ठीक वैसे ही अगर हम बाबा का स्मरण मात्र भी कर लेते हैं, तो वे रोशनी, हवा और पानी के ज़रिये हमारे मन-तन को निष्पाप कर देंगे।

छोटा सा बच्चा, जब कुछ भी करता है, तो अपनी मां या पिता से पूछता है, मां मैं यह कर सकता हूं? पापा क्या मैं इस चीज़ को हाथ लगा सकता हूं, खा सकता हूं? वहां जा सकता हूं? एक बच्चे का मन एकदम निर्मल होता है। उसे नहीं पता होता कि वो जो करने जा रहा है, जो सोच रहा है, वो ठीक है या नहीं। उससे कोई गलती न हो जाए, इसलिए वो अपनी माता या पिता से सही रास्ता पूछता है, मार्गदर्शन मांगता है। एक बच्चे के लिए वह मंगलाचरण है। वो कोई भी कार्य करने से पहले माता-पिता की अनुमति लेता है, ताकि जाने-अनजाने उससे कोई भूल न हो जाए। बड़ों को भी ऐसा ही आचरण करना चाहिए, लेकिन ऐसा अक्सर होता नहीं है।

हम तो अहंकार में ही जीते हैं कि हम तो परमज्ञानी हैं, हमें तो सब आता है, हम पूर्ण हैं। हम बगैर किसी के मार्गदर्शन या सलाह के काम करना शुरू कर देते हैं। अगर हम एक बच्चे की भांति व्यवहार करें, कुछ करने से पहले अपने गुरू, माता-पिता से सलाह-मशवरा लें, मार्गदर्शन मांगे, तो गलतियों की गुंजाइश न के बराबर रह जाती है। बाबा का सान्निध्य, स्मरण भी तो हमें गलत राह पर जाने से रोकता है और सचेत करता है। लेकिन मंगलाचरण के लिए मन का निर्मल होना भी आवश्यक है, जैसे कि एक बच्चे का होता है।

जीवन में प्रत्येक पग पर, प्रत्येक पड़ाव पर यदि अपने माता का आदेश, पिता की सीख और गुरू के उपदेश याद रखेंगे तो कम गलतियां होंगी और जीवन सुखमय बनेगा। ये सभी हमारे शुभचिन्तक ही तो हैं। इनका हमसे कोई भी स्वार्थ नहीं जुड़ा है। ये तो सिर्फ हमारी भलाई के बारे में ही सदैव चिन्तित रहते हैं। इनकी बातों को मानकर हमारा ही मान बढ़ता है, इनकी सुनकर हमारी इज्ज़त ही बढ़ती है और दु:ख तकलीफ का अहसास कम हो जाता है। शर्त यह है कि इनकी मानने में संशय कभी भी न करो।

तब की बात.... बाबा का एक भक्त था बाला गणपत दर्जी। एक बार वो बहुत बीमार पड़ गया। नीम-हकीम, डॉक्टर सबको दिखाया, लेकिन बुखार में रत्ती भर भी अंतर नहीं आया। वो दौड़ा-दौड़ा द्वारकामाई पहुंचा और बाबा के चरणों में गिर पड़ा। बाबा ने आदेश दिया, जाओ समीप के लक्ष्मी मंदिर में बैठे एक काले कुत्ते को थोड़ा सा दही और चावल खिलाओ। स्वाभाविक सी बात है कि बाबा का यह आदेश गणपत दर्जी को विचित्र जान पड़ा। हालांकि उसने बाबा के आदेश का पालन किया। उसने देखा कि कुत्ते के दही चावल खाते ही उसका बुखार चला गया।

साई से सीधी सीख... यह बाबा का एक चमत्कार था। दर असल, बाबा सर्वव्यापी हैं। उन्हें मालुम है कि किस प्राणी को किस चीज़ की ज़रूरत है। अक्सर हम अपनी पीड़ा के आगे दूसरों के दर्द को कम आंकते हैं। जबकि होना उलटा चाहिए। अगर हम यह सोचेंगे कि फलां व्यक्ति से ज़्यादा बीमार तो मैं हूं उससे ज़्यादा इलाज की आवश्यकता तो मुझे है, तो नि:संदेह आपकी मामूली पीड़ा और बढ़ जाएगी। कारण, आपने सच्चे मन से यही तो माना कि आपका दर्द सामने वाले के दर्द से अधिक है। अगर आपने सोचा होता कि मेरी तकलीफ सामने वाले के कष्टों से तो बहुत कम है, तो आपकी यही दृढ़ सोच आपकी पीड़ा को कम कर देती। बाबा ने उस कुत्ते की पीड़ा महसूस की। गणपत दर्जी को उसे दही चावल खिलाने का आदेश दिया। गणपत जब कुत्ते को दही-चावल खिला रहा था, तब कुछ देर के लिए वो अपनी तकलीफ भूल गया। जैसे ही मन से पीड़ा की अनुभूति विलुप्त हुई, वो भला-चंगा हो गया।

एक अनुभूति ही तो, सुख, दुख, बैचेनी, परमानंद की जड़ है। बाबा अपने भक्तों में अनुभूति का ही संचार करते हैं। अच्छी अनुभूति करेंगे, तो सुखी रहेंगे, और अगर मलिन अनुभूति होगी, तो दु:ख तकलीफ होना लाज़मी है।

-सुमीत पौंदा

आभार: सबके जीवन में साई बातें एक फकीर की

साई धाम ज़ीरा में सड़क का उद्घाटन

ज़ीरा: दिनांक 26 जून 2025 को ज़ीरा, मल्लो रोड पर स्थित साई धाम के बाहर सड़क बनाने का उद्घाटन किया गया। इसकी शुरूआत श्री नरेश कटारिया, विधायक ज़ीरा, सरबजीत कौर प्रधान नगर कोंसल ज़ीरा, गुरूप्रीत सिंह जज, साई महिला परिवार की प्रधान शरणजीत कौर (साई दीदी) साई समिति ज़ीरा के प्रधान संदीप शर्मा जी और साई समिति के सदस्यों द्वारा की गयी शहर के और भी कई नामी सदस्यों ने अपना पूरा योगदान दिया। इस सड़क पर साई धाम जाने वाले लोगों को बहुत परेशानी होती थी। सड़क के बन जाने से सबको बहुत सुविधा हो जाएगी। विधायक श्री नरेश कटारिया जी द्वारा आश्वासन दिया गया कि साई मंदिर के मल्लो रोड पर सड़क की लाईट का भी प्रबंध किया जाएगा। वहां पर जो पत्रकार आये थे सभी ने दो-दो शब्द कहे। साई दीदी शरणजीत कौर जी और संदीप शर्मा जी ने भी अपने विचार प्रकट किये और विधायक ज़ीरा और प्रधान जी को सम्मानित किया। रेणु धुना की तरफ से सभी का धन्यवाद किया गया।

-रेनू, ज़ीरा

चिल्ला साई मंदिर में विराजे श्री खाटू श्याम बाबा

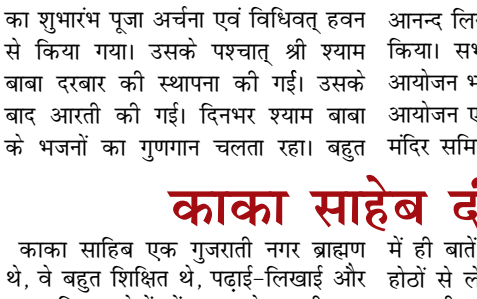

दिल्ली: दिनांक 5 जुलाई 2025 को चिल्ला साई मंदिर, मयूर विहार, फेस-1 में श्री खाटू श्याम बाबा दरबार की स्थापना हर्षोल्लास के साथ की गई। इस अवसर पर सुबह 7 बजे कार्यक्रम का शुभारंभ पूजा अर्चना एवं विधिवत् हवन से किया गया। उसके पश्चात् श्री श्याम बाबा दरबार की स्थापना की गई। उसके बाद आरती की गई। दिनभर श्याम बाबा के भजनों का गुणगान चलता रहा। बहुत से भक्त इस कार्यक्रम में शामिल हुए। सभी भक्तों ने भंडारा प्रसाद ग्रहण किया।

दिनांक 10 जुलाई 2025 को चिल्ला साई मंदिर में गुरु पूर्णिमा उत्सव बड़े ही धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर मंदिर में भजनों का गुणगान किया गया। सभी भक्तों ने भजनों का खूब आनन्द लिया और बाबा का आशीर्वाद प्राप्त किया। सभी भक्तों के लिए भण्डारे का आयोजन भी किया गया। सभी कार्यक्रमों का आयोजन एडवोकेट राहुल सुरजीत सिंह एवं मंदिर समिति के सदस्यों द्वारा किया गया।

काका साहेब दीक्षित

काका साहिब एक गुजराती नगर ब्राह्मण थे, वे बहुत शिक्षित थे, पढ़ाई-लिखाई और आध्यात्मिक क्षेत्रों में। जब वे पहली बार शिरडी गए तो उनका व्यवसाय अपनी चरम सीमा पर था, उन्होंने केवल 15 वर्षों में वह हासिल कर लिया था जो लोग आजीवन नहीं कर पाते। काका एक मशहूर वकील थे और स्वयं ही मुंबई में अभ्यास करते थे।

जब से उनके नेत्र बाबा पर टिके, काका जानते थे कि उन्हें बाबा के चरणों में ही शरण लेनी चाहिए। इसी हेतु जितनी जल्दी हो सके वे शिरडी जाया करते थे। उनके मुंबई से दूर रहने से उनके व्यवसाय पर असर पड़ता था, परंतु बाबा ने उन्हें इस्तीफा देने से मना किया था। इसीलिए जितनी बार भी संभव हो वे शिरडी जाया करते थे।

एक दिन उन्होंने बाबा से एक महत्वपूर्ण प्रश्न पूछा, 'बाबा इस वकालत के व्यवसाय में कई सच्चाईयों को तोड़ा मरोड़ा जाता है, और कई असत्य बोले जाते हैं। यह सब वास्तव में झूठ ही है, ऐसी स्थिति में हमें क्या करना चाहिए?' बाबा ने उत्तर दिया। 'बाकी वकील जो चाहें कहें, परंतु तुम सदा सत्य ही बोलना।' ऐसा करना नामुमकिन था इसलिए दीक्षित ने जल्द ही न्याय का व्यवसाय छोड़ दिया।

दीक्षित ने जुलाई 5, 1926 के शुभ दिन पर अपनी देह त्याग दी। उस समय वे किसी बीमारी से पीड़ित नहीं थे और पूरी तरह सचेत थे। वे अपने सद्गुरू के बारे में ही बातें कर रहे थे और बाबा का नाम होठों से लेते-लेते उन्होंने देह त्याग दी।

उसी समय शिरडी में दो घटनाऐं घटित हुई। लेंडी बाग में नीम वृक्ष की एक बड़ी शाखा टूट कर गिर गई। द्वितीय, द्वारकामाई की छत पर तीन छोटे कलश थे। एक स्वयं ही गिर कर टूट गया। दीक्षित के बारे में यह अक्सर कहा जाता था कि वे द्वारका माई से जुड़े हुए थे। अत: द्वारकामाई अपने प्रेममयी भक्तों के देह तज देने पर अपना प्रणाम अवश्य देती है।

-बेला शर्मा,

-आभार: बाबा की वाणी

हमें ये बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि अब आप सब साई बाबा की देश विदेश की खबरें, भक्तों के अनुभव, बाबा के अनूठे चमत्कार व बाबा के विभिन्न live कार्यक्रम, श्री साई सुमिरन टाइम्स की YouTube Channel पर भी नि:शुल्क देख सकते हैं। इसके लिए आप सबसे अनुरोध है कि आप सब अपने फोन पर Shri Sai Sumiran Times की YouTube Channel को subscribe करें।

सिद्धपीठ सारसौल साई मन्दिर में गुरू पूर्णिमा का महापर्व

अलीगढ़: सिद्धपीठ श्री साई बाबा मंदिर, सारसौल, अलीगढ़ में गुरू पूर्णिमा का पर्व बहुत ही धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर भव्य कार्यक्रम हुआ जिसमें प्रात: 8:00 बजे से बाबा का दुग्धाभिषेक

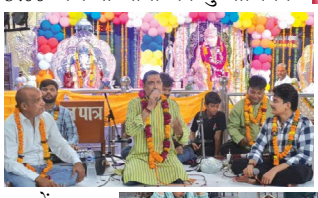

भक्तों द्वारा सम्पन्न हुआ। उसके बाद साई बाबा का 108 नामावली का हवन

हुआ और बाबा की द्वारकामाई में श्री साई सच्चरित्र का पाठ हुआ। दोपहर को बाबा का फूल बंगला हुआ और फूल बंगले के साथ तीन बजे बाबा की पालकी बहुत ही धूमधाम से निकाली गई जिसमें बड़ी संख्या में भक्तों ने हिस्सा लिया और साईनाथ महाराज की जय जयकार की। इस दौरान भक्तगण ढोल नगाड़ों के साथ बाबा की पालकी के साथ निकले। वहीं श्री साई राम भजन मंडल द्वारा भव्य भजन संध्या मंदिर में संपन्न हुई जिसमें अमित उपाध्याय और राजीव उपाध्याय द्वारा गणेश वंदना के साथ कार्यक्रम शुरू हुआ। बाबा के भजन सुनकर भक्तगण बहुत ही भाव विभोर हो गये। इसके अलावा साई बाबा का भंडारा प्रसाद पूरे दिन वितरित किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में संस्थापक अध्यक्ष धर्म प्रकाश अग्रवाल, राजकुमार गुप्ता, प्रदीप अग्रवाल, रवि अग्रवाल, रमन गोयल, राजीव जैन, रोहित कोचर, राजेश, संदीप सागर, संजीव सिंघल का विशेष सहयोग रहा।

-धर्मप्रकाश अग्रवाल, संस्थापक अध्यक्ष

साई ही मेरे सब कुछ

मेरी मां की मृत्यु 1993 में हुई थी। उस समय उनकी उम्र 73 वर्ष थी। वह साई बाबा की बहुत बड़ी भक्त थी। मेरे माता-पिता की मृत्यु के बाद 1996 में मैं शिरडी गया। उसके बाद मैं बाबा का ऐसा भक्त बना कि उनके सिवाय और उनकी माला के सिवाय मेरे पास इस संसार में आज कुछ भी नहीं है। मेरी मां उनकी भक्त थी। उनकी मृत्यु के बाद जब उनकी

अर्थी तैयार की गई और उनके ऊपर फूल मालाएं चढ़ाई गई तो उन फूल मालाओं से अपने-आप अचानक ॐ बन गया था। उसे देखकर मेरे छोटे भाई ने कहा कि देखो मम्मी के ऊपर फूलों का ॐ बना हुआ है। वहां पर आए सभी लोगों ने यह देख कर ताजुब किया। मैंने कहा कि मेरी मां साई बाबा की सच्ची भक्त थी तो उन्होंने उनके ऊपर ॐ अंकित कर दिया।

इसी तरह का एक और अनुभव हुआ जो इस प्रकार है- एक बार मैं 1995 में अपने छोटे भाई के साथ शिरडी गया। मैं शिरडी से जब लौटा तो मेरे जयपुर वाले घर में साई बाबा की तस्वीर दीवार के ऊपर लगी हुई थी। अचानक मेरे दिमाग में आया कि बाबा के साथ एक फोटो ले लूं और मैंने अपने छोटे भाई को कहा कि

बाबा के पैर छूते हुए कैमरे से मेरी एक फोटो ले ले। (उस समय कैमरों का चलन था।) उसने बाबा के चरण छूते हुए मेरी एक फोटो ले ली। जब वो फोटो स्टूडियो से आई तो मैंने देखा कि फोटो में बाबा के पैरों से एक प्रकाश निकाल रहा है ऐसा प्रकाश जो देवी-देवताओं के सिर पर या हाथों से निकलता है। ठीक उसी तरह साई बाबा के चरणों से वो प्रकाश निकल रहा था। बड़े ताजुब की बात है कि बाबा के चरणों से वो प्रकाश निकल रहा था। इसका अर्थ ये हुआ कि साई बाबा सभी देवी-देवताओं से बढ़कर हो गये। मेरा सब कुछ बाबा ही कर रहे हैं और मुझे विश्वास है कि आगे भी करेंगे। इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि साई बाबा से बढ़कर इस संसार में मैंने किसी को नहीं पाया, ऐसा अवतार मैंने नहीं देखा और न ही महसूस किया। इसलिए सारी दुनिया कहती है, राजाधिराज योगीराज पारब्रह्म सच्चिदानंद सद्गुरू साईनाथ महाराज की जय।

-प्रभाश चन्द्र श्रीवास्तव, नीम का थाना

सक्सैना बंधु द्वारा शिरडी में भजन

शिरडी: दिनांक 10 जुलाई 2025 को गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर भजन सम्राट सक्सैना बंधु श्री सुरेन्द्र सक्सैना जी व श्री अमित सक्सैना जी ने शिरडी में श्री साई समाधि शताब्दी मण्डप पर भजनों का गुणगान किया। शिरडी में दूर-दूर से आये बहुत से भक्तों ने उनके भजनों का आनंद लिया। श्री सुरेन्द्र सक्सैना व श्री अमित सक्सैना के मधुर भजनों से मंदिर परिसर भक्तिरस में डूब गया। उन्होंने सभी भक्तों को गुरु पूर्णिमा की शुभकामनाएं दी।

-एच.पी. शर्मा, शिरडी

साई मंदिर देव नगर में गुरूपूर्णिमा उत्सव

दिल्ली: दिनांक 10 जुलाई 2025 को प्राचीन साई धाम मंदिर, देव नगर, करोल बाग में गुरू पूर्णिमा महोत्सव श्रद्धापूर्वक मनाया गया। इस उपलक्ष्य

में मंदिर को गुब्बारों व फूलों से सुंदर सजाया गया। भजन संध्या का शुभारंभ सांय 4 बजे किया गया। भजनों का गुणगान महिला मंडल की सदस्यों द्वारा किया गया। उन्होंने अपने निराले अंदाज़ में कई भजन सुनाकर वहां उपस्थित भक्तों को बाबा की मस्ती में रंग दिया। कई भक्तों ने भाव विभोर होकर नृत्य भी किया। भजनों का आनन्द लेने के बाद सभी भक्तों को भंडारा प्रसाद बांटा गया। समस्त कार्यक्रम का आयोजन मंदिर के संस्थापक श्री नीरज कुमार जी के मार्ग दर्शन में मंजु पालीवाल जी द्वारा किया गया। मंजु जी ने अपना पूरा जीवन बाबा की व बाबा के भक्तों की सेवा में समर्पित किया है। उनका सरल व मधुर स्वभाव और सेवा भाव अत्यंत सराहनीय है।

-कृष्णा पुरी

ईश्वर एवं उनका ऐश्वर्य

भगवान और उनका ऐश्वर्य। ऐश्वर्य दो दिन के लिए है, भगवान ही सत्य है। जादूगर और उसका जादू। जादू देखकर सभी लोग विस्मित हो जाते हैं, परन्तु सब झूठा है, जादूगर ही सत्य है। मालिक और उसका बगीचा। बगीचा देखकर बगीचे के मालिक की खोज करनी चाहिए। जिस प्रकार एक बालक अपने माता-पिता के साथ उनका हाथ पकड़ कर मेले में जाता है और वहां वो दुकानें देखकर माता-पिता से कुछ न कुछ लेने के लिये कहता है और माता-पिता विवश हो उसे सामान दिलवाते भी हैं, लेकिन जब बालक का हाथ अपने माता-पिता से छूट जाता है तो वे रोते-रोते बस माता पिता को ही ढूंढता रहता है। वही मेला होता है, वही दुकानें, और वही सामान, परन्तु बालक सिर्फ रोता ही है। उसी तरह हमें संसार में रहना चाहिए परन्तु ईश्वर को साथ में रखना, उनका ध्यान करना अति आवश्यक है नहीं तो सिर्फ ऐश्वर्य से कोई लाभ नहीं।

मनुष्य स्वयं ऐश्वर्य का आदर करता है इसलिए वह समझता है कि ईश्वर भी उसका आदर करते हैं। सोचता है, उनके ऐश्वर्य की प्रशंसा करने पर वे प्रसन्न होंगे। क्या ईश्वर ऐश्वर्य के भी वश में है? वे तो भक्ति के वश में है। वे रूपया नहीं चाहते। भाव, प्रेम, भक्ति, विवेक, वैराग्य, यह सब चाहते हैं।

संसार धर्म में दोष नहीं, परन्तु ईश्वर के पाद-पाद्यों में मन रख कर कामना रहित होकर कर्म करना चाहिए। अगर किसी की पीठ में एक फोड़ा हो जाता है तो वो सब के साथ बातचीत भी करता है और घर के काम-काज भी देखता है, परन्तु उसका मन फोड़े पर ही लगा रहता है, इसी तरह घर का कार्य करते हुए भी बाबा की ओर मन को लगाये रखना चाहिए। जिसका जैसा भाव होता है, वह ईश्वर को वैसे ही देखता है।

जब ईश्वर ने ही संसार की रचना की है तो उसमें रहोगे नहीं तो जाओगे कहां जब कोई भक्त साईमय हो जाता है तो उसे चारों ओर साई बाबा ही दिखलायी देते हैं। यह संसार बाबा की शिरडी है। जब श्री रामचन्द्र ने ज्ञान प्राप्त करके गुरू से कहा, मैं संसार का त्याग करूंगा। दशरथ ने उन्हें समझाने के लिये वशिष्ठ को भेजा। वशिष्ठ ने देखा राम को तीव्र वैराग्य है। तब उन्होंने कहा, राम! पहले मेरे साथ कुछ विचार कर लो, फिर संसार छोड़ना। अच्छा, प्रश्न यह है, क्या संसार ईश्वर से कोई अलग चीज़ है? अगर ऐसा है तो तुम इसका त्याग कर सकते हो। राम ने देखा, ईश्वर ही जीव और जगत सब कुछ हैं। उनकी सत्ता के कारण सब कुछ सत्य जान पड़ता है। तब श्रीरामचन्द्र जी चुप हो गये।

बाबा ने भी कभी अपने भक्तों को संसार छोड़ने का आदेश नहीं दिया अपितु स्वयं ईश्वर होते हुए भी वे साधारण गृहस्थ मनुष्य जैसा आचरण करते थे। संसार में काम और क्रोध, इन सब के साथ लड़ाई करनी पड़ती है, कितनी ही वासनाओं से संग्राम करना पड़ता है, आसक्तियों से भिड़ना पड़ता है। लड़ाई किले में रहकर की जाये तो सुविधाएं हैं। घर से लड़ना ही अच्छा है। ईश्वर की कृपा से भोजन भी मिलता है, माता-पिता भी बहुत कुछ सहायता करते हैं। संसार में आंधी में उड़ती हुई जूठी पत्तल की तरह रहना चाहिए। जूठी पत्तल को आंधी कभी घर के भीतर ले जाती है कभी कहीं और हवा का रूख जिस ओर होता है, पत्तल भी उसी ओर उड़ती है। बाबा ने संसार में रखा है तो सब कुछ उन्हें ही अर्पित कर दो। उन्हें आत्मसमर्पण कर दो तो फिर कोई झंझट नहीं। साधारणतया संसारियों का ईश्वर प्रेम क्षणिक होता है। जैसे तपाये हुए तवे पर जल पड़ा हो छन हुआ और उसके बाद ही सूख गया। संसारी लोगों का मन भोग की ओर रहता है इसलिए वह अनुराग वह व्याकुलता नहीं होती। व्याकुल होकर बाबा को पुकारोगे तो वे अवश्य सुनेंगे। हे साईनाथ! दीनानाथ! जगन्नाथ! मैं जगत से अलग थोड़े ही हूं? मैं ज्ञानहीन हूं, भक्तिहीन हूं, साधनहीन हूं मैं कुछ भी नहीं जानता-कृपा करके दर्शन देना होगा।

यह संभव नहीं कि कोई मनुष्य श्री साई बाबा को बहुत प्यार करे, उन्हें व्याकुल होकर पुकारे और वे उसे दर्शन न दें। श्री सद्गुरू साई बाबा के नाम का बड़ा महात्मय है। श्रद्धा और सबूरी रखनी चाहिए। फल जल्दी न मिलने पर भी कभी न कभी अवश्य प्राप्त होगा। जैसे, कोई पक्के मकान के आले में बीज रखा गया था, बहुत दिनों के बाद जब मकान गिर गया, मिट्टी में मिल गया, तब भी उस बीज से पेड़ पैदा हुआ और उसमें फल भी लगे।

-विकास मेहता,

आभार: हृदय के स्वामी श्री साई बाबा

अंधन को आंख देवे

एक बार एक दृष्टिहीन व्यक्ति ने साई दरबार में आकर कहा, साई बाबा सुना है आप साक्षात् भगवान हैं। अपने गरीबों को धन, भूखों को भोजन, बांझों को औलाद, कुष्ठ रोगियों को सुंदर काया दी है। आपके द्वार से आज तक कोई निराश नहीं लौटा है। मेरी केवल एक आरजू है कि मुझे इतनी दृष्टि दे दो कि मैं आपके मानवीय स्वरूप का दर्शन कर सकूं। तत्पश्चात् अपनी दिव्य दृष्टि समेट लेना। मैं उस स्वरूप का गुणगान करते हुए सारा जीवन काट लूंगा। साई बाबा ने तत्काल उसकी मुराद पूरी कर दी। बकायदा उस व्यक्ति ने श्री चरणों की पूजा आरती की, फिर तेजस्वी स्वरूप को निहारते निहारते दृष्टिहीन हो गया और सोटे के सहारे बाबा के गीत गाते हुए अपने घर लौट गया। आश्चर्य महाआश्चर्य जैसे ही उसका घर नज़दीक आया वह फिर से देखने लगा। उसे बाबा ने स्थायी दृष्टि प्रदान कर दी। स्वामी साई शरण आनन्द जी का कहना था कि कुछ समय बाद उन्होंने उस नेत्रहीन व्यक्ति को स्वयं पोथी बांचते हुए देखा। साई बाबा की महिमा अपरम्पर है।

-रूपलाल आहूजा

Our Associates

Agra - Sandhya Gupta
Aligarh- Seema Gupta
Ashok Saxena, D.P. Agarwal
Ambala - Ashok Puri
Amritsar- Amandeep
Ahmedabad - Arjun Vaghela
Aurangabad-Ashok Bhanwar Patil
Assam - Bidyut Sarma
Badayun - Varinder Adhlakha
Bhilwada - Kailash Rawat
Banas - P.K.Paliwal
Bareilly - Kaushik Tandon
Sapna Santoria, Prathmesh Gupta
Bhopal
Ramesh Bagre, Surendra Patel
Bangalore-Chandrakant Jadhav
Bathinda-Govind Maheshwari
Bikaner- Deepak Sukhija
Surender Yadav, Pt. Sadhu Ji
Purnima Tankha,
Bihar- Balram Gupta
Bokaro - Hari Prakash
Bhagalpur - Anuj Singh
Bhuvneshwar (Odisha)
Pabitra Mohan Samal
Chandigarh - Puneet Verma
Chennai - M. Ganeson
Chattisgarh- Nikhil Shivhare
Dehradun - H.K. Petwal,
Akshat Nanglia, Mala Rao
Dhanaula - Pradeep Mittal
Faridabad - Nisha Chopra
Ashok Subromanium,
Firozpur - P.C. Jain
Goa - Raju
Gurgaon - Bhim Anand,
Chander Nagpal
Ghaziabad - Bhavna Acharya
Usha Kohli, Dinesh Mathur
Gujarat - Paresh Patel
Gwalior - Usha Arora
Haridwar - Harish Santwani
Hissar - Yogesh Sharma
Hyderabad - Saurabh Soni,
T.R. Madhwan
Indore- Dr. R. Maheshwari
Jalandhar - Baba Lal Sai
Jabalpur
Chandra Shekhar Dave
Jagraon - Naveen Khanna
Jaipur - Puneet Bhatnagar
Kolkata - Sushila Agarwal,
D. Goswami
Kapurthala - Vinay Ghai
Korba - T.P. Srivastava
Kurukshetra - Yash Arora
Pradeep Kr. Goyal
Kaithal - Naveen Malhotra
Lucknow - Gayatri Jaiswal,
Sanjay Mishra, Rajiv Mohan
Ludhiana - Umesh Bagga,
Rajender Goyal, Sai Puja,
Sanjiv Arora
Mandi Govind Garh
Shunti Bhaji, Rajiv Kapoor
Mawana - Yogesh Sehgal
Meethapur - Shrigopal Verma
Meerut - Kamla Verma
Mumbai-Anupama Deshpandey
Kirti Anurag, Sunil Thakur
Moradabad - Ashok Kapur
Mussoorie- R.S. Murthy,
Surinder Singhal
Nagpur - Pankaj Mahajan,
Srinivasan, Narendra Nashirkar
Noida - Amit Manchanda
K.M. Mathur, Kanchan Mehra,
Panipat- Raj Kumar Dabar,
Sanjay Rajpal
Patiala - P.D.Gupta,
Dr. Harinder Koushal
Panchkula - Anil Thaper
Palampur - Jeewan Sandel
Parwanoo - Satish Berry,
Chand Kamal Sharma
Pune - Bablu Duggal
Sapna Lalchandani
Port Blair
J.Venkataramana, Ghanshyam
Pundri - Bunty Grover
Patna - Anil Kumar Gautam
Ranchi - Deepak Kumar Soni
Rewari- Rohit Batra
Rishikesh- S.P. Agarwal,
Ashok Thapa
Raigarh - Narinder Juneja
Roorkee - Ram Arya
Rudrapur-Naresh Upadhyaye
Shirdi - Sandeep Sonawane
Nilesh Sanklecha, H.P. Sharma
Sonepat- Rahul Grover
Sangrur - Dharminder Bama,
Sirsa-Komal Bahiya, Bunty Madan
Surat - Sonu Chopra
Udaipur - Dilip Vyas
Ujjain - Ashok Acharya
Vidisha - Sunil Khatri
Zeera - Saranjeet Kaur

फकीर मेरा साई

'कहने को तो फकीर है मेरा साई
झोलियां सबकी भर जाता है
जो भी दिल से बन जाए साई का
साई उसका ही बन जाता है।'

मैं संगीता ग्रोवर सभी साई भक्तों को साई राम कहती हूं। बाबा क्या थे, क्या हैं ये साई भक्तों को बताने की ज़रूरत नहीं है। बाबा निश्छल दया, करूणा की मूरत। जिस भाव से देखो साई जी वैसे हैं। जो रिश्ता बांधो, साई जी निभाते हैं, जब आप पूरी तरह से समर्पित हो जाते हैं। साई जी भी बिन कहे उस समर्पण की लाज रखते हैं। बाबा की शिरडी तो भक्तों से हर पल भरी ही है। इसके अतिरिक्त हर शहर जगह जगह जहां साई जी विराजमान हैं भक्तों का तांता है। क्योंकि बाबा ने हर उस समर्पण को अपनाया जो भक्तों ने किया। साई जी के वचनों में बाबा ने कहा, निज भक्त हेतु दौड़ा आऊंगा और साई जी आते हैं। किसी न किसी रूप में साई जी का परिवार देश विदेशों में दूर-दूर तक फैला है।

जो संशय करते हैं साई पर, वो इतना समझिये, बाबा हैं, वो हम बच्चों का तुम्हारा हर संशय दूर कर देगा। **-संगीता ग्रोवर**

साई मंदिर देव नगर में तीज उत्सव

दिल्ली: प्राचीन साई धाम मंदिर, देव नगर, करोल बाग में सावन महीने में मनाया जाने वाला शिव पार्वती की पूजा का पर्व 'तीज' बड़ी धूमधाम से मंदिर की म.हला सदस्यों द्वारा मनाया गया। जिसमें बड़ी संख्या में महिलाएं उपस्थित थी। इस अवसर पर सभी महिलाओं ने बहुत मधुर भजन एवं तीज के गीत गाये और खूब नृत्य भी किया। तीज के उपलक्ष्य में सभी महिलाओं ने हरे रंग के वस्त्र पहने हुए थे जो बहुत अच्छे लग रहे थे। सबने मिलकर कुछ गेम्स भी खेले जैसे कि म्यूज़िकल चेयर और लंगड़ी टांग आदि। उसके पश्चात् सभी को प्रसाद के रूप में समोसा, ब्रेड पकौड़ा, जलेबी, कोल्ड ड्रिंक आदि का वितरण किया गया।

मंदिर के कुछ सदस्यों द्वारा सिरसपुर गांव में भी 27 जुलाई 2025 को तीज पर्व मनाया गया। वहां पर झूले झूले गये और सभी को प्रसाद में पूरी, सब्जी, रायता, घेवर आदि वितरित किया गया साथ ही गोल गप्पे भी खिलाये गये, जिसका वहां उपस्थित सभी ने बहुत आनन्द लिया। सबने

आस-पास के खेतों में घूम-घूम कर पूरे गांव के माहौल का आनन्द लिया।

-मंजु पालीवाल

साई मंदिर ऋषिकेश में गुरु पूर्णिमा महोत्सव

ऋषिकेश: ऋषिकेश नगर के प्रसिद्ध शिरडी साई धाम मंदिर में दिनांक 10 जुलाई को श्री गुरु पूर्णिमा महोत्सव धूमधाम से मनाया गया। प्रात: 6 बजे बाबा के मंगलस्नान से महोत्सव का प्रारंभ हुआ। सुबह 8 बजे बाबा की श्रृंगार आरती हुई। प्रात: 10 बजे से साई भजन कार्यक्रम में सभी साई भक्तों ने बड़े उल्लास के साथ बाबा का गुणगान किया। दोपहर 12:30 बजे से एक विशाल भंडारे का आयोजन किया गया जिसमें सभी साई भक्तों ने प्रसाद ग्रहण किया। बाबा के प्रिय भक्त एवं मंदिर समिति के अध्यक्ष श्री अशोक थापा, श्री ओम प्रकाश मुल्तानी, श्री दिनेश शर्मा, श्री संजय कपूर, श्री के.के. शर्मा व श्री सुरेंद्र आहूजा ने सभी साई भक्तों का स्वागत किया और पूरे कार्यक्रम की व्यवस्था और संचालन को बहुत ही सुंदर ढंग से किया।

-एस.पी. अग्रवाल, ऋषिकेश

किरण शर्मा के निवास स्थान पर साई अमृतवाणी पाठ

दिल्ली: दिनांक 24 जुलाई 2025 को श्रीमती किरण शर्मा ने अपने निवास स्थान हरि नगर में सांय 3:30 बजे से 5 बजे तक श्री साई अमृतवाणी के पाठ का आयोजन किया। सभी भक्तों ने मिलकर संगीतमय साई अमृतवाणी का पाठ किया। पाठ के बाद सभी भक्तों ने मिलकर भजन गाये और श्री हनुमान चालीसा का पाठ किया, उसके बाद 108 बार राम नाम जाप भी किया। अंत में आरती की गई और सभी भक्तों ने स्वादिष्ट प्रसाद ग्रहण किया। कार्यक्रम का आयोजन किरण शर्मा जी द्वारा ईशा गुप्ता एवं दिव्या गुप्ता के सहयोग से किया गया। सभी ने फल प्रसाद लेकर अपने-अपने घरों को प्रस्थान किया। **-गायत्री सिंह**

नीरज शर्मा द्वारा गुरू पूर्णिमा पर शिरडी में साई गुणगान

शिरडी: दिनांक 10 जुलाई 2025 को गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर सुप्रसिद्ध भजन गायक श्री नीरज शर्मा ने पार्श्व गायिका अनुराधा पौडवाल के साथ शिरडी के गेट नंबर 3 के पास श्री साई समाधि शताब्दी मण्डप पर भजनों का गुणगान किया। शिरडी में दूर-दूर से आये बहुत से भक्तों ने भी अनुराधा पौडवाल और नीरज जी के भजनों का आनंद लिया। उनके भजनों से पूरा माहौल साईमय हो गया। बहुत से भक्तों ने उनके भजनों का आनंद लिया। **-निलेश संक्लेचा**

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी व सम्पादक अंजु टंडन ने वीबा प्रैस प्रा. लि., C-66/3, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-2, नई दिल्ली से छपवा कर F-44-D, MIG फ्लैट्स, G-8 एरिया, हरि नगर, नई दिल्ली-110064 से प्रकाशित किया।
PRGI No. DELBIL/2005/16236

किसी भी विज्ञापन पर अमल करने से पहले उसकी सत्यता की जांच स्वयं कर लें। प्रकाशक व सम्पादक इसकी प्रमाणिकता के लिए किसी तरह से ज़िम्मेदार नहीं होंगे। विज्ञापन एवं लेखकों की राय से सम्पादकीय का सहमत होना अनिवार्य नहीं।

गुरू पूर्णिमा कथा

शिरडी में साई बाबा ने व्यास पूर्णिमा के इस पवित्र दिन को गुरूपूर्णिमा के रूप में मनाने के लिए भक्तों को प्रेरित किया क्योंकि गुरू ही शिष्य का पिता समान होता है और गुरू ही शिष्य के आँख में ज्ञान अंजन डालता है।

वर्ष 1906 आषाढ़ी पूर्णिमा के दिन सुबह बाबा ने दादा केलकर को बुलाया और कहा, 'आज का दिन बहुत शुभ और महत्वपूर्ण है। यह दिन गुरू पूर्णिमा के रूप में मनाओ और गुरू की पूजा करो। तुम जाकर शामा और अन्य भक्तों को बुलाओ और पूजा की आवश्यक सामग्री लेकर आओ।' दादा केलकर ने सब भक्तों को मस्जिद में एकत्रित किया और थोड़ी देर में ही सारी सामग्री इकट्ठी कर ली और बाबा के पास पहुँच गए। बाबा अधमुंदी आँखों से ध्यान में मग्न थे। सारे भक्त शांत एवं खामोश बैठे रहे। किसी ने भी उनके ध्यान को भंग नहीं किया। थोड़ी देर में बाबा ने स्वयं आँखें खोली और सभी भक्तों को प्रेम-भरी दृष्टि से देखा।

अब तक किसी के मन में ख्याल भी न आया था कि बाबा का गुरू के रूप में पूजन करना चाहिए। क्योंकि वह उन्हें ईश्वरीय अवतार समझते थे। जो दिव्य शक्तियों से सम्पन्न थे। उन्होंने बाबा की गुरू के रूप में कल्पना भी न की थी। इसलिए वह खामोश हो बाबा के दिव्य रूप को निहारते रहे। तब बाबा ने भक्तों से कहा, 'तुम सभी मुझे एक समर्थ फकीर मानते हो। तुममें से कुछ भक्त मुझे ईश्वर का अवतार भी समझते हैं, मैं तो ईश्वर-अल्लाह का दास हूँ। वही सबका मलिक है। बस, इतना समझ लो कि मैं तुम सभी का पिता हूँ। तुम सभी अपने पिता के प्रेम का लाभ प्राप्त करो। मुझे अपना गुरू मानो और मेरे द्वारा दिये ज्ञान को हृदय में उतारो।

मैं इस दुनियां में तुम्हारा मार्गदर्शन करने आया हूँ। तुम्हारी मानसिकता बदलने आया हूँ। तुम सभी दुनियां के भौतिक आकर्षण में बंधे हो। मैं तुम्हें भौतिकता से आध्यात्म की तरफ मोड़ना चाहता हूँ। मैं तुम्हें सत्य, न्याय, करूणा, प्रेम एवं नैतिकता के पथ पर ले जाना चाहता हूँ। सच्चा सुख, शान्ति एवं परम आनंद वही है। यही तुम्हारे जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य है और यही मेरे अवतार लेने का उद्देश्य है। यदि तुम अन्य देवी-देवताओं की तरह मुझे तस्वीर में सजाकर रख दोगे, तो तुम मुझसे कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकोगे। यदि तुम मुझे 'गुरू' के रूप में स्वीकार कर अपने आपको मेरे प्रति पूर्णत: समर्पित कर दोगे तो तुम मुझसे अनमोल चीज़ प्राप्त कर सकोगे।

तुम मेरे बोध-पाठ को ग्रहण करो, मेरे तत्वज्ञान को जीवन में उतारो। तुम अपने वर्तमान कर्मों को मेरे कथन के अनुसार संचालित करो। तुम्हारे वर्तमान कर्म ही तुम्हारा भविष्य निर्धारित करेंगे। जब तुम ऐसा करोगे तो जन्म-मरण के चक्र से तुम्हारा छुटकारा होगा और तुम्हें परब्रह्म की प्राप्ति होगी। अत: एक सद्गुरू के रूप में मेरी पूजा करो। आज ही, इस व्यास पूर्णिमा को गुरू पूर्णिमा के रूप में मनाओ। गुरू तुम्हारे जीवन में ज्ञान का आलोक भरेगा।''

बाबा का संकेत पाते ही सारे भक्तों ने साई की सर्व-प्रकार से पूजा अर्चना आरम्भ कर दी। मस्जिद में एकत्रित भक्तों में से दादा केलकर ने उन्हें हाथ जोड़कर दंडवत प्रणाम कर उनके श्री चरणों का पदप्रक्षालन किया और थोड़ा जल ग्रहण किया और अपने उपर छिड़का। यह पाद-तीर्थ फिर सब भक्तों में बाँटा गया। उसके बाद बाबा के मस्तक पर चन्दन लगाया और कुमकुम से बिन्दी लगाई उसके बाद फूलों और अक्षत से उनकी पूजा और चरण वंदना की। उन्हें नारियल और दक्षिणा भेंट कर कपूर जला कर बाबा की आरती उतारी।

जब आरती हो रही थी, बाबा के मुख की आभा सूर्य की भांति चमक रही थी। जैसे हज़ारों दीयों की रोशनी उनमें समा गयी हो, जिससे विभिन्न रंग निकल रहे थे। यह देख भक्तगण आश्चर्य चकित रह गये और सभी उनके श्री चरणों को छूना चाहते थे। यह अनुभव कर बाबा धीरे धीरे द्वारकामाई में रखे शिला की तरफ बढ़ने लगे। भक्तगण उनकी राह में फूलों की वर्षा कर रहे थे और उच्च स्वर में जयघोष करने लगे। बाबा वहाँ पहुँच कर शिला पर विराजमान हो गए। उन्होंने बाँए हाथ से दाहिने पैर के अंगूठे को पकड़ कर बाँए पैर पर रखा और दाहिने हाथ को दाहिने पैर के घुटने पर रखा। बाबा वहाँ शांत मुद्रा में बैठ कर भक्तों को निहारने लगे। उन्होंने हर भक्त की आँखों में आँखे डाल कर देखा। इस वाकया से भक्तों को परम आनन्द महसूस हुआ जिसका वर्णन कर पाना सम्भव नहीं। यह सुख और आनंद आँखों से होता हुआ सीधे हृदय में समा गया। यह अनुभव आंतरिक सुख देने वाला था जिसका शब्दों में वर्णन नहीं किया जा सकता। जो भी इस पावन कथा का श्रवण और मनन भक्तिभाव से गुरू पूर्णिमा के दिन करता है उसको वही आनन्द आज भी प्राप्त होता है।

आज भी शिरडी में गुरू-पूर्णिमा प्रतिवर्ष धूमधाम से मनाई जाती है। भक्त उत्साह के साथ शिरडी जाते हैं और बाबा की दिव्य आभा के सम्मुख श्रद्धा-समर्पण करते हैं। ऐसी मान्यता है कि गुरू-पूर्णिमा के दिन सद्गुरू की विशेष कृपा अपने भक्तों पर होती है। वे हमारे बन्द चक्षुओं को खोलते हैं और उसमें ज्ञान का अंजन भरते हैं।

-राकेश जुनेजा

श्रीराम मंदिर हरि नगर में भजन कीर्तन

दिल्ली: दिनांक 27 जुलाई 2025 को श्रीराम मंदिर, CB ब्लाक, हरि नगर में सांय 6 बजे से रात्रि 8:30 बजे तक साई भजन संध्या का आयोजन किया गया। महिला परिवार के सदस्यों द्वारा भजनों का गुणगान किया गया। सभी भक्तों ने उनके भजनों का खूब आनंद लिया।

आरती के बाद सभी भक्तों को बाबा का प्रसाद बांटा गया। कार्यक्रम का आयोजन श्रीमती पूनम सचदेवा जी द्वारा अन्य भक्तों के सहयोग से किया गया। श्रीराम मंदिर में हर महीने के आखिरी रविवार को भजन कीर्तन किया जाता है। **-गायत्री**

जो शिरडी में आएगा आपद दूर भगाएगा

मेरा नाम उषा देवी है। मैं दादरी की रहने वाली हूं। मैं साई बाबा जी की परम भक्त हूँ। जैसा कि आप सभी साई जी के अनेकों चमत्कारों से पि. रचित होंगे और उनके द्वारा कहे हुए 11 वचनों को भी आपने पढ़ा ही होगा, जिनमें से एक वचन है जो मुझ पर बिल्कुल सत्य साबित हुआ, वह है, 'जो शिरडी में आयेगा, आपद दूर भगायेगा।' मेरे साथ ये चमत्कार शिरडी में स्थित म्हाल्सापति के खंडोबा मंदिर में हुआ और उस चमत्कार को करने वाले कोई और नहीं दिल्ली में रहने वाले गुरूजी श्री सुशील कुमार मेहता जी हैं। मगर यह सब हुआ कैसे यह सारा किस्सा मैं आपको श्री साई सुमिरन टाइम्स के माध्यम से विस्तार से बताती हूँ। हुआ यूँ कि मैं और मेरे पति हम दोनों 20 जून 2025 को शिरडी श्री साई बाबा जी के दरबार में गये। हमारे जाने का मुख्य कारण यह था कि मैं पिछले 11 वर्षों से बीमार थी और मेरी बीमारी न तो डॉक्टरों को समझ आ रही थी और न ही किसी वैद्य-हकीम को। जिसका कारण यह था कि मेरी बड़े बड़े लैब में अनेकों जाँचे हुई मगर किसी भी जाँच में कोई बीमारी आ ही नहीं रही थी जिसे देखकर कोई डॉक्टर मेरा इलाज करता। अपने रोग से परेशान होकर हम पति-पत्नी ने सलाह की कि क्यों ना शिरडी चला जाए और अपनी बीमारी ठीक होने की अर्ज़ी साई बाबा जी से लगाई जाए। क्या पता साई ही मेरी पुकार सुन लें और मुझे स्वस्थ कर दें। तो इस तरह हम शिरडी पहुंचे और हमने पहले बाबा के समाधि मंदिर के दर्शन किए और फिर अपने होटल के कमरे में विश्राम करने चले गए। हम दोनों की उम्र 75 व 82 वर्ष है जिसके कारण हमने उस दिन विश्राम करना ही उचित समझा। अगले दिन हम द्वारकामाई होते हुए खंडोबा मंदिर दर्शन करने गए। वहां देखा कि उस मंदिर में कुछ लोग बाबा के भजन कीर्तन कर रहे थे। वहां बैठकर हम भी बाबा के भजनों का आनंद लेने लगे। हमने देखा कि कुछ लोग वहां बैठे एक इंसान के पैर छूते और उन्हें गुरुजी कहकर बुलाते, हमने संगत के कुछ लोगों से पूछा कि आप लोग कहां से आए हैं और जिनको आप गुरुजी कह रहे हो वह कौन हैं और क्या करते हैं। उन लोगों ने बताया कि हम दिल्ली में गीता कॉलोनी से आए हैं और यह हमारे गुरुजी हैं, इन पर साई बाबा की असीम कृपा है जिसके ज़रिये यह लोगों की जटिल से जटिल समस्याओं का समाधान करते हैं। ये सब हम अनेकों वर्षों से देखते आ रहे हैं, चाहे वह समस्या शारीरिक हो आर्थिक तंगी हो घर का क्लेश हो या नशे की बुरी लत हो, सभी दुखों का निवारण है हमारे गुरुजी के पास और इसमें सबसे अहम बात यह है कि वो साई के बताए रास्ते पर चलते हैं क्योंकि वह न तो पैसा लेते हैं न ही किसी प्रकार का भेदभाव रखते हैं, सबको एक समान प्यार करते हैं। लोगों से गुरुजी के बारे में यह सब सुनकर मुझे लगा कि हमारा शिरडी आना सफल हो गया क्योंकि शायद साई बाबा को गुरुजी के रूप में आकर मुझे स्वस्थ करना होगा। यही सोचते हुए मैंने गुरुजी से अपनी बीमारी की बात उनके सामने रखी कि मैं 11 साल से बीमार हूँ, मेरे टेस्ट रिपोर्ट में कुछ नहीं आता है जिस कारण डॉक्टर भी मेरा इलाज नहीं कर पा रहे हैं। मेरी बात सुनकर गुरुजी ने कहा कि मैं हर बार 15 जून को शिरडी आता हूं मगर इस वर्ष मैं लेट आया। शायद बाबा ने ऐसा आपके लिए ही किया हो, बेटा मेरे पास आओ आपके सिर पर हाथ रखकर आपकी बीमारी का पता लगाता हूँ। मैं गुरुजी के सामने बैठी और उन्होंने मेरे सिर पर जैसे ही हाथ रखा मेरी पूरी देह कंपकंपाने लगी, पसीना छूटने लगा और मेरा गुरुजी के आगे से भाग जाने का मन करने लगा। 2 मिनट बाद जैसे ही गुरुजी ने मेरे सर से हाथ हटाया मैं एकदम अपने आपको हल्का व स्वस्थ महसूस करने लगी। गुरूजी ने बताया कि बेटा आपके ऊपर किसी ऊपरी हवा का (भूत-प्रेत) का साया है इसी वजह से आप इतनी बीमार हो और आपकी रिपोर्ट भी ठीक आ रही है, ना ही कोई डॉक्टर आपको ठीक कर पा रहा है क्योंकि जिनपर प्रेत का साया होता है उनकी टेस्ट रिपोर्ट में कुछ नहीं आता और डॉक्टर टेस्ट रिपोर्ट देखे बिना बीमारी का पता नहीं लगा पाते, ना ही इलाज कर पाते हैं। मैं आपको बिल्कुल ठीक कर दूंगा वह भी केवल जल में आशीर्वाद के ज़रिये। खंडोबा मंदिर में ही उन्होंने अपने बेटे को भेज कर एक पानी की बोतल मंगवा ली और उसमें मंत्र फूंक कर मुझे दे दी और उस जल से मुझे हर रोज़ नहाने व पीने में इस्तेमाल करने को कहा। मैंने उस जल की बोतल को हाथ में लिया और मेरे आंसू निकल पड़े, यह सोच कर कि शायद हमारा शिरडी आना सार्थक हो गया। मुझे भरोसा है कि अब मैं जल से ही ठीक हो जाऊंगी। मेरे आंसू देख गुरूजी ने मुझे आश्वासन दिया कि बेटा जी अब आप इस जल से ही बिल्कुल ठीक हो जाओगे क्योंकि आपने साई के जल का चमत्कार तो सुना ही होगा कि साई ने जल से ही दीये जला दिए थे ऐसे ही यह जल आपके अंदर के भूत को जला देगा और आप बिना दवा, बिना पैसे खर्चे ठीक हो जाओगे। फिर कुछ पल और रुक कर हम वहां से चले आये।

गुरुजी का नाम व पता लेकर हम अगले दिन दादरी पहुंच गए और गुरुजी द्वारा दिए जल का इस्तेमाल करने लगे। तब से अब तक मैं बिल्कुल स्वस्थ हूं ना कोई दवाई ली ना कोई पैसा खर्च किया। यही है मेरी उन 11 वचनों में से एक वचन की कहानी का सच। ऐसे गुरुजी को मेरा कोटि-कोटि प्रणाम। जय साई राम। **-उषा रानी,** दादरी

हमें ये बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि अब आप सब साई बाबा की देश विदेश की खबरें, भक्तों के अनुभव, बाबा के अनूठे चमत्कार व बाबा के विभिन्न live कार्यक्रम, श्री साई सुमिरन टाइम्स की YouTube Channel पर भी निःशुल्क देख सकते हैं। इसके लिए आप सबसे अनुरोध है कि आप सब अपने फोन पर Shri Sai Sumiran Times की YouTube Channel को subscribe करें।

शिरडी डायरी

श्रीगणेश श्रीकृष्ण खापर्डे ने शिरडी में अपनी दिनचर्या डायरी में लिखी। प्रस्तुत हैं उसी डायरी से कुछ अंश:

23 जनवरी 1912: मैं काकड़ आरती के लिए समय पर आ गया और दिन निकलने के कुछ देर बाद प्रार्थना समाप्त की। साईबाबा आज अपने शयन से निकलते हुए एक शब्द भी नहीं बोले लेकिन जब हमने उन्हें सामान्य दिनों की तरह बाहर जाते हुए देखा तो उन्होंने बहुत ही विनोदी भाव दिखलाया। मैंने उपासनी, बापूसाहेब जोग और भीष्म के साथ परमामृत का पाठ किया और फिर साईबाबा के दर्शन के लिए मस्जिद गया। वे मौन धारण किए हुए थे और बिल्कुल नहीं बोले। दोपहर की आरती शांति से हो गई। इसके बाद हम लौटे और हमने खाना खाया। माधवराव ने माननीया श्रीमती रसेल के लिए साईबाबा का चित्र और उदि भेजने के लिए आज्ञा ले ली। मैंने उनको लिखना चाहा, लेकिन फिर अपने आप को उस भाव में न पाया और एक स्कूली अध्यापक जो हाल ही में अपने परिवार के साथ साईबाबा के दर्शन के लिए आया है, उसके साथ बातचीत करने बैठ गया। दीक्षित ने रामायण का पाठ किया और फिर हमने साईबाबा के दर्शन उनकी शाम की सैर पर किए। उन्होंने तब भी ज़्यादा कुछ नहीं कहा। रात को इस सप्ताह में पहली बार भीष्म ने भजन किए। गांव के कुछ नवयुवक भी भजन-कीर्तन करने आए और फिर दीक्षित ने रामायण का पाठ किया। श्रीमती लक्ष्मीबाई कौजलगी का हमेशा के लिए यहां रह जाने का विचार है, और साईबाबा ने कहा कि वह अपने हित के लिए ऐसा कर सकती है।

पूर्ण समर्पण

गुरू के प्रति पूर्ण समर्पण ही प्रभु-प्राप्ति का सबसे सुगम पथ है। गर गुरू साई सरीखा सद्गुरू हो, जो कि स्वयं ही ईश्वर का साकार स्वरूप है, तो फिर शिष्य के क्या कहने! पर यह भी अटल सत्य है कि समर्पण संपूर्ण होना चाहिए, जिसमें किसी भी प्रश्नचिन्ह के लिए कोई जगह न हो। अपने गुरू में ज़रा सा भी अविश्वास आपको भटका देगा। अपने आपको पूर्ण रूप से गुरू के चरणों में समर्पित कर दो। रास्ता तो हमें ही ढूढंना है, चलना भी हमें ही है, गुरू तो बस हमारे पथ को प्रज्वलित कर देते हैं। ठोकर लगने पर हमें थाम लेते हैं। पग-पग पर हमारा साथ निभाते हैं। साई सच्चे सद्गुरू हैं, क्योंकि अपने जीवनकाल में वे कोरे उपदेशक नहीं थे। उन्होंने न कभी बड़े-बड़े व्याख्यान दिए और न ही कोई ग्रंथ लिखा। वे तो अपने स्वयं के जीवन-क्रम को ही सुधार की जादू की छड़ी की तरह प्रयोग करते थे। सच्चा सद्गुरू वही होता है, जिसे कुछ समझाना न पड़े, जिसकी मौन भाषा शिष्य स्वयं समझ जाए और सद्गुरू की सुझाई राह पर चलने को शिष्य बेचैन हो जाए। गुरू और शिष्य की सीरत एक हो जाए।

-पारूल प्रिया, आभार: साई अमृत वर्षा

साई से रिश्ता

तेरे चरणों में आकर
साई सुकून
मुझको मिला
तुझ से साई
रिश्ता बांधकर,
साई संसार
मुझ को मिला
लाख हो मुश्किल
ज़िंदगी में
अब डर नहीं लगता
तू साथ है पल पल मेरे
ये दिल बार-बार कहता
तूने अपना बना कर
मुझे कुंदन है किया
हाथ साई मेरा थाम कर
जीवन के बंधनों को मुक्त किया
तुझ से साई राखी
तुझ संग साई होली
तुझ से साई जीवन की हर खुशी
सीने से मुझको लगाकर
मान साई मेरा किया।

-संगीता ग्रोवर,
गायिका, लेखिका कवियित्री

श्री साई सुमिरन टाइम्स
की सदस्यता एवं विज्ञापन
के लिए सम्पर्क करें
Ph: 9818023070
9212395615
saisumirantimes@gmail.com

साई मंदिर एरोसिटी में गुरूपूर्णिमा

दिल्ली: दिनांक 10 जुलाई 2025 को साई बाबा मंदिर एरोसिटी में गुरूपूर्णिमा महोत्सव श्रद्धापूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर मंदिर में सुबह 7 बजे काकड़ आरती के पश्चात् बाबा को पंचामृत से मंगल स्नान करवाया गया। तत्पश्चात्

बाबा का अभिषेक किया गया। 8:30 से 9 बजे नित्य पूजा अर्चना और आरती की गई। 9:30 से 11:15 बजे सहस्त्र नाम एवं पूजा अर्चना की गई। तत्पश्चात् श्री साई सच्चरित्र का परायण किया गया। दोपहर 12 बजे आरती के बाद सभी भक्तों में प्रसाद वितरण किया गया। शाम को धूपआरती की गई जिसमें बहुत से भक्त शामिल हुए। शेज आरती से कार्यक्रम का समापन हुआ।

दिनांक 24 अप्रैल 2024 को इस मंदिर में शिरडी साई बाबा मंदिर का उद्घाटन गुरूजी चन्द्रभानु सत्पथी जी के कर कमलों द्वारा किया गया था। यह मंदिर अत्यन्त सुन्दर है जिसमें विराजित बाबा की मूर्ति सबको अपनी ओर आकर्षित करती है। इस मंदिर का निर्माण GMR Group के MD श्री जी.एम. राव एवं श्रीमती ग्रांधी वरलक्ष्मी द्वारा किया गया। **-पूनम धवन**

कष्ट निवारक मेरे बाबा

एक बार नाना चांदोरकर मित्रों के साथ हरिशचन्द्र पर्वत गये। चढ़ाई के दौरान तेज़ गर्मी, थकावट व प्यास के कारण बेहाल होकर एक चट्टान पर लेट गये। उनके मित्र बढ़ते गये आगे, पानी की तलाश में पर पानी कहीं नहीं मिला। इस विपदा के क्षण, मन ही मन साई बाबा से प्रार्थना की। ठीक उसी क्षण साई ने शामा को कहा, नाना मुसीबत में है। मुझे उसकी सहायता करने जाना पड़ेगा, अन्यथा उसके प्राण पखेरू उड़ जायेंगे। उधर अर्ध चेतनावस्था में नाना ने एक लकड़हारे को देखा और पुकारा व कहा दो घूंट पानी पिला दो। लकड़हारे ने कहा 'कैसे मूर्ख हो कि मुझ से पानी मांगते हो, जबकि तुम्हारी चट्टान के नीचे पानी ही पानी भरा है। नाना ने जैसे ही पत्थर खिसकाया, जल की धारा फूट पड़ी। नाना ने बाखूबी जल पीया, फिर चल पड़े गंतव्य की ओर।

कुछ दिनों बाद जब नाना शिरडी आये तो शामा ने पूछा नाना आमूक दिन आप कौन सी विपदा में फंस गये थे कि साई बाबा को स्वयं आना पड़ा आपकी मदद करने को। महा विस्मय। नाना बोले कि वो भील जिसने मुझे पानी के बारे में बताया साई बाबा स्वयं थे। हां, निश्चित ही साई बाबा भील के रूप में आये मेरी मदद के लिए। **संकलन: रूपलाल आहूजा**

माफी मांगने से यह साबित नहीं होता कि हम गलत हैं और दूसरा सही माफी का असली अर्थ है हम रिश्तों को निभाने की काबलियत उससे ज़्यादा रखते हैं।

प्रतियोगिता नम्बर 237

नीचे लिखी पंक्तियां श्री साई सच्चरित्र से ली गई हैं, आपको बताना है कि ये कौन से अध्याय से हैं। सही जवाब भेजने वाले को मिलेगा इनाम। अपने जवाब हमें 9818023070 पर whatsapp करें या saisumirantimes@gmail.com पर ई-मेल करें। अपना पता व फोन नंबर अवश्य लिखें।

1. किसी से बिना उसके परिश्रम का मूल्य चुकाये कार्य न कराना चाहिए और कार्य करने वाले को उसके श्रम का शीघ्र निपटारा कर उदार हृदय से मजदूरी देनी चाहिए।

2. बौर लगे आम वृक्ष की ओर देखो। यदि सभी बौर फल बन जाएं तो आमों की गणना भी न हो सकेगी।

पहला ईनाम- कंचन मेहरा के सौजन्य से शिरडी आने जाने की स्लीपर क्लास की दो टिकटें। (शिरडी टिकट तीन महीने तक ही मान्य है)

दूसरा इनाम- साई माऊली ट्रस्ट राजपार्क के सौजन्य से बाबा का वस्त्र।

पिछले माह की प्रतियोगिता के सही उत्तर: 1. अध्याय- 37, अध्याय- 32

सही जवाब भेज कर शिरडी यात्रा की 2 टिकटों (स्लीपर क्लास) का पहला इनाम जीता है तिलक नगर, दिल्ली से सविता बाली ने और दूसरा ईनाम जीता है जनकपुरी, दिल्ली से सुषमा सहगल ने। आपको जल्द ही ईनाम भेजे जायेंगे।

सम्पादन मण्डल

मुख्य संरक्षक -सी.एल. टिक्कू, स्वामी बलदेव भारती, राकेश जुनेजा, सुमित पोंदा, मोतीलाल गुप्ता, पवार काका, सर्वेंट्स ऑफ शिरडी साई

मुख्य सलाहकार -स्वामी सत्यानंद महाराज, संदीप सोनवणे, सुरेन्द्र सक्सेना, भरत मेहता, अशोक सक्सैना, सुनील नागपाल, नीरज कुमार, जी.आर. नंदा, अशोक खन्ना, मुकुल नाग, मंजु बवेजा

सलाहकार -महेन्द्र दादू, भीम आनंद, मीता साई, के.बी. शर्मा, के.सी. गुप्ता, नरेश मदान, अमित माथुर, सचिन जैन, सुरेन्द्र सेठी, संदीप अरोड़ा

विशेष सहयोग -अमित सरीन, महेन्द्र शर्मा

सम्पादक -अंजु टंडन

सह सम्पादक -शिवम चोपड़ा

उप सम्पादक -पूनम धवन,

डिज़ाइनर -गायत्री सिंह

कानूनी सलाहकार -प्रेमेन्द्र ओझा

सहयोगी -ज्योति राजन, कृष्णा पुरी, मीरा साव, अंजली, कंचन मेहरा, मीनू सिंगला, साईना पुरी, दिनेश माथुर, सुनीता सग्गी, ओंकार नाथ अस्थाना, विवेक चोपड़ा, आंचल मारवा, संजय उप्पल, शैली सिंह, किरण, विशाल भाटिया, सुषमा ग्रोवर, गुरबचन सिंग, उषा अरोड़ा, योगेश शर्मा, उषा कोहली, रूपलाल अहूजा, राजीव भाटिया, प्रेम गुलाटी, योगेश बहल, नीलम खेमका, सीमा मेहता, वर्षा शर्मा, नीलू जग्गी, गीतांजलि छाबड़ा।

-प्रशासनिक कार्यालय-

F-44-D, MIG Flats, G-8 Area, Hari Nagar,
New Delhi -110064, Ph- 9818023070, 9212395615
(सभी पद अवैतनिक हैं)

Publication date- 5th August 2025, Posting date- 9th/10th August 2025, Place of posting- Naraina

साई धाम फरीदाबाद में गुरू पूर्णिमा महोत्सव का आयोजन

फरीदाबाद: दिनांक 10 जुलाई 2025 को फरीदाबाद, सेक्टर 86 स्थित साई धाम में गुरू पूर्णिमा महोत्सव बहुत ही हर्षोल्लास से मनाया गया। गुरू पूर्णिमा गुरूओं की पूजा करने के लिए एक विशेष दिन होता है। श्री साई बाबा को भक्तजन सद्गुरू के रूप में पूजते हैं। साईधाम फरीदाबाद में हर वर्ष की तरह इस बार भी गुरू पूर्णिमा के दिन सुबह से शाम तक विभिन्न रूप से पूजा का कार्यक्रम चलता रहा। प्रात: बाबा का सामूहिक अभिषेक का कार्यक्रम

किया गया। जिसमें 100 जोड़ों ने बाबा का अभिषेक किया। पूरे दिन भक्तों का आना-जाना लगा रहा और प्रसाद वितरण होता रहा। प्रसिद्ध गायक विजय आनंद द्वारा सायं 5 बजे से 8 बजे तक बाबा के सुन्दर भजनों ने भक्तजनों का मन मोह लिया। शिरडी साई बाबा स्कूल के बच्चों द्वारा साई बाबा की सुन्दर झांकी प्रस्तुत की गई। तत्पश्चात भंडारे का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम जे.के. शर्मा गुरूग्राम निवासी द्वारा आयोजित किया गया। साई धाम के संस्थापक अध्यक्ष डा. मोतीलाल गुप्ता जी ने अपने संदेश में सभी से साई बाबा के पदचिन्हों पर चलने का आहवान किया। साथ ही उन्होंने बताया कि साई बाबा ने सदैव श्रद्धा व सबुरी का उपदेश दिया है। हमें उनके उपदेशों को अपने जीवन में अपनाना चाहिए। शिरडी साई बाबा स्कूल की प्रधानाचार्या डॉ. बीनू शर्मा ने जे.के. शर्मा व आए हुए अतिथियों का हार्दिक धन्यवाद किया।

शिरडी साई सुमंगलम संस्था ने श्रद्धा के साथ मनाया स्थापना दिवस

फरीदाबाद: दिनांक 26 जुलाई 2025 को शिरडी साई सुमंगलम संस्था द्वारा साई बाबा मंदिर, सैक्टर 16-A, फरीदाबाद में 26 जुलाई 2025 को मंदिर के 33वें स्थापना दिवस पर भव्य आयोजन श्रद्धा और उत्साह के साथ किया। दिनभर धार्मिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की श्रृंखला चली, जिसमें सैकड़ों भक्तों ने बाबा का आशीर्वाद प्राप्त किया। कार्यक्रम की शुरुआत बाबा की पालकी शोभायात्रा से हुई, जो गोपी कॉलोनी, पुराना फरीदाबाद बाज़ार और सागर सिनेमा क्षेत्र से होते हुए हेवो अपार्ट. मेंट पहुँची। वहाँ भक्तों ने साई बाबा के जयकारों के बीच आरती में भाग लिया। इसके बाद पालकी पुन: मंदिर लौट आई और पूरे शहर में भक्ति का वातावरण छा गया। इस अवसर पर संस्था के अध्यक्ष श्री योगेश

दीक्षित जी ने अन्य ट्रस्टी और पदाधिकारियों के साथ हवन किया। इसके बाद श्री माधव भाटिया जी द्वारा भावपूर्ण सुंदरकांड पाठ का आयोजन हुआ, जिसने वातावरण को भक्ति में रंग दिया। भक्तों के लिए मंदिर समिति द्वारा भंडारे प्रसाद का आयोजन किया गया। शाम को मंदिर के बच्चों द्वारा सुंदर सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण था भजन सम्राट सक्सेना बंधु जी के भजन। श्री सुरेन्द्र सक्सैना व श्री अमित सक्सैना के मधुर-मधुर भजनों ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस कार्यक्रम का सफल आयोजन अध्यक्ष श्री योगेश दीक्षित जी, महासचिव श्रीमती मनु भार्गव जी और कोषाध्यक्ष डॉ. एस. पी. सिंह जी के नेतृत्व में सभी ट्रस्टी, पदाधिकारी और स्वयंसेवकों द्वारा किया गया। भक्तगण अपने परिवारों के साथ बड़ी संख्या में मंदिर पहुँचे और बाबा के आशीर्वाद से 33वाँ स्थापना दिवस एक अविस्मरणीय एवं आध्यात्मिक अनुभव बन गया। **-श्रीपाल चंदीला,** फरीदाबाद

साई बाबा का अपमान करने वालों पर होगी कानूनी कार्यवाही

शिरडी: कुछ समय से कई लोग साई बाबा के खिलाफ गल्त व अपमानजनक झूठी बातें फैलाकर साई भक्तों की भावनाओं को ठेस पंहुचा रहे थे। शिरडी संस्थान ने तब ये फैसला लिया कि ऐसे लोगों के खिलाफ कानूनी कार्यवाही की जाएगी।

सन् 2023 में गौतम खट्टर और अजय गौतम द्वारा दिए गए निराधार बयानों से देशभर के साई भक्तों में गुस्से की लहर थी। कोर्ट ने गौतम खट्टर और अजय गौतम को भविष्य में साई बाबा के खिलाफ किसी प्रकार की टिप्पणी, इंटरव्यू वा भाषण देने पर रोक लगा दी है। श्री साई बाबा संस्थान की याचिका पर आए राहाता कोर्ट के इस फैसले को सच्चाई की जीत और झूठ की हार माना जा रहा है। यह फैसला सच्चाई और श्रद्धा की जीत है और द्वेष फैलाने वालों को सख्त कानूनी जवाब भी।

कुछ समय पहले सोशल मीडिया पर झूठी अफवाह फैलाई जा रही थी कि संस्थान ने हज यात्रा के लिए 35 करोड़ की सहायता दी। इस पर शिरडी संस्थान के CEO श्री गोरक्ष गाडिलकर जी ने स्पष्ट किया कि यह खबर गलत और निराधार है। उन्होंने कहा- 'संस्थान ने कुछ नहीं दिया है और झूठी अफवाह फैलाने वालों पर अब अपराधिक मामले दर्ज किए जाएंगे।' श्री गाडिलकर जी ने यह भी बताया कि साई संस्थान का पैसा भक्तों की सेवा में लगता है, जैसे मुफ्त अस्पताल, एशिया के सबसे बडे प्रसादालय में निशुल्क भोजन और कम दरों पर शिक्षा आदि। उन्होंने बताया कि संस्थान द्वारा 50 लाख से अधिक के खर्च के लिए हाईकोर्ट की अनुमति आवश्यक होती है, ऐसे में 35 करोड़ के दान की बात असंभव है।

सबकी अपने-अपने ईष्ट के प्रति विशेष भावनाऐं होती हैं, अत: हमें चाहिए कि अपने धर्म के रास्ते पर चलते हुए अन्य धर्मों का सम्मान करें और किसी की भावनाओं को ठेस न पंहुचाऐं। **-निलेश संकलेचा**

साई धाम मिनी शिरडी में गुरू पूर्णिमा

मुरादनगर: गुरू पूर्णिमा 2025 का तीन दिवसीय पावन पर्व साई धाम मिनी शिरडी में बड़े धूमधाम व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का आंरभ प्रथम दिवस बुधवार 9 जुलाई को श्री साई सच्चरित्र के पारायण के आयोजन से हुआ। द्वितीय दिवस 10 जुलाई दिन बृहस्पतिवार को प्रात: पर्ची

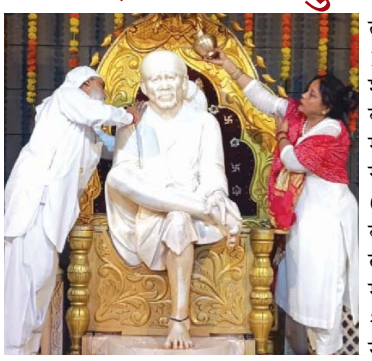

के माध्यम से चयनित भक्तों द्वारा बाबा के मंगलस्नान से हुआ उसके पश्चात साई नाम जाप, हवन पूजन व मध्यान्ह आरती के पश्चात भजन कीर्तन का आयोजन भी किया गया। इस अवसर पर भव्य भंडारे का भी आयोजन किया गया जो निरंतर चलता रहा। सांय 5:15 बजे से श्री साई बाबा की भव्य पालकी शोभायात्रा निकटतम ग्रामीण क्षेत्रों में निकाली गई। पालकी का स्वागत भक्तों ने झूमते नाचते हुए किया। कार्यक्रम का समापन तृतीय दिवस 11 जुलाई, दिन शुक्रवार को काकड़ आरती व मंगलस्नान पश्चात गोपाल काला (माखन-मिश्री) का भोग लगाकर हुआ। मंदिर के संस्थापक श्री वी.के. शर्मा व संचालिका श्रीमती मीनाक्षी शर्मा ने सभी भक्तों को हार्दिक शुभकामनाएं भी दीं। **-रीना सूरी**

श्री साई सुमिरन टाइम्स से मिली अध्यात्मिक उन्नति और साई कृपा

शिलांग: सभी पाठकों को मेरा ऊँ साई राम। आज मैं श्री साई सुमिरन टाईम्स पत्रिका के माध्यम से इस पत्रिका के बारे में अपने कुछ अनुभव को व्यक्त करने की अनुमति चाहता हूं। 'श्री साई सुमिरन टाइम्स' अखबार की पहली प्रति मुझे मार्च 2021 में साई मंदिर उप्पल साऊथएंड, सैक्टर-44, गुड़गांव से प्राप्त हुई। यह प्रति मुझे वहां के मुख्य पुजारी आचार्य विनय झा जी ने दी थी। इस अखबार को मैंने बिना पढ़े अपने अलमारी में रख दिया और बाद में दो चार पेज उलट पलट कर देख लिये। बस इतना ही। मैं वैसे तो अपनी गुड़गांव पोस्टिंग (2019-2024) के दौरान बराबर साई मंदिर, उप्पल साऊथएंड में आता-जाता था और कभी-कभार यदि ये अखबार मिल जाता तो मैं बस लेकर रख देता। सन् 2023 की बात है जब मेरी ज़िन्दगी में कुछ बदलाव आया। शायद ये हो सकता है कि श्री साई बाबा ने अपने सेवक के रूप में मुझे चिन्हित किया है। फरवरी 2023 में मैंने एक दिन 'श्री साई सुमिरन टाइम्स' का गहन अवलोकन किया। मुझे एक सुखद अनुभूति हुई एवं मेरे अन्दर अध्यात्म का संचार महसूस हुआ जो बाबा की कृपा थी। अब मैं हर महीने की दस तारीख को साई मंदिर, उप्पल साऊथएंड जाता और ये अखबार लेकर आता। फिर मैं इस अखबार में छपे भक्तों के अनुभव संपादकीय एवं अन्य अध्यात्मिक आर्टिकल को बड़े ध्यान से पढ़ता। मुझे कब इसकी आदत लग गयी मुझे पता ही नहीं चला। अब मुझे इंतज़ार रहता कि कब नये महीने

की 10 तारीख आयेगी और मैं श्री साई सुमिरन टाइम्स का नया मासिक संस्करण लेकर आऊँ। अब मुझे ऐसा लगा कि मेरे अन्दर आध्यात्मिक उन्नति का संचार हो रहा है। मार्च 2024 आया। मैंने एक दिन इस अखबार की संपादिका अंजु टंडन जी को पहली बार फोन किया कि मैं अपना आर्टिकल छपवाना चाहता हूं। उनसे बात करके मैं बहुत उत्साहित था। अप्रैल 2024 में मेरा पहला आर्टिकल छपा। इस अखबार के बारे में जितना कहूं उतना कम है। इस में भक्ति के हर रस का समावेश है, साई की कृपा है, इस में अध्यात्म एवं भक्ति का अद्भुत मिश्रण है। मेरा यह मानना है कि यह अखबार हर एज ग्रुप के लिए अति लाभकारी है। अंत में अपनी लेखनी को विराम देते हुए मैं अंजु टंडन जी (सम्पादक) एवं समस्त सदस्यगण को तहे दिल से शुक्रिया करता हूं जिनके माध्यम से मैं आज अपनी अध्यात्मिक उन्नति के पथ पर अग्रसर हूं। मेरा यह प्रयास है कि मैं इस अखबार में छपे हुए लेख एवं विचारों को जन मानस तक ले जा सकूं।

-बलराम गुप्ता